Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

समर्पण-पत्रिका

परमश्रद्धेय वैद्यरत्न स्वर्गीय सम्पादकप्रवर
श्रीयुक्त वैद्यराज शङ्करलालजी
अध्यक्ष–आयुर्वेदोद्धारक औषधालय,
एवं 'वैद्य' कार्यालय तथा वैद्य-प्रेस, मुरादाबाद (यू० पी०)
के सुपुत्र–
वैद्यकुलावतंस जैनवंश विभूषण स्वनामधन्य
श्रीयुक्त वैद्य विष्णुकान्तजी के उदार अनुरोधवश
यह रत्नमाला ग्रथित की गई है।

अतः उनके ही गल प्रदेश में
परिधान कराने के प्रेम में
मालाकार को हार्दिक आनन्द की अनुभूति होती है।

मिति आश्विन शुद्ध]
विजयादशमी सं० १९९३]

–कृष्णप्रसाद त्रिवेदी
चांदा, सी० पी०

Mohur

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

प्रकाशकीय निवेदन ।

प्रेस और ग्रन्थ-प्रकाशन का हमारा यह प्रथम प्रयास है । इसीलिये कितनी ही कठिनाइयों का सामना करना पड़ा । प्रेस का डिक्लेरेशन दिया उसकी मंजूरी में २-२॥ मास का समय लग गया । जब अदालत से आज्ञा प्राप्त हुई, तब पुस्तक का कार्य प्रारम्भ किया गया । हम समझते थे, शीघ्र ही मंजूरी मिल जाने पर पुस्तक छप जावेगी । इसीलिये सूचना निकाल दी, पर हम विवश थे । इसके बाद प्रेस का सामान कुछ बाहर से आना बाकी था, उसके आने में बहुत बाट देखनी पड़ी । यही नहीं, कागज़ की मंहगी होगई । मुरादाबाद जैसे साधन-विहीन नगर में हमारे मन के माफ़िक कागज़ का प्राप्त होना मुश्किल होगया, बाहर से कागज़ मंगवाने में भी बहुत समय लगा । फिर भी उतना सुन्दर कागज़ न लगा सके, जिसका हमें दुःख है ।

इन्हीं सब कारणों से पुस्तक के प्रकाशित होने में बहुत अधिक देरी होगई । कितने ही महानुभावों को चिर-प्रतीक्षा करनी पड़ी । जो हमारी विवशता-वश ही हुई है, उसकेलिये हम सभी सज्जनों से क्षमा चाहते हैं ।

शीघ्रता के कारण संभव है प्रूफ आदि देखने में भी कुछ भूलें रह गई हों, आशा है उदार पाठक महानुभाव उन्हें हमारे पास या लेखक महोदय के पास लिखकर भेज देने की कृपा करेंगे । जिससे उन्हें हम आगामी संस्करण में ठीक कर सकें ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

इस संस्करण को बहुत प्रयत्न करने पर भी जैसा हम चाहते थे, वैसा न बना सके। जिसका हमें दुःख है। पर दूसरे संस्करण में हम इसे अधिक सुन्दर रूप में निकालने का प्रयत्न करेंगे।

इस ग्रन्थ के लेखक और संपादक आयुर्वेद के माननीय विद्वान् आयुर्वेदसूरिः श्री वैद्यराज पं० कृष्णप्रसादजी त्रिवेदी बी०ए०को हम किन शब्दों में धन्यवाद दें ? उन्होंने निस्वार्थभाव से आयुर्वेद के एक विषय को अपूर्ण देखकर उसे सम्पूर्ण बनाने के लिये हमारे लिखने पर इस ग्रन्थ के निर्माण और संकलन में अपना वर्षों का असूल्य समय व्यय किया है ? और कितना श्रम किया है ?

आयुर्वेद की निस्वार्थ सेवा में निरंतर व्यस्त रहने वाले आयुर्वेद-प्रेमी त्रिवेदीजी को नाम की कोई चाह नहीं है, यह हम खूब जानते हैं। वे आयुर्वेद के एक रत्न हैं और उनका आयुर्वेद के सभी विषयों पर एक-सा अधिकार है। उनकी विशेषता है, वे जिस विषय के ग्रन्थ को लिखते हैं, उसे पूर्ण अधिकार के साथ लिखते हैं।

यह आसवारिष्ट सम्बन्धी ग्रन्थ उनकी लेखनी का चमत्कार है ! आशा है पाठक इसे अवश्य अपनायेंगे।

श्री पं० रघुवीरशरण शर्मा आदि प्रेस के कर्मचारियों ने जिस सहूलियत से काम किया उसके लिये वे विशेष धन्यवाद के पात्र हैं।

अन्त में उन सभी सज्जनों के हम अत्यन्त आभारी हैं, जिनके द्वारा इस ग्रन्थ के प्रकाशन में कुछ भी सहायता प्राप्त हुई है।

विनीत—प्रकाशक।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

इस ग्रन्थ के लेखक और सम्पादक—

आयुर्वेदसूरिः श्री० पं० कृष्णप्रसादजी त्रिवेदी बी० ए०

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

भूमिका

जिस प्रकार संसार की अनेक चिकित्सा-प्रक्रियाओं में नाना प्रकार से औषधियाँ व्यवहार की जाती हैं, उसीप्रकार प्रत्युत् उससे भी अधिक औषधिनिर्माण के प्रकार आयुर्वेद में वर्णित हैं, जैसे-स्वरस, हिम, मन्थ, फांट, कल्क, पुटपाक, चूर्ण, क्वाथ, गुटिका, अवलेह, पाक, मुरब्बा, शर्बत, घृत, तैल, अर्क, आसवारिष्ट, सत्व, क्षार, कांजी, नस्य, धूम्रपान आदि २। इनमें से आसवारिष्ट की गणना सन्धानवर्ग में कीजाती है। यह अत्यन्त प्राचीन प्रक्रिया कब निर्माण हुई, और इसका आविष्कर्त्ता कौन था इसका पता लगाना बहुत कठिन है। कारण चरक सुश्रुत के भी आदि ग्रन्थ जो वेद ब्राह्मण आदि हैं, उनमें भी किसी न किसी रूपसे इसका विधान पाया जाता है।

इस विषय में आयुर्वेदपंचानन पं० पूनमचन्द्रजी व्यास ने बहुत कुछ ऊहापोह करते हुये जो कुछ मार्के की बातें अपने 'आसवारिष्ट प्रयोग' शीर्षक निवन्ध में प्रगट की हैं, उसे यहाँ उद्धरण करने का लोभ हम संवरण नहीं कर सकते।

वे कहते हैं कि-"सन्धान क्रिया के सम्बन्ध में अनेक धार्मिक आज्ञायें बहुत प्राचीनकाल से प्रचलित हैं। उनसे भी यही अनुमान होता है कि इस प्रक्रिया का शोध हमारे भारत

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

में अत्यन्त प्राचीनकाल में ही हुआ है। आयुर्वैदिक फार्माकोपिया की यह माननीय और प्रसंशनीय क्रिया बहुत प्राचीन और ऋषियों की आविष्कृत की हुई है।

आसवारिष्ट जैसी महान् उपयोगी प्रक्रिया के सम्बन्ध में पिछले कई दिनों से सरकार की ओर से प्रतिबन्ध लगाने का प्रयत्न किया जारहा है, कुछ वैद्यों पर अमृतसंजीवनी आसव आदि निर्माण करने के कारण अदालती कार्यवाहियाँ भी हो चुकी हैं। इसके विरुद्ध वैद्यक पत्रों में बहुत कुछ आन्दोलन भी हो चुका है। यह इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि चूर्ण, गुटि- का, अवलेहादि नानाविध औषधि प्रक्रियाओं से श्रेष्ठ महा लाभ- कारी आसवारिष्ट की प्रक्रिया है। किन्तु खेद है कि अभी भी कतिपय वैद्यगण इस कल्याणकारी आसवारिष्ट-प्रणाली को अपनाते हुये हिचकते हैं।

आयुर्वेद में 'आसवारिष्ट' की प्रक्रिया मुख्यतया औषध का द्रवसत्व(Lipuid Fxtract)निकालने ही के लिये आविष्कृत तथा उपयुक्त हुई है। द्रव्य के औषधीय वीर्य (सत्व) का महत्व, उपयोगिता एवं निर्माण विधि का पूर्ण ज्ञान हमारे पूर्व- जोंने बहुत समय पहिले ही से मालूम कर लिया है, तथा आसवारिष्ट जैसी प्रक्रिया का इसके लिये आधार लिया गया है। सत्व निकालने की अनेक विधियाँ हैं, और भिन्न २ औषधों के लिये भिन्न २ प्रकार से सत्व निकालने की आवश्यकता होती है, किन्तु संधानक्रिया द्वारा मद्यसार निर्माणपूर्वक जो सत्व निकाले जाते हैं, वे अधिक उपयोगी एवं विश्वसनीय होते हैं। डाक्टरी (एलोपैथिक) चिकित्साप्रणाली का इस ओर विशेष लक्ष्य है। हमारे ऋषि मुनियोंने अन्यान्य विधियों के

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

साथ ही साथ मद्यसार की क्रिया के अनुसार द्रवसत्व निकालने का जो उपाय ढूंढ निकाला है, वह वर्त्तमान की अन्य रीतियों से तयार हुये सत्वों की अपेक्षा अत्युत्तम कहा जा सकता है। इस आसवारिष्ट की प्रक्रिया द्वारा इच्छित औषध का द्रवसत्व, जल में उत्सेचनक्रिया (खमीर) की सहायता से निकल आता है। यह विधि इतनी अच्छी एवं सरल होने पर भी, इसके द्वारा तयार किया हुआ सत्व पुराना होने पर हीनवीर्य नहीं होता, प्रत्युत् और भी बलवान गुणवाला होता जाता है। इसमें अल्कोहल (उन्मादकारकमद्य) का परिणाम नहीं के बराबर ही रहता है, जो कुछ रहता भी है वह हानिकारक कदापि नहीं होता, प्रत्युन् अवस्था विशेष में रोग नाश करने में पूर्ण समर्थ रहता है। यद्यपि यह सत्य है कि केवल स्प्रिट या अल्कोहल में औषधि द्रव्य डालकर द्रवसत्व (टिंक्चर, इसके विषय में आगे देखिये) खींचने की अपेक्षा आसवारिष्ट की क्रिया कुछ अधिक कठिन और अनियमित है; परन्तु अन्य कई विशेषताओं के कारण हमारे पूर्वज आचार्यों ने इसी ओर विशेष लक्ष्य रखा था।

आयुर्वेदिक चूर्ण गुटिकादि प्रक्रियाओं की अपेक्षा आसवारिष्ट की प्रक्रिया विशेष गुणकारी एवं उपकारी हैं। इसमें बड़ी भारी विशेषता भस्म और रस के सदृश यह है कि ये ज्यों २ पुराने होते जाते हैं त्यों २ उनका गुण अधिकाधिक बढ़ता जाता है। ये कभी हीनवीर्य नहीं होते। "बाबा करे और पोता बरते" वाली कहावत चरितार्थ होती है। आसवारिष्ट के प्रयोगों को अन्य वनौषधियों के स्वरसों की भावनायें नहीं देनी पड़तीं, गजपुटादि में फूंकने फांकने की आवश्यकता नहीं होती, गोली बांधने के लिये बहुत सा समय एवं नौकर आदि

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

का खर्च नहीं करना पड़ता, किन्तु केवल आवश्यक द्रव्य एकत्र कूट पीस कर अरिष्ट हो तो क्वाथ और आसव हो तो साधारण जल में डाल कुछ दिन योग्य पात्र में रख छोड़ना पड़ता है, और नियत समय के बाद छान कर बोतलों में भर लिया जाता है। सत्व के कारण मूल औषध की अपेक्षा इसकी मात्रा भी कम देनी होती है, गुण अधिक और तुरन्त होजाता है तथा उत्सेचन क्रिया की सहायता से बना होने से कुछ शारीरिक बल-तेज भी देता है। जब इन्द्रियाँ बहुत कमज़ोर होजाती हैं, जीर्ण व्याधि से सारा शरीर कृश होजाता है, पथ्य-अन्न तो दूर रहा, औषध तक नहीं पचती, ऐसी अवस्था में आसवारिष्ट का प्रयोग चमत्कारिक रूप से फल देता है। इससे एक ओर रोगी की शक्ति कायम रहते हुये, साथ ही में उसके कार्य से रोग भी दूर होजाता है। जिस समय शरीर के परमाणु नष्ट हो रहे हों, शरीर घट रहा हो, उस समय आसवारिष्ट के प्रयोगों की बराबरी करने वाला एक भी पदार्थ नहीं होता, जो परमाणुओं को नष्ट होने से रोक कर, नष्ट होने के कारण को भी शीघ्र ही मिटा देवे। यह गुण केवल आसवारिष्ट ही में है कि जिससे इसका महत्व औरों से अधिक एवं विशेष गिना जा सकता है। हमने अपने अनुभव से अनेकों बार देखा है कि जब कितनी ही जीर्ण व्याधियाँ अन्य प्रयोगों से आराम नहीं हो सकीं, तब इसके सेवन से उनमें सन्तोषजनक लाभ प्राप्त हुआ है।

इसका मूल्यभी अधिक नहीं लगता। दूसरे प्रयोगों की अपेक्षा कम खर्च में ही बहुत काम होजाता है। पतला और प्रायः बिना स्वाद का होने से सेवन करते समय कष्ट नहीं होता। रोगी जब दवायें खाते २ थक जाता

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

है, तब फिर वह उनसे घृणा करने लगता है, किन्तु आसवारिष्ट ऐसे पदार्थ हैं कि जिनसे उसे अरुचि नहीं होती।

केवल इतनी सी आपत्ति जरूर है कि ये आवश्यकता के समय तुरंत तैयार कर उपयोग में नहीं लाये जा सकते। अवश्य ही यह एक असुविधा है, किंतु अन्य गुणों के आगे यह अवगुण कुछ विशेष महत्व का नहीं है कि जिससे इसके प्रचार में बाधा उत्पन्न हो, क्योंकि यदि आवश्यकता पड़ने पर ही सब औषधें तैयार कीजावें तो वे कब तो तैयार हों और कब सेवन करने का अवसर आवे। अतएव औषध तो समय के पहले ही तैयार कर रखना उचित होता है। आग लगने पर उसी समय कुँवा खोदने से क्या लाभ!

जो लोग आसवारिष्ट को एक प्रकार का मद्य समझते हुये उसके सेवन से हिचकिचाते हैं, वे भूल में हैं। मद्य में तो मादक पदार्थ अधिक और तेज उत्पन्न होता है वैसा प्रायः ध्यान तथा प्रबन्ध किया जाता है, उत्सेचन क्रिया भी सम्पूर्ण की जाती है। आसवारिष्ट में मादक नहीं किन्तु औषधों का सत्व द्रवपदार्थ में खिंच आवे इसी का ध्यान रक्खा जाता है। अतः यह मादक या मद्य पदार्थ कदापि नहीं है, और न मादकता के लिये इसका उपयोग ही किया जाता है।

आसवारिष्ट की परिभाषा एवं निर्माण विधि।

* आसव और अरिष्ट प्रायः एक ही वस्तु है, दोनों नाम

---

* महर्षि चरकजी ने आसवों का वर्णन करते हुये लिखा है।

"इत्येषामासवानामासुतत्वादासवसंज्ञा।"

अर्थात्—आ = समन्तात्, सुत = उत्पन्न होने से, सन्धान क्रिया के पश्चात्, पात्र के अन्दर, सर्वतः = विशेष किण्वनामक कीटाणुओं द्वारा उत्पन्न होने से, यह आसव कहलाता है। —लेखक।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA).

समान भाव सूचक हैं, और प्राचीन ग्रन्थों में ये दोनों शब्द एक हीं भाव में प्रयुक्त हुये हैं, अवश्य ही कई ग्रन्थों में इनकी क्रिया में परस्पर थोड़ा सा भेद माना है, परन्तु प्राचीन ग्रन्थकारोंने इस थोड़े से भेद के लिये आसव और अरिष्ट को अलग २ नहीं माना। यहाँ तक कि शाङ्र्गधरसंहिता से पहिले के ग्रन्थों में तो ऐसी कोई संज्ञा भी निर्धारित नहीं हुई है कि जिससे आसव और अरिष्ट में भेद समझा जा सके। इससे अनुभव किया जा सकता है कि ठेठ पूर्वकाल में आसव और अरिष्ट कोई अलग २ पदार्थ नहीं समझे जाते थे। आसव और अरिष्ट दोनों में उत्सेचन क्रिया (खमीर उठना) भी समान हीं होती है। केवल मद्यसार का अंश अरिष्ट की अपेक्षा आसव में कुछ शीघ्र होता है, किन्तु इसका सारा आधार द्रव्य की जाति और उसके परिमाण पर बहुत कुछ निर्भर है। एक ही द्रव्य के आसव और अरिष्ट दोनों बनाये जा सकते हैं। किन्तु उनके गुण में कुछ खास विशेषता अवश्य आती है। आसव कुछ बृंहण पदार्थ समझा जाता है, और वह कुछ सनसनाहट पैदा करने वाला भी है। अरिष्ट में औषध का सत्व आसव की अपेक्षा अधिक परिमाण में तथा बलवान होता है, एवं रोग नाश करने की शक्ति भी अधिक रखता है। इन दोनों में जो द्रव्य प्रधान होता है, उसी के अनुसार गुण मुख्य होता है। जो पदार्थ कड़े हों अथवा जिनका सत्व देर से निकलता हो, उनके लिये अरिष्ट क्रिया, तथा जो पदार्थ मृदु हों या जिनका सत्व द्रवरूप में शीघ्र निकल आता हो, उनके लिये आसव क्रिया लाभकारी है।

आसवारिष्ट के प्रयोगों में मुख्य औषध के साथ दूसरे कई द्रव्य तो मुख्य औषध ही की भांति और कई क्रिया में सहा-

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

यता पहुंचाने के लिये व्यवहृत होते हैं। मुख्य औषध का तो सत्व निकलता है, तथा वह प्रयोग उसी औषध के नाम से पुकारा जाता है। जल, गुड़, शहद, द्राक्षा, खांड, महुआ तथा अन्य कई शर्करादि पदार्थ उत्सेचन क्रिया को उत्पन्न करने तथा सहायता पहुंचाने के लिये उपयुक्त होते हैं। धायके फूल, लोध, मुलैठी, आमकी गुठली, त्रिफला, जामुन की गुठली, बबूल की छाल, खैर आदि कसैले पदार्थ क्रिया में विशेष सहायता पहुंचाने के लिये उपयोग में आते हैं, जिनसे निर्मलता आती है। कुछ द्रव्य सुगन्धित एवं सुवासित करने के लिये डाले जाते हैं। आसवारिष्ट किसी भी पदार्थ के बनाये जा सकते हैं, किंतु द्रव्य खास कर अम्लगुण वाला नहीं होना चाहिए। यद्यपि कैथ, दही का पानी, छाछ, आँवला, कांजी, लवण, तैल आदि पदार्थों का उपयोग प्राचीन चिकित्सकोंने कई प्रयोगों में किया है, किंतु अवस्था विशेष में ही उनकी खास आवश्यकता समझी गई है। नवीन प्रयोगों में इन पदार्थों का उपयोग बहुत विचार पूर्वक होना चाहिये, अन्यथा प्रयोग के बिगड़ जाने का भय है।

आसवारिष्ट को यथोपयुक्त तैयार करने के लिये खास अनुभव की आवश्यकता है। थोड़ीसी भी भूल या उपेक्षा होजाने से वे ठीक २ तैयार नहीं हो पाते, अथवा बिगड़ जाते हैं, और आसवारिष्ट के स्थान में शुक्त, सिरका आदि कुछ और ही पदार्थ बन जाते हैं। उनमें जैसा चाहिये वैसा गुण नहीं होता, प्रत्युत् अनेक बार विपरीत गुण होजाता है।

आयुर्वेद में आसवारिष्ट की निर्माण विधि अत्यन्त संक्षेप में सूत्ररूप से कही गई है। यथा—

द्रवेषु चिरकालस्थं द्रव्यं यत्सान्धितं भवेत्।
आसवारिष्ट भेदस्तु प्रोच्यते भेषजोचितम्॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अर्थात्—जलादि द्रव पदार्थों में औषधियाँ डालकर निर्धारित समय तक (उत्सेचन क्रिया पूर्ण होने तक) सन्धान कर रखने के बाद जो द्रव्य तैयार होता है, उसे क्रिया भेद से आसव या अरिष्ट कहते हैं।

"यदपक्वौषधाम्बुभ्यां सिद्धं मद्यं स आसवः ।"

अर्थात्—औषधियों को जल में डालकर न पकाते हुये वैसे ही सन्धान करके उत्सेचन क्रिया के पूर्ण होने तक सुरक्षित रखने के बाद जब वह शारीरिक-उत्साह संचार शक्तियुक्त, रोग निवारक गुण सम्पन्न होजाता है, तब उसे आसव कहते हैं। मूल श्लोक में 'मद्य' शब्द आया है, उससे मद्य अर्थात् तीव्र मदकारी शराब का अर्थ ग्रहण करना अनर्थकारी है। कारण 'मद्य' वह है जो अन्न के समान स्वाभाविक ही देहधारण करे (शराब कुछ स्वाभाविक ही देहधारण नहीं करती प्रत्युत देह को और शुष्क कर डालती है यदि उस पर तर माल न खाया जाय) कहा है—

"मद्यं स्वभावेन यथैवान्नं तथा स्मृतम् ।"

अरिष्ट के विषय में कहा है—

अरिष्टः क्वाथ सिद्धः स्यात् सम्पक्वो मधुरद्रवैः ॥

अर्थात्—जब उन्हीं औषधियों का क्वाथ तैयार कर गुड़ आदि मधुर द्रव्यों का योग (मधुर द्रव्यों का योग आसव में भी दिया जाता है) देकर, नियत काल तक सन्धान करके रखने के बाद जो उत्साह संचार एवं रोग निवारक शक्ति युक्त द्रव्य तैयार होता है उसे अरिष्ट कहते हैं। यह लघुपाकी होने से अधिक उपयोगी हुआ करता है, जैसा कि कहा है—

"अरिष्टं लघुपाकेन सर्वतश्च गुणाधिकम् ।"

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

निर्माणविधि—आसवारिष्ट साधारणतया मिट्टी के शुद्ध पात्र में, या आधुनिक चीनी मिट्टी के पात्र में, यदि अत्यधिक मात्रा में बनाने हों तो लकड़ी के ढोल (जिनमें शराब आती है) में बनाने चाहिये। पात्र ऐसे होने चाहिये जिसमें कभी भी अचार, दही, लस्सी, सिरका आदि अम्लतोत्पादक पदार्थों का स्पर्श न हुआ हो। वह बिल्कुल नवीन होने चाहिये। यदि पुराने हों या उक्त अम्लतोत्पादक पदार्थ युक्त हों या ऐसे हों जिसमें एक दो बार आसवीय द्रव्य बिगड़ चुके हों तो उन्हें पूर्णतया निम्न प्रकार से शुद्ध करलेना चाहिये। "घृतभाण्डे विनिक्षिप्य" का यह मतलब नहीं है कि कोई भी घृत से चिकना किया हुआ पात्र ले लिया जाय। ऐसा अन्धानुकरण करने से आसवारिष्ट अवश्य ही बिगड़ जाते हैं।

पात्र शुद्धि करणविधि—पात्रको प्रथम खौलते हुये गर्मजल से स्वच्छ धोकर, आग पर या तीव्र धूप में रख खुश्क करलेवे। पश्चात् चूने के जल से (१५ सेर जल और १ सेर कलई का चूना एकत्र उस पात्र में डाले, जब वह खौल उठे तब उस पात्र को आग पर २ या ३ घन्टे तक रखे, फिर अन्दर के चूर्णादिक को लौट कर, उसे ५–६ बार उष्णोदक सेही धोकर सुखा लेवे) धोकर और शुष्क कर, लोबान आदि धूप द्रव्यों से धूपित एवं सुवासित कर लेवे यदि मामूली मिट्टी के घड़े में आसवारिष्ट संधान करना हो तो उसे भी उक्त प्रकार से स्वच्छकर, अन्दर लोध की छाल और धाय के फूलोंको समभाग खूब महीन कल्क कर पतला २ लेप ३ बार करे। प्रत्येक बार लेप करके सुखालेना चाहिये। यदि इस प्रकार लेप न किया जावेगा तो उस घड़े के सूक्ष्मातिसूक्ष्म छिद्रों द्वारा अन्दर का आसवीय द्रवभाग बाहर

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

निकल जावेगा, तथा इन्हीं छिद्रों द्वारा बाह्य वायु अन्दर प्रविष्ट होकर आन्तरिक उपयोगी ऊष्मा को कम कर दे, यह संभव है, जिससे आसवारिष्ट बिगड़ जाते हैं। कोई २ राल और मैथिलेटिडस्प्रिट के मिश्रण का लेप३ वार करनेका आदेश करते हैं, किन्तु यह हमें पसंद नहीं, कारण यह लेप ठीक २ नहीं होता।

जल तथा औषधि द्रव्य शुद्धि—उक्त प्रकार से पात्र शुद्धि के पश्चात् जल जो कि आसवारिष्ट निर्माण के लिये प्रयुक्त होता है वह यदि बाष्पीय जल हो या ऊपरी वर्षा का शुद्ध पात्र में लिया हुआ जल हो तो अत्युत्तम होता है। यदि ऐसा जल न मिले तो शुद्ध कूप, नदी प्रवाह या तालाब का जल, जो क्षार रहित निर्गन्ध, कीटाणु दोष रहित हो, और शुद्ध वस्त्र में छना एवं शुद्ध पात्र में भरा हुआ होना चाहिये।

औषधि द्रव्य परिपक्व, यथा समय संग्रह किये हुये एवं साफ़ होने चाहिये। कोई भी द्रव्य सड़ा, गला, मिट्टी-धूल से मैला या वर्षा के सीलाब से भीगा हुआ नहीं होना चाहिये, अन्यथा एक ही द्रव्य की खराबी से संपूर्ण आसवारिष्ट बिगड़ जाते हैं। तथा सब परिश्रम व्यर्थ जाता है। इस प्रसंग में हम ऊपर कह आये हैं तथा यहाँ पर भी कह देना आवश्यक समझते हैं कि औषधि द्रव्यों में ऐसा कोई द्रव्य नहीं होना चाहिये जिसका स्वाद अम्ल हो, या जो अम्लतोत्पादक हो।

गुड़, शक्कर, शहद आदि मीठे पदार्थों पर ही आसवारिष्ट की प्रक्रिया विशेष निर्भर है। इनके ही योग से उनमें उत्सेचन क्रिया का प्रारम्भ होता है। अतः ये मीठे पदार्थ परम शुद्ध ही डालने चाहिये। बाजारू गुड़ प्रायः बहुत अशुद्धि से भरा रहता है, इसमें सिरका, सिलाब या किसी न किसी अम्लत्व का दोष

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

रहता है । अतः गुड़ जहाँ तक होसके खूब छान बीन कर विशुद्ध ही लेना चाहिये, नहीं तो गुड़ के स्थान में खाण्ड डालना उत्तम होता है। खाण्ड डालने से गुणमें कुछ भी अन्तर नहीं आता, प्रत्युत् और भी गुणवर्धक एवं स्वादिष्ट होजाता है । गुड़ के समान शहद की भी खूब जाँच पड़ताल करलेनी आवश्यक है। गुड़ और शहद परम विशुद्ध और जहाँ तक हो सके पुराने ही लेने चाहिये किन्तु खांड या शक्कर नवीन ही लेना ठीक है। इनके सिवाय मुनक्का, खजूर, महुआ आदि जो भी पदार्थ डालने हों वे सब कूड़ा करकट रहित साफ करके डालना ठीक होता है। जल आदि सब औषधि द्रव्यों को ठीकर प्रमाण से तोल कर डाले, कम या ज्यादा कोई भी द्रव्य न होने पावे ।

गुड़, शर्करा, शहद आदि घुलने वाले जितने पदार्थ हों उन्हें प्रथम जल में या क्वाथ में घोल कर पात्र में डालना चाहिये । पश्चात् प्रक्षेप के जो औषधि द्रव्य हों, उन्हें महीन चूर्ण कर उसमें मिला देवे, फिर धाय के फूल या बबूर की छाल या महुआ आदि जो मद्योत्पादक पदार्थ डालने हों उन्हें भी अच्छी तरह साफ़ कर तथा कूट पीस कर उसमें डाले ।

मुख बन्धन-पात्र के मुखको कपड़े से बांध देवे, या शराव से ढ़क कर कपड़मिट्टी कर देवे। हम तो पात्रके मुखको स्वच्छ वस्त्र से बांधकर, ऊपर एक लकड़ी की पटिया रखदिया करते हैं। यदि शराव संपुट से दृढ़तया मुख मुद्रा करना हो तो उष्ण ऋतुमें कम से कम ३ दिनतक और शीतकाल में ७ दिनतक मुख को बन्द न करके, पश्चात् मुखमुद्रा कर देना ठीक होता है। किन्तु हम दृढ़ मुखमुद्रा के विरुद्ध हैं, कारण पात्र के मुख को

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

दृढ़तया सन्धान करदेने से उसमें बाह्यशुद्ध हवा का किंचिन्मात्र भी प्रवेश न होने से, अन्दर उत्सेचन क्रिया ठीक २ नहीं होपाती, और प्रायः आसवारिष्ट बिगड़ जाया करते हैं। या उन्हें छान कर बोतलों में भरने पर उस समय वहां उत्सेचन क्रिया शुद्ध होकर बोतलों के कार्क उड़ जाया करते हैं, या बोतलें फूट जाया करती हैं। हमने आगे प्रत्येक प्रयोग में शास्त्र की परिपाटी के अनुसार सन्धान करने के लिये कह दिया है, किन्तु हमारा जो निजी अनुभव है, उसे यहाँ प्रकट कर देना हमारा कर्त्तव्य है।

अरिष्ट की निर्माणविधि में इस बातका ध्यान रहे कि औषधि द्रव्यों को उत्तम प्रकार से जवकुट कर, जल में २४ या १२ घंटे भिगो रखने के बाद विधि युक्त क्वाथ करे। पश्चात् उसे छान कर तोल लेवे, यदि क्वाथ जल का वजन कम हो तो वाष्पीय जल या औटाया हुआ जल उसमें मिला कमी की पूर्ति करली जावे। यदि क्वाथ जल अधिक होजाय तो उसे पुनः औटाकर यथायोग्य वज़न कर लेवे। कुछ उष्णिमायुक्त तोलने पर १ सेर पीछे ५ तोले जल कम होजाता है, ऐसा अनुभव है। यह भी ध्यान रहे कि औटाये हुये क्वाथ को सूखे वस्त्र द्वारा सूखे पात्र में इस तरह धीरे २ छानना चाहिये, जिससे नीचे वैठी हुई गाद पात्र में न आने पावे। पश्चात् उसमें प्रक्षेपणीय द्रव्यों को यथायोग्य वजन से चूर्ण कर मिलावे और उपर्युक्तानुसार पात्र का मुख बन्दकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिये।

स्थान कैसा हो? आसव या अरिष्ट का सन्धान किया हुआ पात्र रखने के लिये स्थान ऐसा शुद्ध होना चाहिये जहाँ कूड़ा, कचरा, सड़ी गली वस्तु न हो सील तथा तेज धूप

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

रहित, धुला हुआ, हवादार एवं रजस्वला स्त्री या कोई भी अपवित्र व्यक्ति के आवागमन से रहित होना चाहिये। जिस स्थान में दही जमाया जाता हो, या आटे से खँमीर तैयार कर डबल रोटियाँ बनाई जाती हों, या ईख आदि का सिरका जहाँ रक्खा जाता हो ऐसे स्थानों में भी आसवारिष्ट नहीं रखना चाहिये। कारण वहाँ के अन्य जाति के सूक्ष्म कीटाणु किसी न किसी प्रकार पात्र में घुसकर अवश्य ही आसवारिष्टों को बिगाड़ देते हैं। यदि पात्र को जमीन में गाढ़ कर रखना हो तो वहाँ की अतराफ़ की भूमि सीलरहित एवं शुद्ध हो, गड्ढे में नीचे भूसा भरकर उस पर पात्र को धीरे से जमा देना चाहिये तथा पात्र के ऊपर भी शुद्ध भूसा जमा कर गड्ढे के मुख को मिट्टी से या लकड़ी की पट्टियों से बन्द कर देना चाहिये।

उत्सेचन क्रिया तथा छानना—४ या ५ दिन के बाद ही पात्र में सनसनाहट उत्पन्न होकर, अन्दर का घोल आसव के रूप में परिणत होने लग जाता है। यदि ४ या ५ दिन के बाद उसमें सनसनाट उत्पन्न न हो तो पात्र को धूप में रखकर या आग पर रख कर किंचित् उष्णता देने से यह क्रिया शीघ्र ही प्रारंभ होने लग जाती है। जब तक सनसनाहट चालू रहे तब तक उसका मुख न खोले, पश्चात् शीघ्र ही खोल कर छान लेवे। अन्यथा कई दिनों तक आसवारिष्ट बन्द पड़े रहने से बिगड़जाते हैं।

उत्सेचन या खमीर की क्रिया आरम्भ होने के कुछ समय पश्चात् गैस के बुदबुदे अन्दर के घोल में उठने लगते हैं, तथा उसमें चक्रके रूपमें फेन उत्पन्न होता है। उक्त बुदबुदे इतने अधिकहोते हैं कि उसमें स धीमे स्वरसे सनसनाहट की ध्वनि

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सुनाई पड़ती है और चक्राकार सफेद फेन दिन दिन मोटा होता जाता है। यही सुराबीज या किण्व (Yeast) नामक कीटाणुओं का समुदाय है। अन्त में जब खमीर की सब क्रिया हो चुकती है, तब वह टूट टूट कर द्रव में अधःपतित होजाता है, जिसके पश्चात् खमीर की दूसरी क्रिया आरंभ होजाती है, जो आसवारिष्ट के लिये उपयोगी नहीं है। अतः यह आवश्यक है कि खमीर की उक्त क्रिया समाप्त होते ही अर्थात् फेन के अधःपात होने के पहिले ही आसवारिष्ट को छानकर दूसरे पात्रों में भर लिया जावे।

प्रसंगानुसार उक्त सुराबीज या किण्व-कीटाणुओं के विषय में संक्षेप में लिखना आवश्यक है-ये कीटाणु हवा तथा अन्य कितने ही पदार्थों में स्वभावतः विद्यमान रहते हैं। योग्य परिस्थिति पाते ही ये अपना कार्य प्रारंभ करने लगते हैं। जल मिश्रित मधुर द्रव्यों पर द्राक्षाशर्करा (Inoerted Sugr) पर इनका खास प्रभाव पड़ता है। ये अपनी क्रिया से जब मधुर द्रव्यों को मद्यसार में परिणत करते हैं, तब कार्बन ओषित गैस की उत्पत्ति होने से द्रव या घोल में बुदबुदे से उठने लगते हैं, और द्रव पर धीरे २ चारों ओर श्वेत वर्णका फेनसा उठता है, धीमी आवाज भी आने लगती है, तथा द्रव का तापमान भी एक बारगी बढ़कर १०० डिग्री तक पहुंच जाता है और फिर पीछे घट जाता है। जब इनकी क्रिया समाप्त होचुकती है, मधुर पदार्थ का मद्यसार बन चुकता है, तब फेन हटकर घोल स्वच्छ होजाता है। आवाज बन्द हो जाती है, तथा कार्बन गैसका निकलना बन्द होजाता है। बस आसवारिष्ट के लिये इनकी इतनी ही क्रिया पर्याप्त है। ठीक

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

इसी समय यदि द्रव्य को छानकर अलग बोतलों में बन्द न कर दियाजाय तो पुनः खमीर उठने लगता है; पहले की भांति आवाज सुनाई देती है, द्रव या घोल पर रोटी सी जम जाती है, तथा वह अम्लरसयुक्त शुक्त होजाता है।

किएव कीटाणु बराबर एवं उत्तम काम करें, इसके लिये कितनी ही बातों का ध्यान रखना आवश्यक है। सब से पहिले मधुरता का परिमाण ठीक होना चाहिये। (१ मन जल में कम से कम २॥ सेर (ढाई सेर) तथा अधिक से अधिक ५ या ६ सेर तक मीठा डालना ठीक होता है) मीठा प्रमाण से बाहर अत्यधिक मिलाने से ये किएव नष्ट होजाते हैं, और बिल्कुल ही कम मिलाने से इनकी क्रिया बराबर नहीं होने पाती, तथा समय भी लग जाता है। दूसरी बात यह है कि प्राणवायु बराबर पहुंचता रहे, एतदर्थ हवा पहुंचाने का भी ध्यान रखना आवश्यक है। तीसरी बात यह है कि अन्दर के घोल पर जब फेन आजाय और हवा भीतर न पहुँच सकती हो, तब उसे हिला देना चाहिये। यद्यपि कुछ लोगों की सम्मति में फेनको हिलाना उत्तम नहीं है, परन्तु अनुभव इसके विरुद्ध है। तापमान का भी ध्यान रखना उचित है। अधिक उष्णता में ये किएव नष्ट होजाते हैं, और अधिक शीत में अपना कार्य ठीक २ नहीं कर सकते। आसवारिष्टों में धायकेफूल, मुलैठी आदि जो डाले जाते हैं वे इन किएवों की पुष्टि के लिये उपयोगी होते हैं।

उत्सेचन क्रिया लगभग ५। ६ दिन में समाप्त होजाती है। शीत की अपेक्षा ग्रीष्म में कुछ कम समय की आवश्यकता होती है। यदि स्वाभाविक नियमानुसार सब व्यवस्था रहे

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

तो शीतकाल में ६ या ७ दिन और ग्रीष्म में ५ या ६ दिन में खमीर की क्रिया होचुकती है। इसप्रकार आसवारिष्ट के प्रयोगों में खमीर की समाप्ति का समय शास्त्रों में भिन्न २ ऋतुओं में भिन्न २ कहा है। किन्तु शीत गर्मी के तारतम्य से या पदार्थों की मधुरता आदि की भिन्नता आदि अनेक कारणों से समय में थोड़ा बहुत ही नहीं प्रत्युत बहुत कुछ अन्तर पड़ जाना स्वाभाविक है। अतएव केवल दिनों के ही भरोसे बैठे रहना ठीक नहीं, किंतु साथ ही साथ खमीर पूर्ण होने के चिन्हों पर भी ध्यान रखना चाहिये। ये चिन्ह इस प्रकार हैं।

जब खमीर या उत्सेचन क्रिया समाप्त होती है तब (१) अन्दर से सनसनाहट की आवाज आनी बन्द होजाती है। (२) अन्दर का घोल साफ होजाता है। (३) कार्बन ओषित गैस निकलना बन्द होजाता है, इसकी पहिचान के लिये पात्र के मुख के पास बत्ती जलाकर लाई जावे, यदि वह बुझजाय तो समझना चाहिये कि गैस निकल रही है, यदि न बुझे या कुछ भी टिमटिमाती रहे तो समझना चाहिये कि उक्त गैस निकलना बन्द है और खमीर की क्रिया अब तैयार होने पर है। (४) यदि मधुरता मापक यंत्र सेक्रोमीटर (Secrometer) पास हो तो उससे भी परीक्षा ठीक होसकती है, अर्थात् उस यन्त्र की स्पेसिफिकग्रेविटी ४ या ५ डिग्री पर हो तो समझना चाहिये कि खमीर की क्रिया अब समाप्ति पर है। (५) थर्मामीटर से भी परीक्षा हो सकती है, अर्थात् थर्मामीटर को उक्त सेक्रोमीटर के अनुसार ही पात्र के घोल में लटकाकर देखना चाहिये यदि तापमान ८० या ८५ डिग्री का हो तो समझना चाहिये कि खमीर की क्रिया अब समाप्ति पर है। (६) पात्र का मुख

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

खोल कर देखें, जब फेन हट कर घोल साफ निर्मल होजाय तब समझ लेना चाहिये कि उत्सचनक्रिया समाप्त होचुकी है।

(आसवारिष्ट प्रयोग निबन्ध से)

यदि संधान पात्र में सुरा, सुराबीज (किण्व) डाले गये हों तो आसवारिष्ट १५ दिन के अन्दर ही तैयार होजाते हैं, यदि न डाले गये हों तो १५ या २० दिन बाद (जैसी आज्ञा दी गई हो) मुख खोलकर शीघ्र ही छान लेना चाहिए। या उक्त प्रकार से परीक्षा कर लेने के बाद तुरन्त ही छान लेना आवश्यक है।

छानते समय कलईदार पात्रों में, चीनी या कांच के पात्रों में, पात्र का मुख ढाँक कर, मक्खी या कीटकों से बचाते हुये, धीरे २ छानना चाहिये। शीघ्रता से एकदम उन्डेलते हुये छानने से उसका मद्यांश या सत्वांश, हवा में उड़ जाता है और नीचे बैठी हुई गाद भी पात्रों में छनकर चली जाती है। जिससे आसवारिष्ट हीनवीर्य होजाते हैं। और गाद के आजाने से कभी २ पुनः उत्सेचन क्रिया शुरू होकर पात्र का ढक्कन उड़ जाता है, आसवारिष्ट में उबालसा आ जाता है और आसवीय भाग कम होकर गुणरहित होजाता है। यदि बोतलों में भरना हो तो बोतलों को मुख तक न भरे, कुछ स्थान खाली रखना चाहिये। कारण मुख तक बोतल भर देने से अन्दर जोश पैदा होकर डाट को उड़ाकर आसव बाहर निकल जाता है अथवा बोतल के फूट जाने का भय है। सेवन करने योग्य बाहर निकाल कर पुनः बोतल के मुख को अच्छी तरह बन्द कर देना चाहिये, जिससे बाहरी वायु अन्दर न जासके।

आसवारिष्ट निर्माणकाल निर्णय—आसवारिष्ट बनाने का

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

योग्य काल आश्विनमास से लेकर आषाढ़ तक अर्थात् शरद ऋतु से ग्रीष्म तक उत्तम माना गया है। इनमें से शरद, हेमंत और शिशिर में आसवारिष्ट निर्माण करते समय हमें आन्तरिक उत्ताप को यथास्थित कायम रखने के लिये विशेष प्रयत्न नहीं करना पड़ता। कारण बाह्य शैत्य के प्रभाव से पात्र स्थित द्रव्य का उत्ताप प्रायः यथायोग्य ही बना रहता है। किंतु कभी २ बाह्य अत्यधिक शैत्य के कारण पात्रस्थित द्रव्यों का उत्ताप यथायोग्य न रहकर, बहुत कुछ घट जाने से आसवोत्पादक किरव नामक कीटाणु निष्क्रिय होते हैं, अतः आसवारिष्ट के उत्तम प्रकार से तैयार होने में अत्यधिक समय लग जाना संभव है। ऐसी स्थिति में पात्र को भूसे के अन्दर या धान्य राशि में दबाकर या ऊनी वस्त्र कम्बल आदि से ढाँक कर रखना पड़ता है, या पात्र के आसपास अँगीठियाँ जलानी पड़ती हैं। अथवा इसके लिये सरल युक्ति यह है कि अत्यधिक शीतकाल में आसवारिष्ट निर्माण करते समय पात्र में जो जल या क्वाथ का मिश्रण किया जाता है, उसकी उष्णता लगभग ५० या ६० डिग्री तक चढ़ाकर, मिलाने से बाह्य शैत्य के कारण आन्तरिक घोल का उत्ताप घटने से पूर्व ही उसमें खमीर क्रिया के प्रारंभ होजाने से स्वाभाविक ही आन्तरिक उत्ताप यथायोग्य कायम रहकर शीघ्र ही वह उत्तमतया तैयार होजावेगा। आगे कोई विशेष खटपट करने की आवश्यकता न रहेगी।

वसन्तऋतु में तो बड़ी सरलता से शीघ्र ही कार्य निष्पत्ति होजाती है। ग्रीष्म ऋतु में भी प्रायः विशेष झंझट नहीं उठानी पड़ती। हाँ, कभी २ बाह्य ऊष्मा की परिवृद्धि के कारण पात्र में उबाल आकर खराबी होना संभव है। एतदर्थ पात्र को

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

बार २ हिलाना, या पात्र पर शीतल जल का सिंचन करना, या पात्र के अन्दर वर्फ की पोटिलियाँ छोड़ना, या उसे ऐसे स्थान में रखना जहाँ बाहरी अत्यधिक गर्मी की पहुँच न होने पावे, इत्यादि साधारण प्रयत्न करना आवश्यक है।

वर्षाऋतु में बाह्य वातावरण इतना गंदला होजाता है कि जरासी भी असावधानी से आसवारिष्ट बिगड़ जाया करते हैं।

आसवारिष्ट में द्रव्यों का परिमाण—

आसवारिष्ट के प्रत्येक प्रयोग में द्रव्यों का परिमाण बतला-दिया गया है। यदि कोई नवीन प्रयोग बनाना हो तो या किसी प्राचीन प्रयोग में द्रव्यों का परिमाण स्पष्टतया निर्दिष्ट न किया हो तो—

अनुक्तमानारिष्टेपु द्रवद्रोणे तुलां गुडम्।
क्षौद्रं क्षिपेद् गुडादर्धं प्रक्षेपं दशमांशिकम्॥

अर्थात्—जल १ द्रोण या १३ सेर, गुड़ या शर्करा १ तुला अर्थात् ४०० तोले या ५ सेर, शहद २०० तोले या २॥ सेर, तथा अन्य औषध द्रव्यों का कुल परिमाण ४० तोले होना चाहिये।

टिंक्चर—यह भी एक प्रकार का आसव ही है। इसे 'सुरा-मण्डासव' कह सकते हैं। अत्रिसंहिताकार इसे अरिष्ट कहते हैं यथा—

"आप्लाव्य सुरया सम्यग्द्रव्याणि त्रिविधानिच।
सप्ताहान्ते परिस्राव्य रसं वस्त्रेण गालयेत्॥
एषोऽरिष्टोऽभिधानेन भिषग्भिः परिकीर्त्तितः।"

किंतु हमारे मत से इन्हें आसव ही कहना उचित होगा। कारण सर्वसम्मति से अरिष्ट वह कहा जाता है जिसमें पक्व

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

या क्वथितद्रव पदार्थ का मेल किया गया हो। टिंक्चर्स में तो आसव विधान के अनुसार अपक्व द्रव्यों का ही मोटा कल्क कर, पात्र में डाल, उसपर विशुद्ध मद्यसार (रेक्टिफाइडस्प्रिट) या संजीवनीसुरा आदि प्रमाणानुसार डालकर, पात्र का मुख बन्द कर दिया जाता है। फिर कम से कम ३ या ४ दिन में तथा अधिक से अधिक ७ या १५ दिनमें पात्र का मुख खोल कर (सन्धानावधि में पात्र को रोज़ १ या २ बार अच्छी तरह हिला दिया जाता है) ऊपर का निर्मलद्रव भाग नितार कर, तथा नीचे की गाद को टिंक्चरप्रेस में या पोटली में बांध खूब दबा कर, सब रसको निचोड़ते हुये निकाल लेते हैं। और आवश्यकतानुसार इसमें और भी मद्यसार मिला बोतलों में भर लिया जाता है। कर्पूरासव, अहिफेनासव आदि आसव टिंक्चर्स ही हैं। अन्य आसव और टिंक्चर में केवल अन्तर इतना ही है कि आसवारिष्ट में जल, द्रव्य सत्व और मद्यसार (१० से १५०/० तक) का मिश्रण रहता है, तथा टिंक्चर में जलका अभाव रहता है, उसके स्थान में मद्यसार ६० ०/० का मिश्रण रहता है। यह आसवारिष्टों की अपेक्षा शीघ्र परिणामकारी होते हैं, तथा इनकी सेवनीय मात्रा भी उनकी अपेक्षा बहुत कम होती है। इसी दृष्टि से हमने कई टिंक्चर्स के प्रयोग इस संग्रह में ग्रथित कर दिये हैं, जो कि बड़े ही मार्के के हैं। यह कोई नूतन आविष्कार नहीं, चरकसंहिता में, कई स्थानों पर इसका विधान पाया जाता है *। किन्तु महान खेद है कि हम लोग आयुर्वेदीय औषधि व्यवहार में इसकी योजना अत्यन्त

* देवदारुवचामुस्तनागरातिविषाभयाः। वारुण्यामासुतास्तोये कोष्णे वा लवणं पिबेत्॥ (च० चि० अ० १५)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

संकुचित वृत्ति से करते हैं। यह हमारे अज्ञान एवं कूपमण्डूक वृत्तिका परिणाम है। यदि हमें आधुनिक पाश्चात्य चिकित्सा से पूर्णतया सामना लेना है तो हमको चाहिये कि शीघ्र ही आयुर्वेदीय प्रधान २ द्रव्यों का सुरामण्डासव बनाकर लाभ उठायें।

अन्य दृष्टव्य–(१) पात्र में आसवारिष्ट का सम्मिश्रण पात्र के मुख तक नहीं भरना चाहिये कम से कम चौथाई और ज्यादा से ज्यादा आधा भाग पात्र का खाली रखना चाहिये। मुँह तक भर देने से खमीर के उठने पर वह बाहर को निकलने की कोशिस करेगा, तथा उत्सेचन क्रिया ठीक २ नहीं होसकेगी।

(२) आसवारिष्ट को सुगन्धित बनाने की इच्छा हो तो उसमें सुगन्धित पदार्थों को तब मिलाना चाहिये जब कि आन्तरिक खमीर की क्रिया समाप्त होजाय, अर्थात् जब अन्दर से कार्बोनिक एसिड् गैस का निकलना बिलकुल बन्द होजाय। बोतलों में भरते समय उन्हें मिलावे, जिससे कि उनकी सुगन्ध द्रव में अच्छी तरह समाजावे।

कस्तूरी कपूर आदि रेक्टिफाइडस्प्रिट में हल करके मिलाना चाहिये। किंतु प्रयोगों में द्रव्यों के साथ कहे हुये केसर, जायफल आदि पदार्थ प्रारम्भ में ही अन्य द्रव्यों के साथ मिला देने चाहिये, क्योंकि वे सुगन्धित द्रव्य केवल सुगन्ध के

पाठां मधुरसां रास्नां सरलं देवदारुच। प्रक्षाल्य जर्जरीकृत्य सुरासण्डे निधापयेत्। इत्यादि (च० चि० अ० १७)

आसुत्य (जीमूतकं) च सुरामण्डे मृदितस्रुतं पिबेत्। कफजेऽरोचके कासे पाण्डु रोगेसयक्ष्मणि ॥ (च० कल्प० अ० २)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

लिये नहीं किंतु उनके विशेष गुणों के लिये सम्मिलित किये जाते हैं।

(३) तयार हुये आसवारिष्टों को अधिक शुद्ध एवं स्वच्छ करने के लिये उन्हें ब्लाटिंग पेपर के द्वारा फिल्टर कर लिया जाता है। अथवा कतक (निर्मलीफल) को उनमें मिला देने से वे निर्मल-स्वच्छ होजाते हैं।

(४) सेवनीय मात्रा और काल—आसवारिष्ट की सेवनीय मात्रा रोगी की प्रकृति एवं बलाबल के अनुसार, साधारण युवा मनुष्यों के लिये पूर्ण मात्रा २ तोले से ४ तोले तक है। तथा टिंक्चर्स मृगमदासव, कर्पूरासव, अहिफेनासव आदि की मात्रा ५ बून्द से १५ बून्द तक है।

साधारणतया इनके सेवन का समय भोजन के पश्चात् ही है किंतु रोग और रोगी की परिस्थिति के अनुसार यथोचित समय में दिया जासकता है। सेवनीय मात्रा में समभाग जल मिला कर सेवन करने से इनका प्रभाव शीघ्र ही होता है। बिना जल मिलाये वैसे ही सेवन करने से कभी २ गले और छाती में दाह, बेचैनी आदि विकार उत्पन्न होजाते हैं। जिस रोगी को जुलाब की दवा दीगई हो, या जिसे भूख लगी हो, या जिस रोगी पर अन्य उष्णोपचार किये गये हों उसे आसवारिष्ट का सेवन कराना हितकर नहीं होता।

(५) सुवर्ण तथा लोहादि धातुओं को मिलाने की विधि।

लोहासव आदि कई आसवारिष्टों के प्रयोगों में लोहादि धातुओं को मिलाने का विधान है, जैसे सारस्वतारिष्ट, और भी वाजीकरणीय प्रयोग हैं, जिनमें सुवर्ण मिलाने को कहा गया है। ऐसी अवस्था में कई लोग लोहादि धातुओंके स्थान

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

में उनका अशुद्ध या शुद्ध किया हुआ बुरादा डाला करते हैं, वह आसवारिष्टों में कभी भी हल नहीं होता, वैसे ही पात्रों में पड़ा रह जाता है। (हम यह मानते हैं कि उसका कुछ अंश अवश्य ही विलीन होता होगा, किंतु उससे कुछ विशेष गुण वृद्धि नहीं होती) अतः इन धातुओं के स्थान में उनकी भस्म डालना श्रेष्ठ उपाय है। किंतु ये भस्म भी कभी २ अच्छी तरह नहीं मिल पातीं, अतः इनके अच्छे प्रकार हल होने के लिये उन को विलीन करने वाले द्रव्यों में (ये द्रव्य उस प्रयोग के अंग ही होवें) ठीक २ विलीन कर मिलाना चाहिये। उदाहरणार्थ लोहासव में लोहभस्म को यदि जल मिश्रित त्रिफला चूर्ण में ८ दिन तक पड़ा रहने दें तो वह पूर्णतया विलीन होजाता है, फिर इस विलीन हुये लोहभस्मयुक्त त्रिफलाजल को अन्य द्रव्यों के साथ पात्र के घोल में मिला संधान कर दिया जावे तो परमोत्तम गुणयुक्त लोहासव निर्माण होता है।

सारस्वतारिष्ट जैसे प्रयोगों में जहाँ स्वर्ण पत्र डालने का विधान हो वहाँ स्वर्ण भस्म (क्षार रहित) डालना चाहिये, अथवा शुद्ध स्वर्ण के वर्कों को अन्य द्रव्यों के साथ घोटकर मिलाना ठीक होता है। जो सुवर्ण-लवण (Gololdchlride) मिलाने के लिये कहते हैं, वह हमारी समझ एवं अनुभव के विरुद्ध है। सुवर्ण लवण में क्षार एवं तेजाब आदि का अंश रहने से वह आसवारिष्टों को केवल बिगाड़ता ही नहीं प्रत्युत् उन्हें हीनवीर्य भी कर देता है।

(६) हम आसवारिष्ट के प्रत्येक प्रयोगका वीर्यांश(Vitamin) वैज्ञानिक विधि से पूर्णतया जाँच कर लिखना चाहते थे किंतु इसमें अधिक समय व्यय होता देखकर नहीं लिख सके।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

तथापि इस कार्य को हमारे मित्रवर्य विश्वनाथजी शास्त्री प्रिंसिपल (ललितहरि आयुर्वेदिक कालेज पीलीभीत) ने बहुत कुछ किया है। उनका कृपा करके भेजा हुआ प्रास्ताविक लेख आगे दिया जाता है। इस कष्ट के लिये हम उनको हार्दिक धन्यवाद देते हैं।

(७) आसवों का परिस्रुत करना—आसव को भवके या नलिकायंत्र द्वारा खींच लेने या चुवा लेने पर वह बिल्कुल विशुद्ध एवं अविकृत होजाता है, उसके बिगड़ने की कदापि संभावना नहीं रहती। हम इस बात को मानते हैं कि परिस्रुत आसव में शारीरोत्साह संचारक शक्ति (जिसका भ्रमपूर्ण अर्थ मद्यसार किया जाता है) की मात्रा प्रचुरता से होती है। किंतु जो कहते हैं कि इसमें आसव के मुख्य द्रव्यों का गुण नहीं आता अतः वह निकम्मा एवं बेकार होता है, वे भ्रम में हैं। जिस तरह चतुर्जात, उशीर, चन्दनादि सुगन्धित द्रव्यों के उड़नशील सत्व(Volatile principes) मद्यसार के साथ (शारीरोत्साह वर्धक शक्ति के साथ) उड़कर उसमें (परिस्रुत आसव में) आते हैं, वैसे ही उन उड़नशील सत्वों के साथ ही में अन्यान्य पार्थिव द्रव्यों के सत्वांश भी उड़कर चले आते हैं, जैसे हवा के साथ धूल। इसीसे परिस्रुत या चुवाये हुये आसव विशेष या अत्यधिक स्रोतः शोधक, आशु क्रियाकारी एवं शीघ्र-पाकी होते हैं, तथा इसकी सेवनीय मात्रा भी कम होती है अतः रोगी को कोई कष्ट नहीं होता।

सरकार आबकारी एक्ट या कानूनधारा के अनुसार हमारी इस क्रिया में बाधा पहुंचाना चाहती है। किंतु हमें सरकार को अच्छी तरह समझा देना होगा कि आयुर्वेदीय आसवारिष्ट

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कदापि इस एक्ट के अन्तर्गत् नहीं आ सकते । उन्हें पानीय मद्य या शराब की समता में रखना या सरकार को रखने देना हमारी मूढ़ता एवं कायरता का परिचायक होगा । शास्त्र वर्णित एवं इस पुस्तक में ग्रथित सब आसवारिष्ट औषधस्वरूप हैं, एवं भिन्न २ रोगों के प्रतिकारार्थ और नाशार्थ हैं न कि मद्यवत् पानार्थ–उनका प्रयोग किया या कराया जाता है। प्रसंग विशेष पर उनके परिस्नुत करने की विधि भी हमारी प्राचीन शास्त्रानुमोदित ही है। अतः उस पर कायदे की लगाम कसना मानो हमारे परंपराप्राप्त अति विशुद्ध आयुर्वेदीय तत्वों को नष्ट कर डालना है। क्या दयालु सरकार का यही मन्तव्य है ? नहीं २ यह हमारी ही भूल है कि जो सरकार को ऐसा करने के लिये बाध्य करते हैं। हमारी फूट एवम् संगदिली का ही यह परिणाम है। हमें चाहिये कि एक स्वर से सरकार को बतला दें कि हमारे आसवारिष्ट शांतिभंग करने वाली शराब की कोटि के नहीं, प्रत्युत् प्रजा की सुख शांति एवं आरोग्यता प्रदान करने वाली एक औषधि विशेष हैं। जिस पर रोक लगाने से राजा और प्रजा दोनों का अकल्याण होना संभव है।

(८) आसवारिष्ट की अनुभूत चिकित्साप्रणाली ।

आसवारिष्ट के प्रयोगों के साथ उनके भिन्न २ रोगनाशक गुणों का वर्णन किया गया है। तथा हमने पाठकों की सुविधा के लिये रोगानुसार आसवारिष्टों की योजना की सूची (तालिका) भी नम्बरवार अलग लगा दी है। अब यहाँ पर संक्षेप में हम रोगानुसार उन आसवारिष्टों की चिकित्साप्रणाली को प्रकाशित किये देते हैं, जिसका हमें तथा हमारे मित्रों को खास अनुभव हुआ है ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

(१) ज्वर पर—चढ़े हुये ज्वर को उतारने के लिये लोहासव १ तो०, सौंफ का अर्क १ तो०, शुद्ध नवसादर १ रत्ती तथा जल २॥ तोले का मिश्रण कर पिलाने से ज्वर तत्काल कम होजाता है।

(अ) वातज्वर की तीव्रता पर दशमूलारिष्ट १। तोला और जल २॥ तो० का मिश्रण एक २ घंटे से थोड़ा २ पिलावे, ज्वर का वेग शीघ्र ही रुक कर तृष्णा की शांति होती है।

(आ) प्लीहा एवं यकृत वृद्धि युक्त ज्वर पर—लोहासव २॥ तोले में दो माशे सुदर्शनचूर्ण को ३॥ तोले जल में खूब घोट कर मिलावे। इस मिश्रण की ३ मात्रायें दिन में ३ बार पिलाने से ७ दिन के अन्दर हो प्लीहा और यकृत की वृद्धि नष्ट होजाती है, दस्त भी रोज खुलकर होता है।

(२) कृमि विकार पर—मल के साथ बारीक सूत जैसे श्वेत कृमियों का बहुतायत से निकलना तथा साथ ही में स्वप्नदोष के होने पर विडङ्गाद्यरिष्ट १ तोला में कृमिमुद्गर रस १ रत्ती मिला सेवन करावे। प्रातः सायं। शीघ्र ही लाभ होता है।

(३) पाण्डुरोग या रक्ताल्पता पर—चित्रकाद्यरिष्ट का सेवन भोजनोपरांत लाभदायक है।

(अ) यदि साथ ही में प्रदरादि उपद्रव हों, रज की अत्यधिक प्रवृत्ति हो, प्रमेह या बहुमूत्रता हो तो अशोकाद्यरिष्ट ३ माशे में मीठे अनार का रस १ तोला मिला सेवन करावे, भोजनोपरांत। अथवा धात्र्यारिष्ट या मध्वासव का अनार के रस के साथ, उक्त प्रकार से सेवन करावे।

(आ) यदि साथ ही में हृदय का विकार, अथवा यक्ष्मा का कुछ अंश हो तो पिप्पल्यासव और द्राक्षासव यथोचित

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मात्रा में समभाग एकत्र मिला तथा सबके समभाग अनार का रस मिला दोनों शाम भोजनोपरान्त सेवन कराने से शीघ्र लाभ होता है।

(इ) यदि साथ ही में शोथ और मलावरोध हो तो पुनर्नवासव की यथोचित मात्रा में हंसमण्डूर की मात्रा मिला कर देनी चाहिये।

(ई) यदि साथ में अन्त्रविकार, उदरक्षत, या आमरक्तमय अतिसार हो तो कुटजासव १ तो०, मृद्वीकासव १ तो०, विजयपर्पटी १ रत्ती, शहद १ तो० और घृत २ तोले एकत्र मिश्रण कर, इसकी २ मात्रायें करे। प्रातः सायं सेवन करावें। ७ दिन में पूर्ण लाभ होता है।

(उ) यदि साथ में मूत्र ग्रन्थि प्रदाह, कष्टार्तव और हृद्रोग हो तो उशीरासव की उचित मात्रा, दोनों शाम भोजनोपरांत सेवन करावे।

(ऊ) यदि रक्तस्राव हो तो लोध्रासव या अशोकारिष्ट का सेवन करावे।

(४) रक्तविकृति—कभी २ रक्तविकृति के कारण, वातव्याधि जैसे कटिशूल पार्श्व शूल आदि विकार शरीर में होते हैं जो सैकड़ों वात नाशक उपचारों से शमन नहीं होते। ऐसी अवस्था में सारिवाद्यरिष्ट और अश्वगन्धारिष्ट का मिश्रण समभाग जल मिला, दोनों शाम भोजनोपरान्त सेवन कराने से शीघ्र ही लाभ होता है।

(अ) रक्तविकृति के साथ ही साथ यदि रोगी को श्वास (दमा) का भी आजार हो तो प्रातः सायं खदिरारिष्ट का सेवन कराना हितकर है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

(आ) रक्तस्राव-रक्तार्श या अत्यार्तव से पीड़ित स्त्री को अत्यधिक रक्तस्राव होता हो तो द्राक्षासव को बनफ्शा पञ्चाङ्गके क्वाथ के साथ सेवन कराने से शीघ्र ही लाभ होता है।

(इ) छाजन (एग्जिमा) पर खदिरारिष्ट के साथ शुद्ध गन्धक का सेवन करावे।

(५) यकृत विकार—कुमारीआसव की यथोचित मात्रा के साथ नवायसलोह की मात्रा १ से ३ रत्ती तक सेवन करावे।

(अ) यकृत विकार के साथ यदि शोथ या जलोदरादि उदर विकारहों तो लोहासव २०तोले, अपामार्गक्षार१तो० और मूली क्षार १ तो० इन तीनों के मिश्रण में गिलोय १२तो० करंजपत्र १ तो०,चिरायता १ तो०, चूना १॥ तो० और नवसादर २ तो० का क्वाथ २॥ सेर जल में पका, ४० तोले शेष रहने पर, छानकर ठंडा कर मिलावें, और बोतल में भर रक्खे। मात्रा १ से २ तोले तक, प्रातः सायं पिलावें, तथा पथ्य में दूध, फल, मूली, मकोय देवे, अन्न बन्द रखे। बहुत जल्दी फायदा होता है।

(६) वीर्यविकार पर—अंगूरासव,अस्रहरारिष्ट, खजूरासव, गाजरासव, चन्द्रहासासव आदि कई आसवारिष्ट परमोत्तम हैं। यदि बालक अवस्था में अतिमैथुनादि से धातुक्षीणता, कमर पीठ में पीड़ा, शिश्नशैथिल्य, शिश्न के अग्रभाग पर फुन्सियाँ, मलावरोध एवं मन्दाग्नि हो तो—सारिवाद्यासव के साथ चन्द्रप्रभावटी का सेवन दोनों शाम कराना परम हितकर है।

अथवा—केवल सारिवाद्यरिष्ट का सेवन प्रातः सायं एक मास तक करे,फिर खदिरारिष्ट का सेवन १ मास तक करावे।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

(अ) स्वप्नदोषपर—चन्दनासव २॥ तोले में शुद्ध देशी कपूर आधी रत्ती, कबाबचीनी १ माशा और शुद्ध काला सुर्मा १ रत्ती इनका मिश्रण कर, दो मात्रा बना, प्रातःसायं सेवन कराने से शीघ्र लाभ होता है। वीर्य पुष्ट होता है।

(आ) शुक्रमेह, धातुदुर्बलता, मंदाग्नि पर—अश्वगन्धारिष्ट ५ तोले को, गौदुग्ध गर्म १० तोले में मिला, हिलावें। दूध के फटजाने पर, उसमें मिश्री मिला पिलावें। दोनों शाम। ३०दिन के अन्दर पूर्ण लाभ होता है।

(७) मधुमेहपर—द्राक्षासव की उचित मात्रा में केशर को पीस कर सेवन कराने से शीघ्र लाभ होता है, इससे अश्मरी और मूत्रकृच्छ्र भी दूर होता है।

(८) सूजाक (उष्णवात) पर—चन्दनासव के साथ चन्द्रप्रभा गुग्गुल का सेवन परम हितकारी है।

अथवा-चन्दनासव १ तो० में कलमीसोरा ४ रत्ती मिला पिलावें, मूत्र खुलकर दाह, चीस, चबक की तत्काल शांति होती है। फिर केवल चन्दनासव का सेवन रोज़ ४ बार करावे। रोग की प्रथम तथा द्वितीयावस्था में विशेष लाभप्रद है।

(९) यक्ष्माकीटाणुनाशार्थ–विडंगासव १ तो०, नीलगिरी तैल २० बूंद तथा रेक्टिफाइडस्प्रिट २॥ तोले एकत्र मिला ३ माशे की मात्रा में (समभाग जल मिला) दिन में ३ बार पिलावे। तथा इसकी ही नस्य देवे।

(अ) यक्ष्मा का रात्रिप्रस्वेद–क्षय की बीमारी में रोगी को रात्रि में पसीना बहुत आया करता है, इसके निवारणार्थ–द्राक्षारिष्ट का सेवन संध्या के समय नित्य नियम पूर्वक

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कराने से लाभ होता है। अथवा-चन्दनारिष्ट के सेवन से भी उत्तम लाभ होता है।

(१०) प्रतिश्यायपर-द्राक्षासव और कनकासव का मिश्रण उत्तम लाभकारी है।

(११) सूर्यावर्त्त (आधासीसी)—नामक सिर पीड़ा पर कर्पूरासव की १ मात्रा पिलाकर ४।५ बून्दें कान में छोड़ देवे और कुछ थोड़ा सिर पर मल देवे। कान में डालते ही सिर का दर्द कुछ बढ़कर फिर शीघ्र ही घट जाता है, और सुख पूर्वक नींद आजाती है।

(१२) वृक्कशूल पर—लोहासव २॥ तोले, नवसादर १ माशा, कल्मीशोरा १ माशा और जल १। तोला का मिश्रण ३-३ घंटे के बाद पिलावे। पेशाब खुलकर दर्द शांत होजाता है। यदि रोगी को कब्जी की शिकायत हो तो पहले रेंडीका तेल ५ तोले, गर्म जल ४० तोले में मिला बस्ती देनी चाहिये।

(१३) उदरशूल पर—लोहासव में थोड़ा शंखद्राव मिला और जल मिला कर दिन में ३ बार पिलावे।

(१४) वातरोगों पर—अश्वगंधारिष्ट २ तोले और द्राक्षारिष्ट दो तोले एकत्र मिला सेवन करावे। प्रातः सायं।

(१५) विषबाधा पर—जब कंप और मूर्च्छा हो लोहासव एक एक या दो दो तोले की मात्रा में (जल मिला) १-१ घंटे के बाद पिलावे।

(१६) स्त्री रोगों पर—

(अ) योषापस्मार—हिस्टीरिया हो तो लोहासव और कुमारी आसव समभाग मिश्रण,जल मिला दिन में ३ बार

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

देवे। अथवा—दशमूलारिष्ट १। तो० और लोहभस्म दो रत्ती का मिश्रण (जल मिला) दिन में ३ बार देवे (यह १ मात्रा है) अपूर्व लाभ होता है।

(आ) स्त्री का मासिकधर्म अनियमित या साफ न होता हो, विशेष वेदनायुक्त हो तो–मासिकधर्म होने के पूर्व उत्तम द्राक्षारिष्ट आधा तोला या १ तोला में समभाग जल और हुरमल (इस्बन्द) का महीन चूर्ण १ माशा मिला सेवन करावे। (यह १ मात्रा है) प्रातः सायं ७ दिन तक।

(इ) आर्तवजन्य गुल्म पर—दशमूलारिष्ट ६ माशे, जंबीर-द्राव ६ माशे, गुल्मकालानलरस १ रत्ती और शंखभस्म ३ रत्ती इन चारों का मिश्रण (यह १ मात्रा है) नित्य सायंकाल के समय पिलावे।

(ई) प्रसूत विकारों पर—प्रसूतो के साधारणतः सर्व विकारों पर– कस्तूरी युक्त दशमूलारिष्ट, अथवा अश्वगंधारिष्ट और दशमूलारिष्ट का मिश्रण समभाग जल मिला प्रातः सायं (भोजनोपरांत) सेवन करावें। ७ दिन में लाभ होता है।

(उ) बाल्यावस्था में मैथुन एवं गर्भधारण से, गर्भाशय की विकृति, शूल, सर्व शरीर में पीड़ा, अर्श, आध्मान, यकृत प्लीहा की वृद्धि, शक्तिपात, मासिकधर्म के समय कमर, पेट, पेडू में शूल, आदि हों तो– लोहासव आधातोला, कुमार्यासव १ तोला और जल १॥ तोला का मिश्रण भोजन के बाद दोनों शाम सेवन करावे।

(ऊ) गर्भपात के उपद्रव—उदर, पार्श्व में शूल, अपचन, अतिसार, योनि से श्वेत स्राव, भ्रम, हाथ पैर में जलन आदि हों तो दशमूलासव और कुमार्यासव १–१ तोला समभाग जल

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मिला, प्रातः सायं (भोजन के बाद) १ मास तक सेवन करावें। पश्चात् अश्वगंधारिष्ट का सेवन करावें।

(ए) गर्भवती के शरीर पर गर्मी के विकार हों तो खदिरारिष्ट का सेवन भोजनोपरांत करावे।

(ऐ) योनिरोग–रक्तविकृति से योनि में फुन्सियाँ हों तो खदिरारिष्ट २ तो० में मंजिष्ठादि अर्क ५ तोले मिला, दिन में दो बार पिलावे। ७ दिन तक।

(१७) बालरोगों पर–

(अ) सूखा रोग पर–द्राक्षासव ३० बून्द, कुटजारिष्ट १५ बूंद, अहिफेनासव १ बूंद और अर्क दशमूल १ तोला मिश्रण का सेवन दो वार दोपहर और रात्रि में करावे। १ मास तक।

(आ) पेट में गुड़गुड़ाहट तथा नाभि के बाहर निकलने से पीड़ा हो तो कर्पूरासव प्रथम दिन ३ बार एक २ बूंद की मात्रा से माता के दूध के साथ पिलावे। दूसरे दिन दो २ बूंदें पिलावे। ३ या ४ दिन इसीप्रकार पिलाने से पूर्ण लाभ होता है।

(इ) खाँसी और कृशता के निवारणार्थ अरविन्दासव का सेवन कराना हितप्रद है।

(१८) नकसीर–गर्मी के कारण नाक से खून गिरताहो, पेशाब लाल पीला होता हो तो उशीरासव में चन्दनादि आसव या चन्दनादि चूर्ण मिला सेवन कराने से तुरन्त लाभ होता है।

और भी कई योग हैं, जो कि विस्तारभय से यहाँ नहीं लिखे जा सकते। यदि पाठकों को यह चिकित्साप्रणाली ठीक जँची तो हम आगे के संस्करण में इसे विस्तार पूर्वक लिखेंगे।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

यह 'रत्नमाला' परमोदार 'वैद्य' सम्पादक श्रीयुत विष्णु-कान्तजी जैन वैद्य की प्रेरणा से ग्रथित कीगई है, अतः उन्हें ही यह समर्पित भी है, क्या उन्हें मैं धन्यवाद भी दे सकता हूँ ?

जिन २ प्रेमी वैद्योंने मुझे इस कार्य में, अपने अमूल्य प्रयोगों को भेजकर कृतार्थ किया है. उन्हें हार्दिक धन्यवाद देते हुये, उनसे विनम्र निवेदन है कि ऐसी ही कृपा की कोर हमेशा के लिये बनाये रक्खें। भूपाल निवासी मित्रवर बालकृष्णजी वैद्य-राज, शक्करगढ़ के वैद्यशास्त्री पं० देवदत्तजी शर्म्मा, पिंसपिल श्रीयुत विश्वनाथजी द्विवेदी वैद्यशास्त्री, कविराज गौरीशङ्करजी आनन्द, वैद्यभूषण पं०मक्खनलालजी शर्म्मा, स्वामी चैनदासजी आदि महानुभावों का तो मैं चिरकृतज्ञ हूँ। कारण आप सहृदयों की सहायता से ही मैं एक अज्ञ इस कार्य को किसी प्रकार पूर्ण कर सका हूँ। आशा है आप अपनी दयालुता का परिचय इसी प्रकार सदैव देते रहेंगे।

अन्त में इस पुस्तक को लिखकर भेजने में मेरी ओर से जो अत्यधिक विलंब हुआ, एतदर्थ प्रकाशकों की क्षमा याचना करते हुये तथा उनकी आयुर्वेद के उत्थान कार्य में लगी हुई लगन की सराहना करते हुये मैं इस बढ़ी हुई प्रस्तावना को समाप्त करता हूँ। और विज्ञ पाठकों से प्रार्थी हूँ कि इस पुस्तक में जो कुछ त्रुटियाँ मेरे प्रमादवश रह गई हों उनकी क्षमापूर्वक सूचना देने की कृपा करेंगे। कारण सज्जनों का यही कार्य है—

गच्छतः पतने भूमौ प्रमादान्नहि विस्मयः।
हसन्ति दुर्जनास्तत्रोत्तोलयन्ति तु सज्जनाः॥

* इति सर्वे सन्तु निरामयाः *

आयुर्वेदसूरिः कृष्णप्रसाद त्रिवेदी बी० ए०,
आयुर्वेदाचार्य, चांदा सी० पी०।

—*—

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

वैद्य

(वैद्यक-विद्या का सब से पहला पत्र)

हमारे यहाँ से यह २१ वर्षों से प्रकाशित हो रहा है। यह अपने विषय का सब से श्रेष्ठ और सबसे सस्ता—

मासिक--पत्र

(सम्पादक—श्री बाबू विष्णुकांतजी जैन वैद्य)

है। प्रतिमास प्रत्येक घर में उपस्थित होकर एक सच्चे वैद्य या डाक्टर का काम करता है। इसमें स्वास्थ्य-सम्बन्धी सभी बातोंपर सरल भाषामें विवेचन किया जाता है। वार्षिक मू० केवल २) रुपये। नमूना मंगाकर देखिये।

पता—वैद्य—ओफिस, मुरादाबाद।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

श्रीः

आसवारिष्ट और उनकी शक्ति

भारतवर्ष की चिकित्साप्रणाली विज्ञानपूर्ण क्रियात्मक अन्वेषणों के परिणाम स्वरूप निश्चित व अटल है । इसको न समझ सकने के कारण आज कुछ पाश्चात्य चिकित्सक इसकी तरफ उङ्गली उठाने की कोशिश करते हैं। किन्तु वे भूल पर हैं। उन्हे आवश्यकता है कि आयुर्वैदिक चिकित्सा-पद्धति का गे निष्पक्ष दृष्टि से अनुशीलन करें।

आयुर्वेद की चिकित्साप्रणाली में जितनी औषधियाँ (वनस्पतियाँ) प्रयुक्त होती हैं उनमें अधिकतर पञ्चांग का भाग होता है इसका अभिप्राय यह है कि किसी औषधि का एकांश उससे उत्तम गुण नहीं लासकता। आसवारिष्टों के निर्माण का प्रधान प्रयोजन भी यही है । इसकी पुष्टि में हम केवल अपनी ही बातें न रख करके डा० ए० आर० कुशनी का मत उल्लेख करते हैं जो मिशिगन व लण्डन की अन्य यूनिवर्सिटियों तथा एडिन बराकी युनिवर्सिटी में भी द्रव्यगुण के प्रोफेसर रहचुके हैं,वह स्व-रचित फार्माकोलोजी (Pharmacology) नामक पुस्तक के पृष्ठ ८६ पर स्पष्ट लिखते हैं।

"None of the pure princeples are as satisfactory in their actions as the crude drugs"

अर्थात् वनस्पति का कोई भी मुख्य अंश अपने प्रभाव में इतना संतोषदायक नहीं,जितनो कि वह सारी की सारी बूटी।

अतएव आचार्यों ने इनका उल्लेख खूब जान बूझकर के

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

किया है। इसके अतिरिक्त आसवों में वनस्पतियों या औषधियों के भीतर रहने वाले वे पदार्थ जिनको 'जीवनीय'(Vltamins) कहते हैं नष्ट होजाते हैं,जब कि वे कथित होती हैं। अतःआसवों का विधान अपक्व औषधि संधान से ही होता है। इनमें आसुत होते समय जो उष्णता उत्पन्न होती है। 100°। सं (क्वथनांक) जिस पर पानी उबलने लगता है,बहुत कम होता है। विटामिन क्वथनांक पर कई नष्ट होजाते हैं किन्तु इस प्रक्रिया द्वारा वे ज्यों के त्यों व एक विशिष्ट पदार्थ के साथ संयुक्त होते हैं जिनको सुरासार (Alcohal or Sprits) कहते हैं। आसव संज्ञा भी आसुत होने पर ही होती है। यथा--

'आसवा नामासुतत्वादासवसंज्ञा' "चरक"

अर्थात्–कुछ निश्चित द्रव्यों को लेकर एक स्थान में रखकर जो संधान किया जाता है। उसी को आसव या अरिष्ट कहते हैं।

अरिष्ट में भी क्वाथ बनाने के बाद प्रक्षेप द्रव्यों का उपयोग करते हैं, जिससे द्रव्यांश जो नष्ट होगये हैं पुनः ज्यों के त्यों व वल्य होजावें। जिसको लोक में आसब या मद्य कहकर पुकारते हैं, जिसको पीकर मनुष्य पागल होजाते हैं हमारा उससे अभिप्राय न होकर आयुर्वेदिक प्रणाली से आसुत आसव-अरिष्टों से है। इनमें मद्यांश (Alcohal) बहुत कम होता है। १५,प्रतिशत से अधिक अलकोहल अरिष्टोंमें व आसवों में कभी भी नहीं पाये जाते। किसी ही आसवारिष्ट में (कुटजारिष्ट, द्राक्षासव, कूष्माण्डासव इत्यादि) इनकी अधिक प्राप्ति होती है।

इससे आसवादिक पदार्थ स्वच्छ, निर्मल,तरल,सुगंधित व गुण युक्त होजाते हैं। कभी सड़ने नहीं पाते। यह संभव है कि

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

आसवारिष्ट यदि बिना छाने हुये ही रक्खेजाँय,या संधानावधि का अतिक्रमण होजाय,या शुक्तादि के बोतल बिना कार्क के साथ ही साथ रखे हों या पुराने शुक्तादि के संधानित पात्र में रह कर आसवारिष्ट उनके परमाणु सम्मेलन से शुक्त होजावें,तथापि छानकर निष्कीट करके उन्हें बोतलों में भरने पर शुक्तादि के रूप में परिणत नहीं होते।

यह गुण इन उत्पन्न रासायनिक पदार्थों (Alcohal) के ही हैं। विकाशीपन भी आसवारिष्टों में रासायनिक क्रियाओं से जो आसूत होने पर होता है, प्रधानतया दृष्टिगोचर होता है। इनका पचन शीघ्र होता है और वे पाचक संस्थान के पाचक रसों के कार्यों में विशेष प्रकार की शक्ति भी देते हैं, जिनसे यह शीघ्र प्रभावकर होजाते हैं।

पाश्चात्य तरीकों से जो आसव बनते हैं वे बहुत पतले व अल्पवीर्य होते हैं। अतः पाश्चात्य चिकित्सक उनका उपयोग न करके उन पदार्थों के सत्वों के घोल मिश्रण (Mixture) से करते हैं। ये सत्व भी अधिकतर अलकोहल के द्वारा (Thvough alcohal) बनते हैं, अतः उतने उपयुक्त नहीं होते। पाचक संस्थान के अन्दर यकृत का जो प्रधान कार्य पित्त पैदा करके वसादिकों का पाचन करना है, उसमें क्षोभ उत्पन्न करता है। अतः हानिकर सिद्ध होता है। आयुर्वेदिक प्रणाली से निर्मित आसवादि इससे निर्मुक्त व इसके विपरीत उत्तेजक होते हैं। वे हृद्य और शक्तिप्रद होते हैं। आजकल जितने भी मिश्रण या आसव जो पाश्चात्य चिकित्सक वर्तते हैं वे आयुर्वेद के इस भग्नावशेषकाल में भी इसके आसवारिष्टों से कहीं श्रेष्ठ होते हैं और इसीलिये उनकी खपत भी

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अधिक है, जो इसकी उपयोगिता को सिद्ध करती है। उदाहरण के लिए द्राक्षासव ले लो, इसमें जो जीवक (Vitamins) वस्तुएँ है उनकी संख्या तीन है।

ए० बी० डी० (A. B. D. Vitamins) साथ ही C. E. की भी मात्रा है किन्तु वह उल्लेखनीय नहीं है।

इन तीनों का कार्य–

A. क्लास की जीवक वस्तुएँ–१–शरीर की वृद्धि करना, विशेषकर बच्चों के शरीर की वृद्धि करना।

२—शरीर की रक्षा करना, क्षय पूर्ति करना।

३—सहनशीलता देना।

४—फेफड़ों को ताकत देना।

इसके अभाव से वालकों व प्रौढ़ोंको श्वास रोग होसकता है।

B. विटामिन से नाड़ी संस्थान का पोषण, नसों में ताकत, हृद्य और वल्य है। इसके अभाव में पैर कांपना, हृदय कमजोर होना व शरीर में मृदुता इत्यादि होना।

C. से पेशियों में दृढ़ता, विषो (शारीरिक) का विनिमय होना, अभाव में मांसपेशियों की कमज़ोरी, मसूड़ों व नाक से खून जाना इत्यादि रोग होते हैं।

D. से हड्डियों की दृढ़ता, दांतों का मजबूत होना अभाव में हड्डियों का पुष्ट न होना।

E. से जननेन्द्रिय शक्तियों का विकाश इत्यादि।

हरएक प्रकारके विटामिन १००डिग्रीके शतांश ताप तक नष्ट नहीं होते। 'बी' तो १२० शतांश ताप पर भीनष्ट नहीं होता। आसवारिष्टों में इतने डिगरी का ताप होता ही नहीं, अधिक से

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अधिक ७५या ८५ तक शतांश ताप होता है,अतः कोई भी जीवक पदार्थ नष्ट नहीं होते।

यही कारण है कि द्राक्षासव,अंगूरासव इत्यादि के सेवन से शरीर में भार की वृद्धि,रक्तवृद्धि,शक्तिवृद्धि,अस्थि-दार्ढ्य,हृदय व फुफ्फुसों में वल और पाचक संस्थान को शक्ति मिलती है। प्रत्येक मनुष्य जो इसका सेवन करता है, इसके गुणों पर मुग्ध होजाता है और स्वास्थ्य लाभ करता है। यहाँ पर प्रद्धि आसव व अरिष्टों के कुछ प्रधान नुसखों के विषय में वर्त्तमान कालीन अनुसंधान को, जिसको ललितहरि आयुर्वेदिक कालिज के अन्वेषण विभाग ने पता लगाया है उसे सबके सामनें स्पष्ट निवेदित कर देना उचित समझते हैं। क्योंकि आजकल के कुछ पाश्चात्य शिक्षा के आलवाल में पले हुये शिक्षित बहुत सी औषधियों के विज्ञापन में सर्व प्रथम विटामिन्स के ऊपर ही दृष्टि निक्षेप करके उसकी उपयोगिता को परखना चाहते हैं। उनके लिए यह तालिका बहुत उपयुक्त होगी साथ ही हमारे बहुत से वैद्य-बन्धु जो इन विषयों में घोर अंधकार में हैं,वे भी परिचित होंगे।

नाम आसव	विटामिन्स जो उपस्थित रहते हैं	गुण—
द्राक्षासब	A. B. D.(C.E.)	शरीर वृद्धि, नसोंको ताकत मिलना, हड्डियों का मजबूत होना, मांसपेशियों की दृढ़ता, रक्त व शुक्र वृद्धि, हृदय व फुफ्फुस को ताकत देने वाले उत्तेजक।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अंगूरासव	A. B. C. D. (डी अधिक)	वही गुण जो द्राक्षासव के हैं विशेषकर बल्य व रक्तवर्द्धक।
उशीरासव	B.(अधिक)A.C D. साधारण	मस्तिष्क की शक्ति बढ़ाना, नसोंको ताकत देना, स्मृति वर्द्धक.उन्माद,अपस्मार,मूर्च्छा इत्यादि में उपयुक्त शरीर की मांसपेशियों को सुन्दर बनाना।
कुमार्यासव	A. B. C. D. E. चिन्हित अधिक	पोषण संस्थान को बलदायक अतः गुल्म, अग्निमांद्य इत्यादि उदर रोग हर, रक्तवर्द्धक, वेदनाहर, हृद्य, नींद लाने वाली, पेशी दार्ढ्यकर।
अमृतारिष्ट	A.B. C.	वेदनाहर, तापहर, विषहर अतः ज्वर, ताप, अग्निमांद्य को हरने वाला।
दशमूलारिष्ट	A. B. C.	वेदना हर, ताप वर्द्धक,उत्तेजक, हृदय,फुफ्फुस, व पोषण-संस्थान का शक्तिदायक, नाड़ी उत्तेजक इत्यादि।

इस तरह कई आसवारिष्टों पर अन्वेषण होचुका है, जिनके विषय में स्थानाभाव से यहाँ नहीं लिखा जासका है।

हमारे आसवारिष्टों की शक्ति विशेष उपयुक्त होती है। वैद्यबन्धु भी सरलता से वर्तते हैं। इनमें मद्यांश विशेष न होने से यह न तो किसी आबकारी कानून के अन्दर ही आते हैं और न कोई विशेष उपद्रव ही पैदा करते हैं। अतः आजकल सर्वसाधारण भी इनका उपयोग आसानी से करने लगे हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

इनकी मात्रा-एक तोले से २॥ तोले तक की है सात्म्यावस्थामें ५ तो० । अधिक उपयोग से बहुत से उपद्रव होते हैं । जैसे-श्वास फूलना, जी-घबराना, दाह व मूर्छा तथा बेहोशी ।

इनके गुण—प्रधानतया हरएक आसवारिष्ट विकाशी, अग्निवर्द्धक, सुपाच्य व उत्तेजक होते हैं अतः शीघ्र अपना प्रभाव दिखलाते हैं ।

परीक्षा—साधारणतया हरएक आसव व अरिष्टों में संधानावधि तक उपयुक्त स्थान में रखने से रस, गंध, स्वाद का विकाश हो ही जाता है किन्तु विशेष विचार्य वस्तु यह है कि प्रारंभ के ७ दिनों तक उसके अन्दर की वस्तुओं में कुछ विशेष क्रिया नहीं होती । सप्ताहांत में भिन्न भिन्न वनस्पतियों के विशिष्ट अंश बहिर्गत होते हैं । जो संधित स्थान (भूसा, इत्यादि) या पृथ्वी की उष्णतापर निर्भर है । जब स्थान का तापमान ७५ से ८५ । शतांशमीटर से कम होता है तो रासायनिक क्रिया प्रारंभ हो जाती है, और विपचन (मृदु) प्रारंभ होता है । दूसरे व तीसरे सप्ताह में इसमें उष्णता के कारण एक वायव्य पदार्थ उठने प्रारंभ होजाते हैं । इस समय पात्र पर कान लगाकर सुना जावे तो सनसनाहट सुनाई देने लगती है । इससमय इसका तापमान ७५-८५ शतांश तक होजाता है । यह तापमान भीतर के द्रवपदार्थ का होता है । इस सप्ताह के अन्तमें इसमें यदि जलती हुई बत्ती का प्रवेश करें तो वह बुझ जायगी । चतुर्थ सप्ताह में यह क्रिया नष्ट होजाती है अब एक नया वायव्य और उत्पन्न होता है । इससमय यदि दीपक जलता प्रविष्ट किया जावे तो प्रकाश अधिक होगा । इस समय यह समझना

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

चाहिए कि अब इसके अंदर की प्रक्रिया ठीक हो रही है। आसव तयार होने जारहा है।

यह क्रिया जलाधिक्य होने से देर में होती है और कभी कभी नहीं भी होती। अतः आसव मधुर या उसमें प्रधान द्रव्यानुकूल स्वाद वाले न होकर के अम्ल होजाते हैं। सिरके का सा उसका स्वाद हो जाता है। इसे शुक्त की जगह इस्तेमाल कर सकते हैं। आसव या अरिष्ट के प्रतिनिधि स्वरूप देने पर ये अवगुण करते हैं।

परीक्षा में--वर्ण, गंध, स्वाद, तारल्य, आपेक्षिक गुरुत्व इत्यादि के ऊपर विशेष ध्यान देना चाहिए।

वर्ण--हरएक आसवों में धाय के फूल पड़ते हैं। यह लाल वर्ण या कषाय वर्ण की उत्पत्ति करते हैं। अतः अधिक आसवारिष्ट लाल वर्ण के होते हैं।

गंध--प्रक्षेपानुकूल तथा प्रधान द्रव्यानुकूल होती हैं। जैसे द्राक्षारिष्ट मधुरगंध तथा एला, तेजपत्रादि अनुकूल गंध वाला।

स्वाद--मधुर, कषाय व प्रधानद्रव्य के स्वाद के अनुकूल। यथा-द्राक्षासव मधुराधिक कषाय।

तारल्य-तरलता जलापेक्षा कम होती है, यह घने होजाते हैं।

आपेक्षिक गुरुत्व (Specific gravity) १०२५ से ४५ तक गुड़ वालों में घनता होने से गुरुत्व अधिक होता है तथा क्वथित होने से भी घनता वर्द्धित होती है अतः १०४०-४५ तक गुरुत्व होता है। खदिरारिष्ट का गुरुत्व १०६० अमृतारिष्ट का ११४५ द्राक्षारिष्ट का ११०० दशमूलासव का १०१२ से १०१५ इस तरह प्रत्येक आसव अरिष्ट की परीक्षा करके उसको उपयोग में लाने योग्य समझना चाहिए।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

नोट—सन्धान के पूर्व हमेशा पात्र की शुद्धि के ऊपर ध्यान देना चाहिये। पात्र हमेशा नया व चिकना रहे, प्राचीन पात्र में संधान करने से अधिक आसवारिष्ट शुक्त होजाते हैं। अतः प्राचीन पात्रों को उष्णोदकक्षार व चूर्ण के उपयोग से शुद्ध कर लेना चाहिए।

इस तरह बने हुये आसवादि विशेष उपयुक्त होते हैं व सर्वगुण सम्पन्न होते हैं तथा हम उनमें पूर्वकथित गुण पासकते हैं।

विश्वनाथ शास्त्री,
प्रिंसपिल—ललितहरिआयुर्वेदिक कालिज,
पीलीभीत।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सब प्रकार की छपाई का काम

वैद्य-प्रेस मुरादाबाद

को भेजिये

हमारे यहाँ छपाई का छोटा, बड़ा सब प्रकार का काम बड़ी सुन्दरता के साथ होता है, बढ़िया और शुद्ध छपाई का पूर्ण प्रबन्ध है। पुस्तक, सूचीपत्र, मासिकपत्र, चेक, हुण्डी, रसीद, लेबिल, बिलबुक, आर्डर-बुक, लेटर-पेपर कार्ड या कोई भी काम छपवाना हो तो सीधे हमारे पास भेजिये। हमारे काम से आप प्रसन्न हो जायँगे।

दाम बहुत कम लिया जाता है।

काम ठीक समय पर दिया जाता है।

लिखिए-व्यवस्थापक, वैद्य-प्रेस, मुरादाबाद।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

* श्री *

अकरादि-क्रम से

रोगानुसार प्रयोगों के नम्बरों की सूची

१ अग्निदग्ध-७५

२ अग्निमांद्य-] १८, २१, २४, ३७, ४२, ४८, ५६, ६४, ७८,
३ अजीर्ण-] ८४, ९१, ९६, ९७, १००, ११०, ११३, ११५, १२६, १२७, १४१, १४५, १४७, १५८, १५१, १५९, १६०, १६४, १६७, १७५, १८०, १८३, १८५, १९०, २०१, २०४, २०५, २०७, २१०, २१३, २१४, २१६, २१७, २१८, २१९, २२३, २२७, २२८, २३१, २३३, २३४, २३८, २४०, २४४, २४८, २५७, २६१, २६४, २६६, २७१, २७८, २८२, २८३, २८४, २८५, २८८, २९१, २९२, २९३, २९७, २९९, ३००, ३०२, ३०३, ३०४, ३०५, ३०७, ३०८, ३१७, ३२४, ३२६, ३२७, ३२८, ३३३, ३३५, ३४७, ३४८, ३४९, ३५०, ३५१, ३५२, ३५९, ३७२, ३८९, ३९३, ३९७, ३९९, ४१०, ४१४, ४१६, ४२४, ४३०, ४३७, ४४९, ४५०, ४५१, ४६६, ४७१, ४९१, ४९५, ५१४, ५२२, ५३२, ५३३, ५३८, ५५०, ५५१, ५५७, ५६२।

४ अण्डवृद्धि-२१३।

५ आतिसार-९, ४९, ५०, ५१, ५२, ६८, ९७, ११४, ११५, १२२, १४०, १४१, १४२, १६५, १७३, १७४, २२८, २४२, २४३, २४१, २५४, २५९, २६२, २६१, ३०८, ३१०, ३१४, ३१६, ३२८, ३४१, ३४८, ३६५, ३७४, ३८८, ४०९, ४२०, ४३०, ४३९, ४९०, ५२४।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

६ अन्त्रवृद्धि—२०५, २१३, ३५० ।

७ अनिद्रा—१४७, २९३, ३१०, ३४१, ५५३ ।

८ अपतंत्रक--२२५, ३६६ ।

९ अपतानक--४५८ ।

१० अपस्मार--४२, १४५, १४७, १६१, १७६, २२५, २६६, ३१०, ३५०, ३५६, ३६२, ४५०, ५०७, ५४४, ५५२ ।

११ अम्लपित्त--७८। ८४। ९६।११५ । २१७। २९३। ३१७। ३५४ ।

१२ अरुचि--९६।१०५।१५१। १२७। १४५। २०५। २०७। २१७ । २१८। २२८। २३२। २३३ । २३७ । २५७। २६५। २७४ । २७८। २८१। २८४ । २८५ । २९१ । २९५ । २९६ । ३०१ । ३०२ । ३०८ । ३१३ । ३१७ । ३३३ । ३३५ । ३४८ । ३५३। ३९९ । ४१० । ४५३ । ४५४ । ४५६ । ४६३ । ४६६ । ४७८ । ४९१ । ४८५ । ५१४ । ५५० । ५५५ ।

१३ अर्दित—४७८ ।

१४ अर्बुद—१७५ । ४७८ ।

१५ अर्श—१७ । १८ । १९ । २० । ३७ । ४२ । ४७ । ५८। ६९। ७२ । ७५ । ८० । १०१ । १०२ । १०५। १०६ । ११० । १२६। १३२ १४१ । १४६ । १४७ । १६४ । १६५ । १७७ । १८० । १८१ । १८२ । १८९। २०७ । २१८ । २२७ । २३४ । २४२ । २५१ । २५७ । २६३ । २७२ । २७८ । २७९ । २८१ । २८४ । २८५ । २९० । २९१ । २९२ । २९३ । २९६ । २९७ । ३०७ । ३२१ । ३४५ । ३४८ । ३५१ । ३५२ । ३५३ । ३७२ । ३८७ । ३९० । ३९७ । ४०३ । ४१४। ४१७ । ४१८ । ४४९ । ४५५ । ४५६ । ४५९ । ४६२। ४६३। ४६६। ४७२। ४७३। ५५५।

१६ अश्मरी—१ । १०९।१३५ । १६५ । २०५ । २०७ । २२२। २६३ । २८१ । २८४ । २९३ । ३५० । ३९० । ४९२ । ५५५ ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

१७ अष्ठीला—२२८ । ३३६ । ४५६ ।

१८ आतशक—१२ । १५४ । १८४ । २०० । २०२ । २०४ । २०५ । २२२ । ५१८ ।

१९ आध्मान—३०८ । ३३५ । ३६३ । ४४९ । ४७८ । ५१४ । ५५० । ५५७ ।

२० आमवात—७१ । १३२ । १६४ । १७५ । २५६ । २९३ । २९५ । ३६० । ३९१ । ४४९ । ४५० । ४७८ । ५५२ । ५५३ ।

२१ इन्फ्लयुएञ्जा—२६६ ।

२२ उदरविकार—८ । १० । १८ । १९ । २० । २१ । ३३ । ३७ । ५० । ६३ । ६५ । ६६ । ७७ ७८ । ८६ । ९४ । १०५ । ११० । ११४ । १३१ । १४५ । १४७ । १४८ । १४९ । १५१ । १५३ । १५६ । १५७ । १५८ । १५९ । १६४ । १६५ । १७५ । १८१ । १९० । १९३ । २०७ । २१३ । २१८ । २२८ । २२९ । २३० । २३८ । २४२ । २४६ । २४९ । २७० । २७३ । २७७ । २८१ । २८२ । २८३ । २८४ । २९२ । २९६ । ३०१ । ३०२ । ३०७ । ३१७ । ३२४ । ३२७ । ३३६ । ३४८ । ३४९ । ३५० । ३५२ । ३५३ । ३५४ । ३६६ । ४१६ । ४१७ । ४१८ । ४४८ । ४५३ । ४५६ । ५१३ । ५३८ । ५५१ । ५५५ । ५५७ । ५६० । ५६१ ।

२३ उदर्द—३५० ।

२४ उदावर्त्त—२१ । ६३ । १४५ । १४६ । १४८ । १५९ । २७९ । २८५ । २९१ । ३०७ । ३६५ । ३७२ ।

२५ उन्माद—१२६ । १६१ । १७९ । २२५ । २२६ । ३१० । ३४१ । ३९६ । ४४४ । ४५० । ५०७ । ५२७ ।

२६ उपदंश—१४ । ७२ । ७४ । ८५ । १३० । १३२ । १७१ । २२३ । २९३ । ३१९ । ३५९ । ३६४ । ३७७ । ३७८ । ३९४ । ४२२ । ४४१ । ४४२ । ४४३ । ५१० । ५२८ । ५२९ । ५४९ ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

२७ उरुस्तंभ—१८१ । १९० । ४९२ ।

२८ उरःक्षत—२८७ । २९६ । ३०६ । ४१३ । ४१९ । ४८५ । ४८६।

२९ कंठरोग—९१ । २५७ । ३०६ । ३०७ । ४१९ । ४८५ ।

३० कंठमाला—५९ । १२२ । १७५ । १८१ । १८९ । ४७३ । ४९२ । ५०९ ।

३१ कफविकार—३१९ । ६४ । ७० । १४८।१६४ । १६८ । १७४ । २५७ । २६३ । २६४ । २६५ । २८२ । २८३ । २९० । ३०१ । ३०३ । ३०६ । ३३२ । ३६१ । ३६४ । ३६८ । ३९३ । ४०३ । ४०४ । ४०८ । ४२५ । ४३८ । ४४८ । ४६५ । ४८२ ।

३२ कर्णरोग—५२ । ४०७ । ४१८ ।

३३ कामला—१९ । ६८ । ९७ । १४६ । १६६ । १७७ । १९० । २०५ । २१३ । २३७ । २८४ । २९५ । २९७ । ३०७ । ३१३ । ३३६ । ३७२ । ३८७ । ४०३ । ४१७ । ४३३ । ४५३ । ४५६ । ४६६ । ४६७ ।

३४ कामोत्तेजक—५६ । ५७ । ७९ । ३१६ । ३१८ । ३३७ । ३४१ । ४०० । ४२८ । ४६५ ।

३५ कास—७ । २१ । २९ । ३० । ३४ । ३५ । ४७ । ४९। ५०। ५२ । ७० । ८० । ८५ । ९१ । ९५ । ९८ । १०१। १०३ । १०४ । १०५। १०६ । १०७ । ११३ । १२७ । १३८ । १४७ । १४८ । १६५ । १६८। १७० । १७५ । १७९ । १९० । २०५ । २१० । २१४ । २६८ । २६९। २७३ । २७४। २८१ । २८४ । २८७ । २९४ । २९५ । २९७ । २९९ । ३००। ३०१ । ३०२ । ३०३ । ३०६ । ३१० । ३१३ । ३४१ । ३४४ । ३५०। ३५३ । ३५६ । ३६१ । ३६७ । ३६८ । ३७२ । ३७४ । ३७५ । ४००। ४०३ । ४१० । ४१३ । ४१५ । ४१७ । ४१९ । ४३५ । ४३६ । ४५०।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

४६६ । ४६९ । ४७७ । ४७८ । ४८३ । ४८४ । ४८५ । ४८७ । ४८८
४८९ । ५०६ । ५२२ । ५४८ । ५५५ ।

३६ कुष्ठ—१४ । १९ । २० । २२ । ४७ । ७३ । ८० । १०१ । १०२ । १०६ । १२१ । १६३ । १६६ । १७१ । १७२ । १७५ । १८१ । १८२ । १९० । २०५ । २०७ । २७४ । २८१ । २८४ । २९० । २९२ । २९३ । ३०७ । ३१९ । ३४५ । ३४९ । ३५० । ३५३ । ३५७ । ३६१ । ३७४ । ३७७ । ३७९ । ४०१ । ४०२ । ४०३ । ४०८ । ४१२ । ४१४ । ४१५ । ४४८ । ४४९ । ४५६ । ४६२ । ४६६ । ४७१ । ४७३ । ४७८ । ५३० । ५५५ ।

३७ कोष्ठबद्धता—४८ । ६३ । ७० । ७१ । ७३ । ८६ । १०५ । १३४ । १९७ । २१२ । २१४ । २१६ । २२८ । २३० । २३१ । २४० । २४९ । २६५ । २७५ । २७६ । २७८ । २९७ । ३५३ । ३६३ । ३६६ । ४५२ । ४७७ । ५३८ । ५४५ । ५४६ ।

३८ क्रिमि—१९ । ७१ । ८० । १११ । १२२ । १४१ । १४७ । १७५ । १७९ । १८१ । १८२ । १८६ । १९० । २६६ । २७९ । २८६ । २९२ । २९५ । २९६ । ३०६ । ३०७ । ३४१ । ३४५ । ३४९ । ४०३ । ४१५ । ४४९ । ४९२ । ४९३ ।

३९ खुजली (कंडु)—९८ । १८३ ।

४० गण्डमाला—देखिये कंठमाला ।

४१ गर्भस्राव—७५ । ३३० ।

४२ गर्भाशयविकार—१११ । २२७ । २५३ । ३०७ । ५०८ ।

४३ गलगण्ड—

४४ गलशुण्डी—५४८ ।

४५ गुल्म—१९ । २० । २१ । ३३ । ६३ । ६५ । ७१ । १०५ ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

१४६ । १४७ । १४८ । १५९ । १६५ । १७५ । १७७।१८१ । १९३। २१३ ।
२१७ । २२८ । २२९ । २७२ । २७७ । २९२ । २९६ । ३०७ । ३३५ ।
३३६ । ३४८ । ३५० । ३५१ । ३५२ । ३५३ । ३५४ । ३५६ । ३६५ ।
३६६ । ३६७ । ३६८ । ३७२ । ४३२ । ४४७ । ४४९ । ४५४ । ४५६ ।
४६६ । ४७१ । ४७८ । ५०० । ५३८ ।

४६ ग्रन्थि—१९ । १५० । १७५ । १८१ । २९६ ।

४७ ग्रहणीविकार—११ । ६९ । ७२ । ८४ । १०५ । ११३ ।
१४१ । १४२ । १४६ । १४७ । १६४ । १६५ । १७७ । १८० । १८१ ।
२०१ । २१० । २१६ । २१८ । २३७ । २४२ । २४७ । २६१ । २७८ ।
२७९ । २८४ । २८५ । २९० । २९१ । २९२ । २९३ । २९७ । ३०७ ।
३१० । ३१४ । ३४७ । ३४९ । ३५३ । ३७२ । ३९० । ३९७ । ४०८ ।
४०९ । ४१४ । ४१७ । ४१८ । ४२४ । ४३० । ४३१ । ४५६ । ४५९ ।
४६२ । ४६३ । ४६६ । ४९१ ।

४८ चर्मरोग—१२ । १४ । २२ । ७२ । १२२ । १७१ । २१९ ।
२९३ । ३१९ । ३४५ । ३५३ । ३७९ । ३९६ । ४७३ । ५३० । ५४९ ।

४९ जलोदर—७१ । ९७ । १२० । १४५ । १४८ । १६८ । २०७ ।
२३४ । २३८ । २४९ । २७५ ।

५० जहरबाद—१२० । २२८ ।

५१ ज्वर—१० । १९ । २२ । २३ । २५ । २६ । ३७ । ४६ । ७१ ।
७५ । ७६ । ८० । ८५ । ९४ । १०० । १०१ । १०८ । १११ । १२६ ।
१३३ । १३४ । १४१ । १४२ । १५१ । १६७ । १७९ । २१५ । २१९ ।
२२० । २४४ । २४५ । २५० । २६४ । २६६ । २६९ । २७० । २७२ ।
२७३ । २८७ । २८९ । २९२ । २९४ । २९५ । २९६ । ३०२ । ३०३ ।
३०७ । ३०८ । ३०९ । ३१० । ३१३ । ३१५ । ३१९ । ३२० । ३२३ ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

३३३ । ३३६ । ३४५ । ३५० । ३५४ । ३५९ । ३६१ । ३६३ । ३९९ । ४३३ । ४५४ । ४५५ । ४७४ । ४७६ । ४८२ । ४९४ । ५१५ । ५२४ । ५३२ । ५३३ । ५३४ । ५३५ । ५३६ ।

५२ तृष्णा—३८९ । ४९७ ।

५३ दद्रु—५९ । ६७ । १८३ ।

५४ दन्तविकार—२४ । ५२ । ५६ । २५२ ।

५५ दाह—२३ । १२२ । १३० । १३१ । १७८ । १९४ । २०२ । २६५ । २८७ । ३६१ । ३८९ । ५३३ ।

५६ धनुस्तंभ—४९० ।

५७ नपुंसकत्व—२३ । ४२ । १२७ । २०७ । २०९ । २९९ । ३०३ । ३१० । ३१६ । ३१८ ।

५८ नाड़ीव्रण (नासूर)—५९ । ८५ । ३५० । ४७३ ।

५९ निमोनिया--७ । ९३ । १२७ । ३०६ । ४२७ । ४७६ ।

६० नेत्ररोग--३०७ । ३२९ । ३५९ । ४०० ।

६१ पक्षाघात--४७८ । ५५३ ।

६२ पाण्डु--२० । ६८ । ७२ । ८० । १०५ । १३१ । १४६ । १४८ । १६४ । १६५ । १६६ । १७५ । १७६ । १७७ । १८१ । २०० । २०५ । २०७ । २१८ । २३७ । २५५ । २६१ । २७२ । २७४ । २७७ । २७८ । २७९ । २८१ । २८२ । २८४ । २८५ । २९० । २९१ । २९२ । २९६ । २९७ । ३०१ । ३०७ । ३१३ । ३३३ । ३३६ । ३४८ । ३४९ । ३५० । ३५३ । ३५७ । ३७२ । ३९१ । ४०३ । ४१४ । ४१७ । ४१८ । ४४९ । ४५३ । ४५५ । ४५६ । ४५९ । ४६२ । ४६३ । ४६६ । ४६७ । ४६८ । ४६९ । ४७१ । ४७८ । ५५५ ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

६३ पानात्यय--५१७।

६४ पित्तविकार--१३१, १६२, १६४, १७५, १७८, २४२, ३१५, ३३०, ३३१, ४०८, ४३४, ४४८, ५२६ ।

६५ प्रतिश्याय--१, १६८, २१२, २१३, २२४, २८५, ४१३, ४७६, ४७७, ४६६ ।

६६ प्रत्यष्ठीला--४६२।

६७ प्रदर—३७, ४६, ८०, ८८, ८६, १२१, १३०, १३५, १४१, १६२, १६६, १६४, २०३, २४२, २५१, २५४, २८१, २८४, ३१२, ३३३, ३३४, ३७३, ४२०, ४४५ ।

६८ प्रमेह—१५, २०, ३७, ४७, ५२, ६०, ६३, ६६, ७२, ८०, ८५, ६१, ६२, १०१, १०२, १०६, ११६, १२७, १४५, १६३, १६४, १६५, १६६, १७६, १७७, १८०, १८१, १८२, १८४, १८६, १६०, १६८, २०२, २०३, २०५, २०७, २१३, २२२, २२३, २२७, २३५, २४२, २५१, २८१, २८४, २७६, २६०, २६३, २६६, ३०१, ३०३, ३११, ६४६, ३४५, ३५३, ३५७, ३५६, ३७४, ४००, ४०८, ४११, ४४०, ४४७, ४४८, ४५८, ४६२, ४६३, ४७१, ४७२, ४७३, ४६२, ५२८, ५५४, ५५५ ।

६९ प्रसूतरोग—१११, १२८, १२६, १३२, १३३, १७६, २४७, २४८, २६७, २८४, ३०७, ३४१, ३६२, ३६३, ४६१, ५३४ ।

७० प्लीहा—८, १६, २०, २१, ३३, ६५, ६६, ७१, ८७, ६७, १००, ११०, १११, १२६, १३१, १४८, १४६, १५०, १५१, १५२, १५५, १५६, १५६, १६०, १६४, १७५, १८१, १८७, १६०, १६३, २१८, २२८, २२६, २३२, २३७, २३८, २४०, २४६, २७४, २६२,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

३२४ । ३२५ । ३३२ । ३३५ । ३३६ । ३४९ । ३५० । ३५२ । ३५३ । ३५४ । ३६१ । ३६६ । ३६७ । ३६८ । ३६९ । ३७० । ३७२ । ४१८ । ४३२ । ४३६ । ४५३ । ४५४ । ४५५ । ४५६ । ४६८ । ४७१ । ४७८ । ५३८ । ५६० ।

७१ प्लेग—४६ । ९३ ।

७२ फुफ्फुस विकार—३५ । ४९ ।

७३ बलवर्धक—४ । ५ । ६ । १५ । १९ । ४४ । ४५ । ५७ । ५८ । १०३ । १३४ । १३८ । १३९ । १४५ । १६५ । १७६ । १८४ । १८५ । १८९ । २०४ । २१६ । २२३ । २३७ । २५७ । २६० । २६१ । २६३ । २६४ । २८१ । २८४ । २८८ । २९६ । २९७ । २९८ । २९९ । ३०१ । ३०२ । ३०३ । ३०७ । ३०८ । ३१८ । ३२१ । ३२९ । ३४१ । ३४६ । ३४८ । ३५० । ३५३ । २५८ । ३५९ । ३६१ । ३७६ । ३९७ । ३९८ । ४०० । ४२१ । ४२३ । ४२८ । ४२९ । ४४६ । ४४७ । ४७० । ४७९ । ४९६ । ५०४ । ५०८ । ५२७ । ५४३ । ५४७ । ५५५ ।

७४—वलिपालित नाशक—१०५ । १६६ । २११ । ३९९ ४०० । ४४६ ।

७५ वहुमूत्र—८८ । १०९ । ११९ । २३५ । २८६ । २९३ । ४७२ । ४४६ ।

७६ बालरोग—९ । १० । २७ । २८ । ४२ । ४५ । ९७ । ९९ । १०० । १०६ । १०७ । १३७ । १४४ । १४६ । १४७ । १४८ । १६६ । १९४ । १९६ । २२७ । २५३ । २६८ । ३०८ । ३१४ । ३३७ । ३८० । ३८१ । ३८२ । ३८३ । ३८४ । ३८५ । ३८६ । ४३३ । ४५२ । ५११ । ५२७ । ५३७ । ५५६ ।

७७ बुद्धिवर्धक—१७ । २३ । ४४ । १३५ । २९९ । ३२९ । ३९५ । ३९८ । ५२७ ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

७८ भगंदर—४७ । ५९ । ८५ । १०१ । १०२ । १०६ । १६४ । १८० । १८१ । १८२ । २३४ । २८१ । २८४ । २९६ । ३५३ । ३५६ । ४१७ । ४१८ । ४४८ । ४५४ । ४६६ । ४७३ । ४७८ । ४९२ । ५२८ । ५५५ ।

७९ भ्रम—१६१ । १७८ । २७४ । ३५३ । ४९५ । ५०५ ।

८० मधुमेह—१२। २२। ३६ । ५० । ६० । १०९ । ११९ । १२७ । १३५ । १९१ । १९२ । १९७ । २१० । २३५ । २३६ । २४१ । २४२ । २६३ । ३३९ । ३४० । ३८७ । ४०५ । ४०६ । ५५४ । ५५५ ।

८१ मसूरिका (चेचक)—७५ । ८५ । ९८ । १२४ । ३०६ ।

८२ मस्तिष्क विकार—२३ । ३६। ४२ । ४३ । १६१ । २२५ । २८३ । ३९५ ।

८३ मानसिक रोग—२८३ ।

८४ मासिकधर्म विकार—४३८। ४७२ । ५५३ ।

८५ मुखरोग—५६ । ४३८ ।

८६ मूत्रकृच्छ्रादिमूत्रविकार—१ । ५० । ६९ । ७५ । ९१ । ९८ । ११४ । १३० । १३५ । १३६ । १६२ । १६५ । १६६ । १६८ । १९७ । १९८ । २०२ । २०४ । २०५ । २२२ । २४२ । २५१ । २८१ । २८३ । २८४ । २९३ । २९७ । ३०१ । ३३१ । ३७३ । ३९० । ४४० । ४६२ । ४६५ । ४७१ । ४७२ । ५५३ । ५५५ ।

८७ मूर्छा—४२ । ४५ । १३५ । १३८ । १६१ । १७८ । ३५३ ।

८८ मेदोरोग-७५ । १६३ । १६ । १८० । २४० । २७३ । ३५७ । ४१८ । ४७१ ।

८९ यकृत विकार—२१। २५ । ३३ । ६६ । ७१ । ९७ । १११ ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

१२६ । १३१ । १३४ । १४८ । १४९ । १५० । १५१ । १५२ । १५९ । १६० । २१३ । २१६ । २२८ । २३२ । २३७ । २४० २४६ । ३२४ । ३३५ । ३३६ । ३४८ । ३५४ । ३६१ । ३६६ । ३६९ । ४३२ । ४३६ । ४५७ । ४६६ । ४६८ । ४९५ । ५३८ । ५६० ।

९० रक्तपित्त—३७ । ५० । ८० । १०३ । १२१ । १३० । १६४ । १६६ । २०७ । २४४ । २८२ । २८७ । २९० । २९६ । ३०० । ३०७ । ३२८ । ३३१ । ४०८ । ४१५ । ४२५ । ४३१ । ४७२ । ४८५ । ४८६ । ४८९ ।

९१ रक्तविकार—१२ । १३ । १४ । १७ । ६१ । ७३ । ७४ । ८१ । ८२ । ९५ । १२२ । १६४ । १६६ । १७२ । १८३ । २२१ । २२२ । २२३ । २२७ । २५५ । २७१ । २९३ । ३०२ । ३१९ । ३२१ । ३४५ । ३५६ । ३५९ । ३६१ । ३६४ । ३६५ । ३६८ । ३७७ । ३७८ । ३९४ । ३९७ । ३९९ । ४०१ । ४०२ । ४१५ । ४२२ । ४३७ । ४४० । ४४१ ४४२ । ४४३ । ४५४ । ४७८ । ४९२ । ५२८ । ५२९ । ५३१ । ५४९ । ५५३ ।

९२ रक्ताल्पता—१३१ । २०० । २३७ । २८८ । ३०५ ४४४ । ४६८ ।

९३ लू (आतपज्वर)—८० । ११८ । २०२ । ३१५ । ४३४ ।

९४ वन्ध्यादोष—१२ । ९४ । १२१ । २८१ । २८४ । ४०० । ४७८ ।

९५ वमन—२८१ । २८४ । २९२ । २९७ । ३२८ । ३८९ । ४५३ । ४७८ । ५५५ ।

९६ वाजीकरण—४ । ५ । ६ । १८८ । २०७ । २०८ । २०९ । २१० । २२२ । २४३ । २९९ । ३०१ । ३१६ । ३१८ । ३४१ । ३५९ । ४४७ । ४७९ ।

९७ वातपित्त--२९६ ।

९८ वातरक्त-१४ । २२ । १७१ । १८१ । २१३ । ३१३ । ३७७ । ५२८ ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

९९ वातविकार--१, ३१, ४२, ४५, ५७, ६८, ८७, १०८, १११, १२५, १२६, १३५, १४६, १२७, १४७, १६४, १६६, १६७, १८२, २०७, २२२, २३३, २४४, २४५, २७१, २८१, २८३, २८४, २८३, २८४, २८७, ३०२, ३३२, ३५३, ३६१, ३७६, ४१०, ४१३, ४२०, ४२८, ४३८, ४४८, ४५०, ४५१, ४८०, ४८१, ५०२, ५३८, ५४४, ५५३, ५५५, ५५८।

१०० वायगोला--११०, ३४८।

१०१ विद्राधि—३५०, ४७८, ४८२।

१०२ विशूचिका--२४, ३२, ५०, ५१, ५२, ५३, ५४, ५५, ७५, ११३, ११४, ११५, ११६, ११७, १७६, १८३, २१०, २२८, २४३, २४८, २६२, २८०, ३२७, ३३७, ३३८, ४२४, ४२६, ४२७, ४२८, ४८०, ४८७, ४८८, ५०३, ५०५, ५४०, ५५१।

१०३ विषविकार—४८, ११४, १३२, २८२, ४५०, ५०८।

१०४ विसर्प—२२, ८५, २८०, ३४५, ५२८।

१०५ वीर्यविकार—२३, ४२, ५७, ६४, ८८, ८८, ८२, १००, १२६, १३८, १४३, १४८, १६२, १६६, १७८, १८८, १८७, २०४, २०५, २०८, २११, २२६, २५१, २८१, ३५०, ४५८, ५४४।

१०६ वेदनाशामक—३०८, ३१०, ३४१, ३४४, ३८२।

१०७ वृक्क विकार—८८, २५२।

१०८ वृश्चिक विषहर—४८८।

१०९ व्रण—११, १२, ५८, ८५, ३०७, ३७७, ३७८, ४७३, ५०१, ५४८।

११० शीतपित्त—२२, ८५, ८८, १०८, १८४, ५१२।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

१११ शुक्रमेह (सुजाक)—१८४ । १९४ । २०४ ।

११२ शूल—२१ । २४ । ३३ । ५० । ६५ । ७१ । ७८ । ८३ । ८४ । ९५ । १०० । १११ । ११३ । ११५ । १२६ । १२८ । १४५ । १४७ । १५० । १५८ । १५९ । १७९ । २२८ । २२९ । २३२ । २४३ । २४८ । २८१ । २८४ । ३१० । ३२४ । ३३५ । ४२७ । ४३० । ४३२ । ४४८ । ४५३ । ४७८ । ५०२ । ५०५ । ५१३ । ५३२ । ५३८ । ५३९ । ५४१ । ५५५ । ५५७ । ५५८ ।

११३ शोथ—११ । १९ । २० । ३७ । ४९ । ५९ । ८० । ९७ । १०२ । १०९ । १०६ । १४८ । १५० । १५९ । १६२ । १६५ । १७६ । १७७ । १८१ । १८२ । १९० । १९८ । २१६ । २१८ । २५७ । २७३ । २७७ । २८१ । २९२ । २९५ । २९६ । ३३३ ! ३३६ । ३४८ । ३४९ ३५३ । ३५४ । ३५५ । ३५६ । ३५७ । ३६६ । ३८७ । ३९० । ४०३ ४१४ । ४५६ । ४६६ । ४७१ । ४७३ । ४७४ । ४८७ । ५१६ । ५३९ ५४८ । ५५८ ।

११४ श्लीपद (फीलपांव—१८९ ।

११५श्वास—७ । १६ । २१ । २९ । ३० । ३४ । ३५ । ४७ । ५० । ५२ । ६२ । ७० । ८५ । ९० । ९८ । १०१ । १०२ । १०३ । १०४ १०६ । १०७ । ११३ । १३७ । १४६ । १४७ । १४८ । १६५ । १६८ । १७० । १९० । २०५ । २१० । २१४ । २३८ । २७२ । २८२ । २८४ । २९४ । २९७ । ३०० । ३०१ । ३०२ । ३०६ । ३१० । ३१३ । ३२२ । ३४४ । ३५३ । ३६१ । ३७४ । ३७५ । ३९१ । ३९२ । ४०३ । ४१० । ४१३ । ४१७ । ४१९ । ४५० । ४५४ । ४६६ । ४६९ । ४७८ । ४८२ । ४८३ । ४८४ । ४८५ । ४८६ । ४८७ । ४८९ । ५१९ । ५२० । ५२१ । ५२२ । ९५२ । ५५३ । ५५५ ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

११६ श्वासमार्ग के विकार—३०९ । ३९३ । ४३८ । ४६५ । ४७५ ।

११७ सान्निपात—५२३ ।

११८ सर्पविष—५२५ ।

११९ सर्वरोगनाशक—११८ ।

१२० सिरोरोग—९४ । १७६ । २८८ । ३०५ । ३०७ । ३५९ । ३७४ । ४९१ । ४९५ ।

१२१ सोमरोग—४७३ ।

१२२ स्तन्यविकार—३५० ।

१२३ स्तम्भक—५६ । ५७ । ७९ । १८८ । २०७ । २५१ । २७१ । ३०१ । ३०९ । ३१६ । ३४१ । ३५९ । ४२८ । ४७३ । ४७९ । ५४२ । ५५२ ।

१२४ स्त्रीरोग—२ । ३७ । ३८ । ३९ । ४० । ४१ । ८६ । १११ । १२१ । १२६ । १२८ । १२९ । १३१ । १३५ । १४७ । १४८ । २२६ । २३५ । २८४ । ४३८ । ४४५ । ४६० । ४६१ । ४६२ । ४६३ । ४६४ । ४७२ । ५०४ । ५३७ । ५५३ ।

१२५ स्नायुक (नहरुआ)—१७९ ।

१२६ स्मृतिवर्धक—३९६ । ३९७ । ३९८ । ४०० । ४२८ । ४७० । ५२७ ।

१२७ स्वरविकार—३९६ । ४१३ । ५२७

१२८ स्वप्नदोष—४७३ ।

१२९ हनुस्तम्भ—४१२ ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

१३० हलीमक—३३६। ३५३। ४६६। ४७८।

१३१ हिक्का—१३८। १४८। १८२। २९५। ३१३। ३५३।
४१७। ४२६। ४७८।

१३२ हिस्टीरिया (योषापस्मार)—५। १२३। १२५। १३५।
१६१। २०६। २२४। २३९। २८३। ३५३। ४९१। ५०७। ५५३।

१३३ हृद्रोग—१९। ३४। ३५। १०५। १२५। १३१। १४३।
१६५। १७५। १७६। १९५। १९९। २०४। २२७। २२८। २६०।
२७२। २७४। २८२। २८३। २९१। २९२। २९६। ३१३। ३४४।
३४६। ३४९। ३५३। ३७२। ४१४। ४२५। ४४०। ४५३। ४५४।
४५६। ४५९। ४६६। ४७१। ४७५। ४८३। ५२७।

१३४ क्षय (राजयक्ष्मा)—७। ११। २३। २५। ३५। ४२।
४३। ४७। ४९। ८९। १०१। १०२। १४२। १४५। १४६ १४७।
१४८। १६४। १६५। १६८। १७६। १७७। १८१। १८४। २११।
२१३। २१४। २९४। २८७। २९२। २९५। २९६। २९८। २९९।
३००। ३०१। ३०३। ३०६। ३४६। ३४८। ३५०। ३५६। ३७४।
३९१। ४००। ४१३। ४१५। ४१८। ४१९। ४४९। ४७६। ४८२।
४८४। ४८९। ५०६। ५२२। ५३७। ५५५। ५५९।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सूचना ।

यथाविधि बने हुए सब प्रकार के आसव और अरिष्ट हमारे यहाँ से सुलभ मूल्य में प्राप्त होसकते हैं।

वैद्य-शंकरलाल हरिशंकर

आयुर्वेदोद्धारक औषधालय

मुरादाबाद ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

श्रीः

बृहदासवारिष्ट संग्रह ।

(आसवारिष्ट-रत्नमाला)

वैद्यं व्याधि विषाकुलो, धनपति दारिद्र्यदुष्टोजनः,
स्वाद्यञ्चक्षुधितो हिमाम्बु तृषितच्छायातरुतापितः ।
शोकार्त्त स्वजनं वियोग विधुरोवत्सोयथामातरम्,
तद्वत तत् सततं स्मरामि परमं ब्रह्माभिधेयं महः ॥
ध्यात्वा हरिं गुरुचरणम् संशोध्य सर्वशास्त्रार्थं ।
ग्रथ्नाम्यासवारिष्टम्, अकारादिक्रमेणतु ॥
माला सर्वरसाला व्यालीव सर्व रोगाणाम् ।
कृष्णप्रसाद ग्रथितासेयं भवतुसुरम्यरत्नमाला ॥

१ अकरकराद्यासव--१ (स्वकृत) अश्मर्यादि मूत्र विकारे ।

विधि—अकरकरे का स्वरस अथवा अष्टमांस क्वाथ १२ सेर, और उत्तम मिश्री ५ सेर लेकर शुद्ध चिकने मटके में भरे, जब मिश्री घुलजाय तब उसमें गोखरू की जड, कैथ (कपित्थ) की जड़, अपामार्ग की जड़, पाषाणभेद, तुलसीपत्र, एरंड की जड़, मुलैठी, पपिल, कांस (तृण विषेष) की जड, निर्गुण्डी, लौंग, और सोंठ प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले मिला, विधि युक्त संधान कर लगभग १५ दिन एकान्त शुद्ध स्थान में रक्खे ◎ पश्चात् बोतलों में छानकर भर देवे ।

◎ संधान क्रिया एवं आसवारिष्टके विषय में विशष विवरण भूमिका में देखिये । संपादक-

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मात्रा—१ से २॥ तोळे तक ।

गुण—मूत्राश्मरी (पथरी) मूत्रकृच्छ, मूत्र में चूना जैसे पदार्थ का जाना आदि दूर हो कर प्रतिश्याय, शोथ और वात विकारों में लाभ होता है।

अकरकराद्यासव नं० २ देखिये आकारकरभासव ।

२—अखरोटारिष्ट—(स्वकृत) आर्तव प्रवर्त्तक ।

विधि—अखरोट फल के छिलकों का अष्टमांस क्वाथ कर और छानकर १ सेर क्वाथ में १ पाव गुड़ और १० तोळे शहद मिलाकर कांच की शीशी में भर रक्खे । १५ दिन बाद छानकर काम में लावे ।

मात्रा—२ से ४ तोले तक ।

गुण—स्त्रियों का मासिक स्राव विना किसी कष्ट के होजाता है, तथा कोष्ठबद्धता दूर होती है ।

३ अगस्त्यासव—(स्वकृत) कफ़ विकारें ।

विधि—लाल अगस्त (अगस्तिया) की जड़ की छाल का स्वरस १ सेर, गुड़, १ पाव और शहद १० तोले सब को एकत्र मिलाकर शुद्ध चिकनी मटकी में सन्धान कर रक्खे । १ मास के बाद छानकर शीशियों में भर कर रखदे ।

मात्रा--१ से २ तोळे तक शक्ति अनुसार । बालकों को ५ से १० बून्द तक देना चाहिये ।

गुण--कास श्वासादि कफ के सब विकारों को शीघ्र दूर करता है ।

४—अंगूरासव--नं०१ (स्वकृत) अपूर्व बलदायक; कामशक्ति वर्धक।

विधि—उत्तम मीठे अंगूर १॥ सेर, किसमिस १ पाव, कन्धारी मीठे अनार १ सेर,मुनक्का २ पाव, पिंडखजूर २ पाव, पिस्ते २ पाव,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

आमकी छाल १ पाव; धाय के फूल १ पाव, उत्तम शकर ११ सेर, शहद २। सेर और बादाम की गिरी २ पाव, सब को नवकुट कर शुद्ध चिकने घड़े में १ मन जल के साथ मिलावें, और उसमें इलायची, लौंग, दालचीनी, आमला, वायविंडग, जायफल, जावित्री, धनिया, मुलैठी, बीजवंद, सफ़ेद मुसली, कालीमुसली, असगंध, तालमखाना, शंखपुष्पी, गोखरू, कालीमिरच, श्वेतचन्दन; पत्रज, चीता, नागकशर कंकोल, नागरमोथा, और सौंफ प्रत्येक ४—४ तोळे,सबका महीन चूर्ण कर मिला देवें। मटकी का सन्धान कर १ मास तक बन्द रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भरदे।

मात्रा—१ से २ तोले तक।

गुण—शीतकाल में उचित मात्रानुसार सेवन करने से शरीर बलवान और पुष्ट होता है। कामशक्तिवर्धक और परम वाजीकरणीय है। और कोष्ठबद्धता नाशक है।

---

६ अंगूरासव—नं० २ बलवर्धक वाजीकरणीय।

(पं० बाबूरामजी शर्मा वैद्य)

विधि—लौंग, जायफल, जावित्री, नागकेशर, कंकोल, शीतलचीनी, पीपल, पीपलामूल, रेणुका, सफेद इलायची, अकरकरा, सोंठ, कालीमिरच, मुलैठी, असगंध, दालचीनी, शतावर, सफेद मुसली, उटंगन के बीज, और तेजपात ये प्रत्येक ३-३ तोले, बबूल की छाल एक छटांक, कचनार की छाल एक छटांक, छुहारे दो छटांक, सुपारी पूर्वी एक छटांक, पिस्ते एक छटांक, चिरौंजी दो छटांक, बादाम की गिरी दो छटांक, अंगूर पांच सेर, नासपाती २॥ सेर, सेव २॥ सेर,अनार २॥ सेर, संतरे २॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सेर, शहद २ सेर, केशर १ तोला, कस्तूरी ३ माशे, धायके फूल दो छटांक, खांड ४ सेर और जल २५ सेर ।

संधानावधि—१॥ मास ।

गुण—अति वाजीकरण, बल, क्षुधा, रक्त तथा मांस वर्धक, स्फूर्त्तिकारक, हृदय-बलवर्धक, प्रसन्नताकारक और वीर्यवर्धक है ।

(आसवारिष्ट संग्रह)

६—अंगूरासव—नं० ३ शक्तिवर्धक ।

(कविराज श्री पं० शशिकान्तजी मिश्र भिषगाचार्य)

विधि—अंगूर का रस ३ सेर, सन्तरे का रस २ सेर, अनार का रस २ सेर, नासपाती का रस २ सेर, इनको अलग रखे । और निम्नलिखित औषधियों का क्वाथ तैयार करे—

असगंध १ सेर, पिंडखजूर १ सेर, तथा जटामांसी, मूसली, सतावर, आध आध सेर, कीकड़ और बड़की छाल २-२ सेर और मुलेठी १ पाव इन को कूटकर २६ सेर जल में पकावे । जब ८ सेर शेष रहे, तब शीतल होने पर उसमें ४ सेर खांड, १ सेर शहद, तथा धाय के फूल, मीठा कूठ, चीता, सफेद तोदरी, श्वेतचन्दन, लाल बहमन, मीठाबच, बीजबंद, प्रत्येक का चूर्ण ५-५ तोले और त्रिजातक, त्रिकुटा तथा पंचकोल प्रत्येक औषधि का चूर्ण १०-१० तोल (नोट-प्रक्षेप द्रव्योंकी मात्रा अधिक है, प्रत्येक ४-४ तोले लेना ठीक होगा-सं०) मिला देवे और उक्त रसों को भी मिला पात्र का मुख बन्दकर, शीतकाल में १ मासतक और उष्णकाल में १५ दिन तक सुरक्षित रखे । पश्चात् छान कर काम में लावे ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

(मात्रा आदि उपर्युक्तानुसार)

७—अंगूरासव नं० ४—निमोनिया, यक्ष्मादि रोगोंपर।

विधि—अंगूरों का रस १६ सेर; गुड़ १२॥ सेर, धाय के फूल, आध सेर, तथा—कंकोल, लौंग; जायफल; कालीमिरच, असली नागकेसर, पीपल, चित्रक; पीपलामूल; दालचीनी; इलायची, तेजपात; वायविडंग, फूलप्रियंगु; काकड़ासिंगी, बासा और मुलैठी प्रत्येक का चूर्ण १॥-१॥ तोले, सब को एकत्र मिला; शुद्ध चिकने मटके में भर; उसमें कस्तूरी १ माशे, और केशर ३ माशे, दोनों की एक पोटली बना कर डाल देवे। पात्र का मुख बन्द कर जमीन में गाढ़ दे। १ मास या २२ दिन बाद छान कर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१। तो० से २॥ तोले तक। सबल एवं आरोग्य व्यक्ति के लिये २॥ तो० से ४ तो० तक।

गुण—निमोनिया; खांसी, श्वास, राजयक्ष्मा और उरःक्षत नाशक है।

यह प्रयोग 'हाड' नामक पुस्तक का है, जो कि सैंकड़ों वर्ष की पुरानी है। (जीवनसुधा)

अंगूरासव नं० ५—देखिये दाड़िमाद्यासव नं ३।

८—अञ्जीरासव—प्लीहा, उदर विकारे।

विधि—अंजीर ४० तोले, अंगूरी सिरका २ सेर, नमक १५ तोले, नौसादर, सुहागा, फटकरी, छोटी पीपल प्रत्येक ३-३तोले

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

और चूक १ तो० लेकर, प्रथम पीपल, नमक और खारों को महीन कूट कर एक मिट्टी की चिकनी हांडी में डाल कर सब दवाइयाँ एकत्र मिला देवे। अंजीर वैसे ही डाल दे। हांडी का मुख बन्द कर, गेंहू के ढेर में गाढ़ दे। १५ दिन के बाद छानकर शीशियों में भर रखे। अंजीरों को बीन कर अलग निकाल ले और सुखा कर चूर्ण कर लें। आसव के साथ ही इस अंजीर-चूर्ण का सेवन करे।

मात्रा—आसव १ तो० से २॥ तोले तक। और उक्त अंजीर चूर्ण २ माशे की मात्रा से सेवन करे।

गुण—प्लीहा, उदर विकार और निर्बलतानाशक है।

पथ्यापथ्य—मूंग; चावल; परबल, गाय या बकरी का दूध; आदि पदार्थ हितकर हैं। जल कम पीना चाहिये। तैल, धूम्रपान, रुधिर का निकालना, भारी पदार्थ खाना, दिन में सोना यह त्याग देने चाहिये।

(प्रयोग साहस्री)

अजूवारिष्ट—देखिये, पर्णबीजारिष्ट।

अडूसासव—देखिये—वासकासव।

९—अतिविषासव नं० १—(स्वकृत) ज्वरातिसार नाशक।

विधि—अतिविषा (अतीस), कुड़े की छाल, सोंठ, नागरमोथा और गिलोय प्रत्येक का चूर्ण ५-५ तोले लेकर, शुद्ध चिकने मटके में डाल, उसमें १५ सेर गुड़, आध सेर धाय के फूल और २६ सेर जल मिलाकर पात्र का मुख अच्छी तरह

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

बन्द कर, १ मास तक रखा रहने दे, पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रखदे ।

मात्रा--१ तो० से २॥ तोले तक । बालकों को ६ मासे से १ तो० तक ।

गुण--कफ एवं पित्त के विकार दूर होते हैं । अतिसार युक्त ज्वर में बहुत लाभ होता है । बालकों के लिये यह अमृत की समान है ।

---

१० अतिविषासव नं० २—ज्वर नाशक ।

विधि—अतीस का चूर्ण १ भाग और मद्य (६० प्रतिशत वाली) ५ भाग एकत्र मिला, बोतल में भर, मज़बूत कार्क लगा कर, ७ या १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे । बीच में हिलाते रहना चाहिए, पश्चात् फलालैन के कपड़े में छानकर शीशियों में भर कर रखले ।

मात्रा—३० बूंद से ६० बूंद तक ।

गुण—यह आमाशय के लिये बल्य है तथा आमाशय और आँतों के पित्त प्रकोप को शान्त करता है । ज्वर नाशक है । बालकों के वमन और अतिसार को शीघ्र शांत करता है ।

(औषधि-विज्ञान)

---

११ अतिविषासव नं० ३—व्रणपूरक, शोथ नाशक ।

(कविराज हरिश्चन्द्र आयुर्वेद भूषण)

विधि—२॥ तोले अतीस का चूर्ण चौगुने (१० तोले) नीबू के स्वरस में खरल करे, और उसमें दस गुनी (२५ तोले)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मैथीलेटेड स्प्रिट मिलाकर बोतल मे भर, अच्छी तरह बन्द करके रख देना चाहिए। इसका केवल बाह्य प्रयोग करे।

गुण—यह व्रणपूरक, शोथ और जलन नाशक अपूर्व टिंचर है।

(आयुर्वेद मार्तण्ड)

---

१२ अद्भुतासव नं० १—रक्त शोधक।

(श्री योगीराजजी आयुवदांळकार, अमृतसर)

विधि—कीकड़ वृक्ष का पंचाङ्ग ५ तोले लेकर, महीन पीस ले। तथा एक तरबूज में छिद्र कर, उसमें इसे भर देवे, छिद्र को उसी काटे हुये तरबूज के टुकड़े से बन्द कर दे। फिर मिट्टी लगा छेद को खूब जकड़ देवे। इस तरबूज को पुरानी रुई के ढेर में २२ दिन तक दवा रक्खे। फिर सावधानी से तरबूज को निकाल, उसमें से दवा निकाल ले, और छानकर बोतल में भर कर रखदे।

मात्रा—१ तोला, समभाग जल मिलाकर सेवन करे।

गुण—भारी जिरयान, आतशक, रक्तबिकार, मधुमेह, दुष्ट-व्रण (कारबंकल) के लिये यह अकसीर चीज़ है। यदि बंध्या को पुत्र जन्म के योग्य बनोना हो तो उक्त तरबूज में ८ माशे मुश्क और कपूर भर दे। अद्भुत लाभदायक है।

(धन्वन्तरि)

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

अद्भुतासव नं० २—देखो कालिन्दासव नं० १ और २।

* १३—अनन्तमूलासव नं० १—रक्त विकार नाशक।

विधि—अच्छे प्रकार परिपक्व हुई एवं नवीन अनंतमूल की जड़ लेकर, उसका जवकुट चूर्ण बनालें, वह १ भाग और मद्य (जिसमें ४० से ६० प्रतिशत मद्य और शेष जल हो) ४ भाग, दोनों को मिलाकर चीनी या कांच के पात्र में भर, मुख मुद्रा कर ७ दिन तक रक्खे, बीच २ में उस पात्र को हिलाते रहना चाहिये, जिससे सत्व का संत्रोलन ठीक २ होजाय। यदि शीत या वर्षा का मौसम हो तो पात्र को किंचित् उष्णता देना आवश्यक है। अवधि के पश्चात् इस मद्यासव को बनात या फलालेन की चलनी में छानकर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—युवावस्था वाले मनुष्यों को ४ से ८ मासे तक इसमें जल मिला कर सेवन करे।

गुण—अनेक प्रकार के रक्त विकारों तथा चर्म रोगों में इसके सेवन से लाभ होता है। इन रोगों में इसे यदि भूनिम्बासव, निम्बासव, या सारिवाद्यासव के साथ मिलाकर सेवन कराया जाय तो इसकी और भी गुण वृद्धि होती है।

(मद्यासव)

---

* इस मार्क के जितने आसव इस पुस्तक में संकलित किये गये हैं, वे सब विश्वनाथजी शास्त्री वैद्यराज, भास्कर आयुर्वेदिक फार्मेसी; देहली से प्रकाशित 'मद्यासव' नामक पुस्तिका के आधार पर लिखे गये हैं। ये सब 'मद्यासव' अर्थात् टिंक्चर्स हैं; जिनका प्रचार पाश्चात्य वैद्यक में बहुलता से पाया जाता है।

संपादक—

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अनन्तमूलाद्यासव नं० २ देखिये सारिबाद्यासव।

१४—अनन्तमूलाद्यारिष्ट नं० १—रक्तशोधक।

(श्री० पं० शालिग्रामजी देव शुक्ल वैद्यराज)

विधि—अनन्तमूल, उशबा मगरबी, खैर की छाल, गोरख॰ मुंडी; इन्द्रायन की जड़, प्रत्येक १-१ सेर, मजीठ, हरी गिलोय, उन्नाव (बीज निकाल कर), सरफोंका, चिरायता, सिरस की छाल, चोपचीनी और गुलाब के फूल ये प्रत्येक आध-आध सेर लेकर जवकुट कर, ६४सेर जलमें पकावे। १६सेर जल शेष रहने पर, छान कर, ठंडा होने पर, शुद्ध चिकने घड़े में भर; उसमें-२॥ सेर शहद, २॥ सेर गुड़, धाय के फूल ४० तोले; मुनक्का ४० तोले, इन्द्रायन की जड़ १० तो० तथा सौंफ; नीम के फूल, खैरसार, मेंहदी की पत्ती, उन्नाव (बीज रहित), कासनी और गुलबनफसा प्रत्येक २॥-२॥ तोले; सब को कूट पीस कर मिलादे। और पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर १ मासतक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छान कर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१। तो० से २॥ तोले तक। अनुपान-दूना ताजा जल (या उसबा, मुण्डी और खैर की छाल का भबके से निकाला हुआ अर्क) और ६ माशे असली शहद मिला कर सेवन करे।

गुण—रक्त विकार, कुष्ट; फोड़े, फुन्सी, दूषित रुधिर, वात॰ रक्त, उपदंश के चकत्ते आदि बीमारियों पर अकसीर है। यह आयुर्वेदीय सालसा बहुत ही प्रसिद्धता पाये हुए पेटेन्ट अंग्रेजी सालसों से कई गुना अधिक लाभप्रद है।

(धन्वन्तरि)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अनन्तमूलाद्यारिष्ट नं० २ देखिये सारिवाद्यरिष्ट ।

१५—अनन्नासासव—धातुदोष निवारक ।

(वैद्यराज पं० देवकरणजी बाजपेयी, वैद्यशास्त्री, कानपुर)

विधि—अनन्नास का २सेर रस लेकर शुद्ध चिकने घड़ेमें भर; उसमें १ सेर शहद, २० तोले धाय के फूल; इलायची का चूर्ण १ तोला और केशर ६ माशे, मिला, मुख मुद्रा कर धरती में गाढ़ देवे, या वैसे ही जमीन पर सुरक्षित करके २० दिन तक रक्खे। पश्चात् छान कर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—बलानुसार २॥ तोले तक।

गुण—प्रमेह आदि धातु दोष शीघ्र दूर होते हैं। और शरीर में बलवीर्य की वृद्धि होती है । स्त्री और पुरुष दोनों के लिये समान लाभप्रद है।

अपस्मारहरासव—देखिये स्वर्णासव नं० २।

१६ अपामार्गाद्यासव—श्वासविकारे ।

(श्री० वैद्यवर नोरातारामजी जालफ)

विधि—अपामार्ग की जड़ (अथवा पंचाङ्ग), अड्रूसे के (बासा) पत्ते, घृतकुमारी का गूदा (इसे डालने की विशेष जरूरत नहीं), केले के नरम पत्ते, जंगली बेरी की जड़ की छाल प्रत्येक ताज़े दो-दो सेर लेकर जवकुट कर ले। प्रथम गुड़ (देशी-पुराना) ४ सेर लेकर, ६ सेर जल घोल, शुद्ध चिकने मटके में भरे, पश्चात् उसमें उक्त द्रव्यों का कल्क मिला देवे।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अनन्तमूलाद्यासव नं० २ देखिये सारिबाद्यासव।

१४—अनन्तमूलाद्यारिष्ट नं० १—रक्तशोधक।

(श्री० पं० शालिग्रामजी देव शुक्ल वैद्यराज)

विधि—अनन्तमूल, उशवा मगरबी, खैर की छाल, गोरख- मुंडी; इन्द्रायन की जड़, प्रत्येक १-१ सेर, मजीठ, हरी गिलोय, उन्नाव (बीज निकाल कर), सरफोंका, चिरायता, सिरस की छाल, चोपचीनी और गुलाब के फूल ये प्रत्येक आध-आध सेर लेकर जवकुट कर, ६४सेर जलमें पकावे। १६सेर जल शेष रहने पर, छान कर, ठंडा होने पर, शुद्ध चिकने घड़े में भर; उसमें- २॥ सेर शहद, २॥ सेर गुड़, धाय के फूल ४० तोले; मुनक्का ४० तोले, इन्द्रायन की जड़ १० तो० तथा सौंफ; नीम के फूल, खैरसार, मेंहदी की पत्ती, उन्नाव (बीज रहित), कासनी और गुलबनपसा प्रत्येक २॥-२॥ तोले; सब को कूट पीस कर मिलादे। और पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर १ मासतक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छान कर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१। तो० से २॥ तोले तक। अनुपान-दूना ताजा जल (या उसवा, मुण्डी और खैर की छाल का भबके से निकाला हुआ अर्क) और ६ माशे असली शहद मिला कर सेवन करे।

गुण—रक्त विकार, कुष्ट; फोड़े, फुन्सी, दूषित रुधिर, वात- रक्त, उपदंश के चकत्ते आदि बीमारियों पर अकसीर है। यह आयुर्वेदीय सालसा बहुत ही प्रसिद्धता पाये हुए पेटेन्ट अंग्रेजी सालसों से कई गुना अधिक लाभप्रद है।

(धन्वन्तरि)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अनन्तमूलाद्यारिष्ट नं० २ देखिये सारिवाद्यरिष्ट ।

१५—अनन्नासासव—धातुदोष निवारक ।

(वैद्यराज पं० देवकरणजी बाजपेयी, वैद्यशास्त्री, कानपुर)

विधि—अनन्नास का २सेर रस लेकर शुद्ध चिकने घड़ेमें भर; उसमें १ सेर शहद, २० तोले धाय के फूल; इलायची का चूर्ण १ तोला और केशर ६ माशे, मिला, मुख मुद्रा कर धरती में गाड़ देवे, या वैसे ही जमीन पर सुरक्षित करके २० दिन तक रक्खे। पश्चात् छान कर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—बलानुसार २॥ तोले तक।

गुण—प्रमेह आदि धातु दोष शीघ्र दूर होते हैं। और शरीर में बलवीर्य की वृद्धि होती है । स्त्री और पुरुष दोनों के लिये समान लाभप्रद है।

अपस्मारहरासव—देखिये स्वर्णासव नं० २ ।

१६ अपामार्गाद्यासव—श्वासविकार ।

(श्री० वैद्यवर नोरातारामजी जालफ)

विधि—अपामार्ग की जड़ (अथवा पंचाङ्ग), अडूसे के (बासा) पत्ते, घृतकुमारी का गूदा (इसे डालने की विशेष जरूरत नहीं), केले के नरम पत्ते, जंगली बेरी की जड़ की छाल प्रत्येक ताज़े दो-दो सेर लेकर जवकुट कर ले। प्रथम गुड़ (देशी-पुराना) ४ सेर लेकर, ६ सेर जल घोल, शुद्ध चिकने मटके में भरे, पश्चात् उसमें उक्त द्रव्यों का कल्क मिला देवे।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

दूसरे दिन (२४ घंटे बाद) उसमें–२॥ तोले नौसादर, ५ तोले जवाखार, और १० तोले सज्जी मिला, पात्र का मुख बन्द कर रक्खे। ध्यान रहे यदि इसे बहुत तेज़ नं० १ बनाना हो तो ६ सेर जल काफ़ी है, अन्यथा १२ सेर जल मिलाने से नं० २ की होगी। मद्यांश उत्पन्न होजाने पर वारुणी यन्त्रद्वारा अर्क खींच लेवे।

मात्रा—नं० १–२ बूंद से ७ बूंद तक, और नं० २ की मात्रा १५ बूंद तक है।

गुण—श्वास पर अकसीर है। यह आसव बहुत तेज़ होने से नशा करता है, अतएव इसे पीने के ३ घंटे बाद बादाम और खसखस की ठंडाई जरूर पीनी चाहिये।

नोट–यदि अर्क न खींचना हो तो १५ दिन तक संधान कर रखने के बाद, मोटे कपड़े से छान बोतलों में बन्द कर रक्खे। इसे १ तोले तक की मात्रा से दे सकते हैं।

(धन्वन्तरि)

---

१७ अपामार्गारिष्ट—रक्तशोधक।

विधि—अपामार्ग का पंचाङ्ग ४०० तोले। (५ सेर) जवकुट कर, ४००० तोले (५० सेर) जल में पकावे। १२॥ सेर जल शेष रहने पर, उतार कर छान लेवे, पश्चात् शक्कर २॥ सेर, शहद २॥ सेर, धाय के फूल ५० तो०; इलायची, कालीमिरच, शीतलचीनी, छोटी पीपल, नागकेशर और तज प्रत्येक का ५–५ तोले महीन चूर्ण कर मिलावे। शुद्ध चिकनी मकटी में भर, मुख मुद्रा कर लगभग दो मास तक रक्खा रहने दे। पश्चात्

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

छान कर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—१। तोला से २॥ तोले तक। प्रातः और सायंकाल दोनों समय जल के साथ।

गुण—रक्तशोधक, मस्तिष्क की ऊष्मा, आखों की गर्मी और शरीर के किसी भी भाग से खून का गिरना बन्द होजाता है। दीमागी ताकत को बढ़ाता है। अर्शरोग (बवासीर) में जो रक्त गिरता है, उसमें यह विशेषरूप से लाभदायक है। बुद्धि को बढ़ाता है।

नोट—चिकित्सासार नामक ग्रन्थसे उद्धरण कर वैद्यराज पं० बालकृष्ण जी शर्म्मा (भूपाल) द्वारा प्रेषित इस प्रयोग को 'काकजंघारिष्ट' नाम से पुकारा गया है। किंतु इसमें काकजंघा बिल्कुल न होने से हमने इसका नाम 'अपामार्गारिष्ट' रख दिया है।

अपामार्गाद्यरिष्ट—देखिये, मयूरकाद्यरिष्ट।

अभयासव—देखिये, हरीतक्यासव।

* १८ अभयारिष्ट नं० १—अर्शादिविकार नाशक।

---

* अभयायास्तुलामेकां मृद्वीकाद्य तुलां तथा। विडंगस्य दश पलं मधूक कुसुमस्य च॥ चतुर्द्रोणे जले पक्त्वा द्रोणमेवावशेषयेत्। शीतीभूते रसे तस्मिन् पूते गुडतुलां क्षिपेत्॥ श्वदंष्ट्रा त्रिवृता धान्यं धातकी मिन्द्रवारुणीम्। चव्यं मधुरिकां शुण्ठीं दन्ती मोचरसं तथा॥ पलयुग्मंमितं सर्वं पात्रे महति मृण्मये। क्षिप्त्वा संरुध्य तत्पात्रं मासमात्रं निधापयेत्। ततो जातरसं ज्ञात्वा परिश्राव्यं रसं नयेत्॥ बलं कोष्ठञ्च वन्हिञ्च वीक्ष्य मात्रां प्रयोजयेत्। अर्शांसि नाशयेच्छीघ्रं तथाष्टावुदराणि च। वर्चोमूत्र विबन्धघ्नो वन्हिं सन्दीपयेत्परम्॥ —भै० रत्नावली।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विधि—हरड़ ५ सेर, दाख (मुनक्का) २॥ सेर, वायविडंग आध सेर और महुये के फूल आध सेर लेकर; जवकुट कर १ मन १२ सेर जल में २४ घंटे भीगने के बाद, मंदाग्नि पर क्वाथ विधि से पकावे। १३ सेर जल शेष रहने पर, शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें ५ सेर गुड़, तथा गोखरू, निसोथ, धनिया, धाय के फूल, इन्द्रायण, चव्य, मुलैठी, सोंठ, दन्तीमूल और मोचरस प्रत्येक का चूर्ण ८-८ तोले मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह सन्धान कर, एक मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तो० से २ तो० तक।

गुण—अर्श, आठ प्रकार के उदर रोग, मलमूत्र की रुकावट तथा अग्निमांद्य नाशक है।

---

* १६ अभयारिष्ट नं. २—अर्श, ग्रहणी, पाण्डु आदि नाशक।

---

* हरीतकीनां प्रस्थार्द्धं प्रस्थमामलकस्य च। स्यात्कपित्थाद्दशपलं पलार्द्धेनेन्द्र वारुणी॥ विडंगं पिप्पली लोध्रं मरिचं सैल वालुकम्। द्विपलांशं जलस्यैतच्चतुर्द्रोणे विपाचयेत्॥ द्रोणशेषे रसे तस्मिन् पूते शीते समावपेत्। गुडस्य द्विशतं तिष्ठेत् तत्पक्षं घृतभाजने॥ पक्षादूर्द्धवं भवेत्पेया ततो मात्रा यथा बलम्। अस्याभ्यासादरिष्टस्य गुदजा यान्ति संक्षयम्॥ ग्रहणी पाण्डु हृद्रोग प्लीह गुल्मोदरापहः। कुष्ट शोफा रुचि हरो बलवर्णाग्नि वर्द्धनः॥ सिद्धोऽयमभयारिष्टः कामलो श्वित्र नाशनः। क्रिमि ग्रन्थ्यर्बुदव्यङ्ग राजयक्ष्मज्वरान्तकृत्॥

—च० चि० अ० १४

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विधि—हरड़ ३२ तोले, आमला ६४ तोले, कैथ की छाल ८ छटांक, इन्द्रायन की जड़ ४ छटांक (यदि इन्द्रायन के फल लेने हों तो केवल दो तोला ही लेवे), वायविडंग, पीपल, लोध, कालीमिरच और शीतलचीनी, प्रत्येक ८-८ तोले लेकर सब को जवकुट कर १ मन १२ सेर जल में क्वाथ विधि से पकावे। १३ सेर शेष रहने पर, छानकर शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें १० सेर गुड़ मिला, यथाविधि सन्धान कर १५ दिन तक सुरक्षित रखे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—शक्त्यनुसार १ तो० से २ तो० तक।

गुण—अर्श, ग्रहणी, पाण्डु, हृद्रोग, प्लीहा (तिल्ली), गुल्म, उदर रोग, कोढ़, सूजन, और अरुचि का नाशक है। बल, वर्ण और अग्नि की वृद्धि करता है, तथा, कामला; श्वेत कुष्ठ, क्रिमि, ग्रन्थि, अर्बुद, झाँई, क्षय और ज्वर को नष्ट करता है।

---

* २०-अभयारिष्ट नं. ३—प्रमेह, अर्शादि निवारक।

---

* अष्टौ पलानि वर्षाभू दशमूलार्क चित्रकात् । दन्तीश्यामा त्रिवृद्रास्नाश्चैवं स्युस्त्रिफलाढकम् ॥ अम्बु द्रोणाष्टके पक्त्वा पादशेषे रसे स्थिते। द्वे गुडस्य तुले पूते तत्पश्चाद् घटके क्षिपेत् ॥ गवां मूत्रादकं प्रस्थौ द्वावयोरजसस्तथा। विडंगं कुटजं कुष्ठं चित्रकं मरिचं वचाम् ॥ संचूर्ण्य द्विपलान्यस्मिन्दत्वा मासास्थितं पिबेत्। अभयारिष्ट नामायं मेहार्शः कुष्ठ शोफहा। प्लीहपाण्ड्वामयान् गुल्मान् जठराणि च नाशयेत् ॥

—गदनिग्रह।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विधि—पुनर्नवा (बिसखपरा), दशमूल, आक, चीता, दन्ती, कालानिसोथ और रास्ना प्रत्येक ३२ तोले, तथा त्रिफला ३। सेर लेकर; जवकुट कर, २ मन २४ सेर जल में काथ विधि से पकावे। चतुर्थांश शेष रहने पर, छान कर उसे शुद्ध चिकने घड़े में भर उस में १०सेर गुड़, ३। सेर गोमूत्र, १ सेर १० छटांक शुद्ध लोहचूर्ण, तथा वायविडंग, कुड़े की छाल, कूठ, पीता, कालीमिरच और बच प्रत्येक का चूर्ण ८-८ तोले मिला, यथा विधि संधान कर, एक मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छान कर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तो० से २॥ तोले तक।

गुण—प्रमेह, बवासीर, कुष्ठ, सूजन, प्लीहा, पांडु, गुल्म और उदर रोग नाशक है।

नोट-वास्तव में इसे पुनर्नवाद्यरिष्ट कहना चाहिये। गदनिग्रहकार ने इसे अभयारिष्ट नाम से शायद इसलिये कहा है कि यह उक्त रोगों पर अभय प्रदान करता है।

आसवारिष्ट संग्रहकार वैद्यराज जगदीशप्रसाद जी गर्ग की सूचना है कि यह अरिष्ट पित्तज-प्रमेह में हानिकारक होगा। किंतु यह हानिकारक नहीं होता। "उष्णमुष्णेन शमयेत्" इस न्याय से यह उष्ण एवं पित्तक्षोभक अरिष्ट अन्त में पित्तजन्य विकारों को शमन ही करता है, ऐसा हमारा अनुभव है।

—सम्पादक।

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

२१—अभयारिष्ट नं० ४—सर्व उदररोग हर।

(कविराज पं० रामस्वरूप जी वैद्य शास्त्री कृत)

विधि—छोटी हरड़ ६ छटांक, पोदीना हरा १ सेर, अदरख १ पाव, सौंफ आध पाव, लाल इलायची १ पाव, ईख के रस का उत्तम पुराना सिरका १२ सेर लेकर पोदीने को छोड़ अन्य औषधियों को कुचल लेना चाहिए। पश्चात् पोदीना सहित सब औषधियों को दो सेर सिरके में, रात्रि के समय भिगो देना चाहिए। प्रातः इसी में १० सेर सिरका और मिला कर भवके में चढ़ा दे और धीमी धीमी आँच से १० बोतलें अर्क खींच लेनी चाहिए।

मात्रा—१ तो० से २ तो० तक है।

गुण—यह अभयारिष्ट सर्व प्रकार के उदररोग, गुल्मशूल, वृक्शूल (दर्द-गुर्दा), अन्तर वृक्शूल, उदरशूल, कुक्षिशूल, पार्श्वशूल, वस्तिशूल, यकृत, प्लीहा, आध्मान, अजीर्ण, मन्दाग्नि, वमन, श्वास, खांसी, उद्गार, उदावर्त आदि की महौषधि है।

(अनुभूतयोगमाला)

अभयारिष्ट नं० ५—देखिये, फलारिष्ट।

अमृत वल्ली कषाय—देखिये, प्राणामृतारिष्ट।

२२—अमृतासव नं १—वातरक्तादिनाशक।

विधि—गिलोय ५ सेर जवकुट कर, १ मन १२ सेर जल में पकावे। १३ सेर जल शेष रहने पर, छान कर चिकने पात्र में

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

भर देवे। ठंडा होने पर उसमें हरड़, मुलैठी, खस, आमला, देवदारु, दोनों अनंतमूल, और शीतलचीनी का चूर्ण प्रत्येक ४-४ तोले और शहद ५ सेर, धाय के फूल १३ छटांक मिला, अच्छी तरह सन्धान कर रक्खे। १ मास के बाद छान कर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तो० से ४ तोले तक। अनुपान- जल।

गुण—वातरक्त, मधुमेह, चर्मरोग, साधारण कुष्ठ, जीर्ण-ज्वर, विसर्प, शीतपित्त नाशक है।

२३—अमृतासव नं २—जीर्णज्वर, प्रमेह आदि नाशक।

विधि—उत्तम गिलोय का शुद्ध स्वरस निकाल, उसमें चौथाई भाग रेक्टिफाइड स्प्रिट मिला, चीनी मिट्टी के पात्र में या कांच की शीशी में भर कर रख दे। १४ दिन बाद छान कर काम में लावे।

मात्रा—५ बूंद से ३० बूंद तक। अनुपान—जल।

गुण—जीर्णज्वर, क्षय, वीर्यविकार, मस्तिष्क की दुर्बलता नपुंसकता, चक्कर आना, हाथ पैरों की दाह आदि दूर होते हैं।

---

२४ अमृतबिन्दवासव—अजीर्ण, अग्निमांद्यादिनाशक।

विधि—कपूर, सत्त पोदीना, टिंचर क्लोरोफार्म प्रत्येक २-२ तो०, नवसादर, सत अजवायन, कार्बोलिकएसिड, जौहर लोबान, शुद्ध पारद, शुद्ध गंधक प्रत्येक १-१ तो० (पारद गंधक

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

की कज्जली कर लेवे) एक शीशी में सब को मिला कर रक्खे । ४ या ७ दिन के बाद, हल होजाने पर प्रयोग करे।

मात्रा—१ से ५ बूंद तक, किसी पाचक अर्क में मिलाकर सेवन करे।

गुण—अजीर्ण, अग्निमांद्य, उदरशूल, विसूचिका (हैजा), दांत के दर्द आदि में लाभदायक है।

(अ० चि० संग्रह)

---

* २९ अमृतारिष्ट नं० १—ज्वर एवं यकृत विकार नाशक।

विधि—ताजी गिलोय ५ सेर, और दशमूल ५ सेर लेकर, जवकुट कर सब को १ मन १२ सेर जल में क्वाथ विधि से पका कर चतुर्थांश (अर्थात् १३ सेर) जल शेष रहने पर शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें १५ सेर गुड़, १३ छटाँक श्वेतजीरा, ८ तोले पित्तपापड़ा, तथा सतौने की छाल, त्रिकुटा (सोंठ, मिरच, पीपल) नागरमोथा, नागकेशर, कुटकी, अतीस, और इन्द्रजौ प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले मिला, यथाविधि सन्धान कर, एक मास तक सुरक्षित रक्खे। फिर छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

---

* अमृतायाः पलशतं दशमूलीशतं तथा । चतुर्द्रोणे जले पक्त्वा कुर्यात्पादावशेषितम् ॥ शीते तस्मिन् रसे पूते गुडस्य त्रितुलाः क्षिपेत् । अजाज्याः षोडशपलं पर्पटस्य पलद्वयम् । सप्तपर्णं त्रिकटुकं मुस्तकं नागकेशरम् । कटुकातिविषाचेन्द्र यवञ्च पलसम्मितम् ॥ एकीकृत्य क्षिपेद्भाण्डे निदिध्यान्मासमात्रकम् । अमृतारिष्ट इत्येष सर्वज्वर कुलान्तकृत् ॥

—भै० रत्नावली ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मात्रा—१ तो० से २ तोले तक।

गुण—सब प्रकार के ज्वर नष्ट होते हैं। जिस ज्वर में यकृत की बृद्धि हुई हो, उसमें यह अरिष्ट अमृत के समान कार्य करता है। क्षय रोगी के ज्वर को भी यह लाभ दायक है। इसकी मात्रा के साथ लाइकर आर्सेनिक २ से ५ बून्द तक मिला कर सेवन करने से ज्वर की बारी शर्तिया रुक जाती है।

---

२६ अमृतारिष्ट नं० २—ज्वर नाशक।

(वैद्यराज पं० गौरीशंकरजी आनन्द)

विधि—गिलोय ५ सेर, दशमूल (सरिवन, पिठवन, दोनों कटेरी, गोखरू, बेल, सोनापाठा, कुंभेर, पाढ़ल और अरणी इन सब की जड़) ५ सेर, चिरायता, नीमका पंचाङ्ग, पित्तपापड़ा और सुदर्शन चूर्ण १-१ सेर, सबका जवकुट चूर्ण कर, १२० सेर जल में भिगो कर क्वाथ करे। चौथाई भाग शेष रहने पर छान लेवे, और शुद्ध चिकने मटके में भर, उस में कालाजीरा ६४ तो, पित्तपापड़ा ८ तो० पटोलपात्र, कुटकी, सफसनतीन (मुसत्यारा) सातला (सप्तपर्ण) सोंठ, मिरच, पीपल, नागर-मोथा, करंजुआ, नागकेशर, अतीस, इन्द्रजौ, हरड़, बहेड़ा, आमला, प्रत्येक ४-४ तोले, सुदर्शन चूर्ण १६ तोले, सब का चूर्ण कर मिलावे। गुड़ २० सेर घोल देवे। मुख मुद्रा-कर १ मास तक रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर देवे।

मात्रा—१ से ४ तोले तक। समान भाग जल मिलाकर सेवन करे।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

गुण—ज्वर, विषमज्वर, जीर्णज्वर इत्यादि में लाभप्रद है।
(अ० चि० संग्रह)

अरलूमूलासव—देखिये, टुण्टुकासव।

* २७ अरविन्दासव नं०१—बाल रोग नाशक।

विधि—कमलपुष्प (श्वेत अथवा लाल), खस, खम्भारी के फल (गम्भारी की छाल लेना उत्तम है), नीलोफ़र (कुमुद-पुष्प), मजीठ, छोटी इलायची, खिरेंटी, जटामांसी (बालछाड़) नागरमोथा, अनन्तमूल, हरड़, बहेड़ा, आमला, बच, कचूर, काली सारिवा (श्यामा से यहाँ कोई २ निसोथ ग्रहण करते हैं, किन्तु इस प्रयोग में निसोथ डालने से, इस आसव का पुष्टि-कारक गुण कम होजाता है, ऐसा हमारा अनुभव है) जंगली नील (सरफोंका), परवल के पत्ते, पित्त पापड़ा, अर्जुन की छाल, मुलैठी, महुआ, मुरामांसी (मुरमुकी) प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले तथा १ सेर मुनक्का, १३ छटाँक धायके फूल, ५

---

* अरविन्द मुशीरं च काश्मरीं नीलमुत्पलम्। मंजिष्ठैला बला मांसी रम्बुदं सारिवां शिवाम्॥ विभीतक वचा धात्रीः शठी श्यामां सनीलिनीम्। पटोल पर्पट पार्थं मधूकं मधुकं मुराम्॥ पल मानेन संगृह्य द्राक्षायाः पल विंशतीम्। धातकीं षोडशपलां जलद्रोणद्वयेऽक्षिपेत्॥ शर्करायास्तुलां तत्र तुलार्धं माक्षिकस्य च। मासं संस्थापयेद् भाण्डे मृत्तिकापारेनिर्मिते॥ बालानां सर्वरोगघ्नो बलपुष्ट्याग्निवर्द्धनः। अरविन्दासवः प्रोक्त आयुष्यो ग्रह दोष हृत्॥

—भै० रत्नावली।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सेर शक्कर, २॥ सेर शहद और २६ सेर जल, सब को एकत्र मिला, शुद्ध चिकने मटके में भर, यथाविधि सन्धान कर, एक मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रखदे।

मात्रा—१ से ३ मास के बच्चे को १० बून्द, ३ मास से १ वर्ष तक के बच्चे को ३० बून्द तक, १ से ५ साल तक के बच्चे को १ तोला तक, ५ साल से अधिक उमर वाले को दो तोला तक, प्रतिबार दूध में मिला कर सेवन करावे। बड़े बच्चों को जल के साथ देवे।

गुण—बालकों के समस्त रोगों पर उत्तम लाभदायक है। बल, पुष्टि, आयु एवं अग्नि को बढ़ाने वाला, सूखा रोग, पसली चलना (डिब्बा रोग), खांसी एवं अतिसार नाशक तथा ग्रहदोष निवारक है।

२८—अरविन्दासव नं २—(राजीव कुमुद)-बालरोगनाशक।

(वैद्यराज उमादत्त जी मिश्र, मिर्जापुर)

विधि—कमल के फूल १०० नग और संतरे का रस ४० तोले एकत्र मिला, शुद्ध मटके में भर, २४ घंटे रखने के बाद, मलकर, साफ़ वस्त्र से छान, चीनी—मिट्टी के पात्र में भर कर उसमें—जवासे का अर्क २५ प्रतिशत् (देखो नोट नीचे) ४० तोले, तथा मुनक्का, सूखे आंवले, मुलैठी, सफेद अतीस, काकड़ासिंगी, नागरमोथा, बड़ी पीपल, कुटकी और प्याज का रस इन ६ द्रव्यों को एकत्र मिला २५ प्रतिशत वाला अर्क ४० तोले, शहद ३ पाव, और मृतसंजीवनी—सुरा आध पाव मिला कर पात्रका

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मुख अच्छी तरह बन्द कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छान कर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा--२० बूंद से १ तोला तक। आवश्यकतानुसार या दिन में दो बार।

गुण—बालकों के सम्पूर्ण रोगों को नष्ट कर, उन्हें हृष्ट पुष्ट बनाता है।

नोट—फल, फूल, पत्रादि शुष्क द्रव्यों में ६ गुना जल तथा शुष्क काष्ठ द्रव्यों में ८ गुना जल मिला, २४ घंटे तक भिगोकर भवंक के द्वारा अर्क खींचे, जब अर्क द्रव्य से चौगुना खिंच आता है, तब वह २५ प्रतिशत कहलाता है।

२९—अरितमंजर्यासव—श्वास, कास नाशक।

(श्री० पं० श्यामनारायण जी चतुर्वेदी, वैद्यराज)

विधि—जड़ सहित * अरित मंजरी (मुक्तवर्चा) के ७॥ तोले पंचाङ्ग को, २। पाव स्प्रिट में मिलाकर, कागदार बोतल में ७ दिन तक रक्खे, तथा प्रतिदिन दो तीन वार हिला दिया करे। फिर छान कर, और उसमें २॥ पाव स्प्रिट मिलाकर दूसरी कागदार बोतल में कर रख दे।

मात्रा—१० से ३० बूंद तक, शहद में मिला कर दिन में २—३ बार सेवन करावे।

---

* इसे हिन्दी में मुक्तवर्षा, कुप्पी, मेरठ में—खोखली, गुजराती में वंछिकांटा और बंगला में—मुक्तझुरी कहते हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

गुण—श्वास कास को शीघ्र भगाता है।

(धन्वन्तरि-बूटी-अंक)

३०—अरितमंजर्यारिष्ट—(स्वकृत)—श्वास कास नाशक।

विधि—अरितमंजरी के कोमलपत्र, डंठल और पुष्प एकत्र ५ सेर तक लेकर, जवकुट कर, क्वाथ विधि से १ मन १२ सेर जल में पकावे। चतुर्थांश शेष रहने पर छान कर, शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें-१२ सेर गुड़, १३ छटांक धाय के फूल तथा अतीस, काकड़ासिंगी, हरड़, बहेड़ा, और आमला प्रत्येक का चूर्ण ४-४तोले मिला, एक मास तक यथाविधि सन्धान कर रक्खे। पश्चात् छान कर, बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—छोटे बच्चों को २० से ६० बूंद तक, बालक तथा बड़ों को १ तोले से २ तोले तक, दूध या जल के साथ देवे।

गुण—कास और श्वास को शीघ्र दूर करता है।

अरिष्टकासव—देखिये, सर्पविषहरासव।

३१—अरिष्टफलाद्यासव—वातपीड़ा शामक।

(श्री० स्वामी चैनदास जी वैद्यराज)

विधि—नीम के हरे फल २५ तोले, बच्छनाग विष २५ तोले, लहसुन १० तोले और कपूर ४० तोले, इन सब को कूट पीस कर, प्रसारिणी के १ मन क्वाथ जल में डाल शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें ३० बूंदे खटाई के तेजाब की मिला, पात्र का

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मुख बन्द कर, खाद के ढेर में गाड़ देवे। १५ दिन के बाद, निकाल कर यन्त्र से अर्क खींच लेवे। जब सब अर्क खींच चुके, तब उस अर्क को पुनः यन्त्र में डाल, इसीप्रकार दूसरी बार और अर्क खींच शीशी में भर कर रखले।

व्यवहार—शरीर पर मालिश करे।

गुण—अत्यन्त तीव्र बात की पीड़ा को शीघ्र शान्त करता है।

(अ० योगमाला)

---

३२ अर्कासव—हैजा नाशक।

(श्री० डा० रामगोपालजी मिश्र, वैद्यशास्त्री)

विधि—आक की जड़ को महीन पीसकर २॥ तोला कल्क तयार करे, फिर उसमें रेक्टीफाइडस्पिरिट पानी मिली हुई २३ तोले मिला, बोतल में भर, मुख बन्द कर, दो दिन या १ दिन रख कर, पुनः छानकर शीशीयों में भर कर रखले।

मात्रा—अवस्था विशेष में १ बूंद, सोंठ के ४ रत्ती चूर्ण के साथ या केवल जल से १-१ घंटे के अन्तर से ३।४ बार देवे।

गुण—हैजे पर अपूर्व लाभदायक है। पेट में जलन, वेदना के साथ दस्तों का होना, शरीर में कनकनाहट, आक्षेप आदि लक्षण हों तथा चेहरे का रंग बदल गया हो, आंखें धंसी हुईसी होगई हों, शरीर ठंढा मालूम होरहा हो, स्वर विकृत होगया हो, हाथ पांव में भड़कन, नाड़ी की क्षीणता आदि उपद्रवों की अवस्था में यह अमोघ रामवाण वत् कार्य करता है। इसे ब्रांडी या सामन्य मदिरा में भी बनाकर काम में ला सकते हैं। इसे

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

केवल ३ या ४ बार ही देना चाहिये। अधिक उपयोग नहीं करना चाहिये। यह अपना गुण प्रथम या द्वितीय बार में ही दिखा देता है।

(धन्वन्तरि)

३३-अर्काद्यासव—शूलादि नाशक।

(श्री पं० त्रिभुवननाथ वैद्य, भिषग्रत्न)

विधि—अर्क (आक-मदार) के पत्ते ५ सेर, अदरख, छोटी पीपल, कालीमिरच, हरड़, बहेड़ा, आंवला, चित्रक, नागरमोथा, सफेदजीरा, धनिया, अजवायन, लहसुन, हल्दी, दारुहल्दी, सौंफ, सनाय की पत्ती, सैंधानमक, और बायबिडंग, प्रत्येक १—१ सेर तथा सोराकलमी, काला जीरा, सफेद फिटकरी पीपलामूल, और कसीस, प्रत्येक आध-आध सेर, लेकर सब को जवकुट कर मिट्टी के पात्र में डाल, उसमें, दो मन पक्का जल डालकर, मुख-मुद्रा कर देवे। ३ दिन के बाद भबके से अर्क खींच कर बोतलों में भर कर रख दे। २५ बोतल आसवार्क निकाले।

मात्रा—१ से २ तोले। थोड़ा सैंधा नमक मिला कर सेवन करे। जवान बच्चे को आधा तोला देवे। बलाबल देखकर ५ तोले तक की मात्रा से शूल रोगी को दिया जा सकता है।

गुण—शूल, प्लीहा, यकृत, रक्तगुल्म, वातगुल्मादि उदर सम्बन्धी समस्त रोगों पर बिजली के समान गुण करता है।

(धन्वन्तरि)

नोट— प्रयोग लेखक ने इसका नाम पारिजातकार्क रक्खा है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

३४ अर्जुनारिष्ट नं० १—हृदय को बलदायक ।

(वैद्यराज गौरीशंकरजी आनन्द, हरिपुर)

विधि—अर्जुन की छाल १० सेर, द्राक्षा ५ सेर, महुये के फूल दो सेर लेकर जबकुट कर, ३ मन १६ सेर जल में मिला, १२ घंटे के बाद क्वाथ करे। चौथाई भाग शेष रहने पर छान कर, शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें १० सेर गुड़, २ सेर धाय के फूल, तथा मुलैठी, छोटी इलायची, आमला, सफेद चन्दन, गाजवाँ के फूल प्रत्येक का चूर्ण २-२ तोले मिला, पात्रका मुख अच्छी तरह बन्द कर ऋतु अनुसार ३० दिन या १५ दिन तक भूसे में दबाकर रक्खे। बाद सिद्ध होने पर, निकाल कर, छान कर, काली बोतलों में भर कर रख दे। ध्यान रहे पूरी बोतल न भरकर बोतल का तिहायी भाग ही भरे। ७ दिन बाद दूसरी बोतलोंमें सावधानी से डाले, जिसमें बोतल की तलैटी में बैठा हुआ मैल दुबारा दूसरी बोतलों में न चला जावे। इसीप्रकार ७ दिन बाद फिर छान लेवे। पश्चात् काम में लावे।

मात्रा—१ तोले से ४ तोले तक। अनुपान-जल, या शर्बत गावजवाँ, सन्दल आदि में मिला कर सेवन करावे।

गुण—हृदय को बल देता है। कास, श्वास, क्षय, हृदय की निर्बलता, धड़कन आदि में उत्तम लाभदायक है।

(अनुभूत-चीकित्सा संग्रह)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

३५ अर्जुनारिष्ट नं० २—हृद्रोग नाशक।

(श्री बालकृष्णजी शर्म्मा वैद्यराज भोपाळ)

विधि—अर्जुन की छाल १० सेर, असगंध का पंचाङ्ग ५ सेर, कंटकारी पंचाङ्ग १। सेर, करोंदी पंचाङ्ग १। सेर, वासा पंचाङ्ग १। सेर और मधूक पुष्प (महुये के फूल) १। सेर, लेकर, सब को जवकुट कर, १० गुने जल में डाल क्वाथ करे। चौथाई भाग शेष रहने पर मोटे कपड़े से छान लकड़ी के शुद्ध पीपे में भरे, और उसमें ५० तोले धाय के फूल तथा दालचीनी, इलायची, नागकेशर, लौंग, सोंठ, मिरच, पीपल, प्रत्येक का चूर्ण १०-१० तोले, कपूर ३ तोले, और पुराना गुड़ १५ सेर मिला कर (गुड़ को अच्छी तरह घोल देवे), पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर १॥ मास तक सुरक्षित रक्खे। किन्तु बीच में दस २ दिन के बाद हिला दिया करे। पश्चात् सावधानी से मुख खोलकर ऊपर का स्वच्छ जल नितार या छानकर बोतलों में भर लेवे। यह जितना ही पुराना होगा, उतना ही गुणकारी होगा।

मात्रा—१ तो० से ३ तोले तक, दुगुने जल के साथ।

गुण—हृदय के सम्पूर्ण रोग, दर्द, उरःक्षत, खांसी और फुफ्फुस आदि के विकारों पर रामबाण है।

(अ० योगमाळा)

---

३६ अर्जुनारिष्ट नं० ३—(स्वकृत) मधुमेह नाशक।

विधि—अर्जुन की छाल १ सेर, तथा आम की छाल, खैर की छाल, कुड़े की छाल, बेल की छाल, सेमर की छाल, आमले की गिरी, वासा (अड़ूसा) के पत्ते, मरोड़फली, बबूल की

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

फली, पठानी लोध, अनार की बकली, बायबिडंग, नागरमोथा, महुआ और पीपल की लाख प्रत्येक १०-१० तोले तथा जामुन की छाल, और गूलर की छाल प्रत्येक २०-२० तोले, लेकर सब को जवकुट कर, दो मन २४ सेर जल में क्वाथ विधि से पकाकर, चतुर्थांश शेष रहने पर, छान कर, शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें-१ सेर धाय के फूल, तथा जामुन की गुठली, जायफल, कालीमुसली, लौंग, नागकेशर, नागरमोथा, और धनिया प्रत्येक का चूर्ण ८-८ तोले मिला कर, यथाविधि सन्धान कर, एक मास तक सुरक्षित जमीन में गाड़ कर रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तो० से २॥ तोले तक।

गुण—मधुमेह को शीघ्र दूर करता है। मस्तिष्क की कमज़ोरी पर भी उत्तम लाभदायक है।

अर्जुनारिष्ट नं० ४—देखिये, पार्थाद्यरिष्ट।

* ३७—अशोकारिष्ट नं १—रक्तप्रदरादिनाशक।

---

* अशोकस्य तुलामेकां चतुर्द्रोणे जले पचेत्। पादशेषे रसे पूते शीते पलशतद्वयम्॥ दद्याद् गुडस्य धातक्याः पलषोडशिकं मतम्। अजाजी मुस्तकं शुण्ठी दार्व्युत्पल फलत्रिकम्॥ आम्रास्थि जीरकं वासा चन्दनं च विनिक्षिपेत्। चूर्णयित्वा पलांशेन ततो भाण्डे निधापयेत्॥ मासादूर्ध्वं च पीत्वैनमसृग्दररुजां जयेत्। ज्वरं च रक्तपित्तार्शो मन्दाग्नित्वमरोचकम्॥ मेह शोथारुचिहरस्त्वशोकारिष्ट संज्ञितः॥

—भै० रत्नावली।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विधि—अशोक की छाल ५ सेर (अशोक वृक्ष के तने की उस छाल को लेना चाहिए, जिसके ऊपर की मुर्दार छाल छील कर अलग कर दी गई हो) जवकुट कर, १ मन १२ सेर जल में क्काथ विधि से पकावे। १३ सेर जल शेष रहने पर, छान कर, शुद्ध चिकने घड़े में भरे, और ठंडा हो जाने पर, उसमें-१० सेर गुड़ अच्छी तरह घोल कर मिलावे, तथा १३ छटांक धाय के फूल, कालाजीरा, नागरमोथा, सोंठ, दारुहल्दी, नीलोफर (नील कमल), हरड़, बहेड़ा, आमला, आम की गुठली की गिरी, सफेद जीरा, बासा (अडूसा) और श्वेतचन्दन प्रत्येक का चूर्ण ४-४तोला मिला कर, यथाविधि सन्धान कर, १ मास तक रक्खा रहने देवे। पश्चात् छान कर, बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तो० से २ तो० तक, विशेष अवस्था में इसे ४ तोले तक भी देते हैं।

गुण—रक्तप्रदर, ज्वर, रक्तपित्त, बवासीर, मन्दाग्नि, अरुचि, प्रमेह, सूजन, आर्तव सम्बन्धी रोग, उदर, कटि एवं पेड़ू का दर्द, गर्भस्राव-विकार, निर्बलता आदि स्त्रियों के कतिपय विकारों के लिये रामबाण है। यदि यह अरिष्ट १ तो० और कुटजारिष्ट १ तो० एकत्र मिला, समभाग ताजे जल के साथ प्रातः सायं सेवन कराया जाय तो सब प्रकार के प्रदर २१ दिन में दूर होजाते हैं।

३८—अशोकारिष्ट नं २—स्त्रीरोग हारक।

(राजवैद्य डा० इन्द्रदत्त जी शर्म्मा)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विधि—अशोक की छाल ५ सेर, बासे (अड़ूसा) के पत्ते आध सेर, अड़ूसे के फूल, गूलर की छाल, कमलपुष्प, शतावर का स्वरस, पीपल की लाख प्रत्येक १-१ सेर, लक्ष्मणा, काला-जीरा, सफेद जीरा, नागरमोथा, नागकेशर, सोंठ, छोटी इलायची के बीज, शिवलिङ्गी प्रत्येक ५-५ तोले, हरड़, बहेड़ा, आमला प्रत्येक १-१ पाव, उत्तम मधु ५ सेर और पुराना गुड़ ५ सेर लेकर, प्रथम काष्टादिक औषधियों को जवकुट कर, एक मन जल में क्वाथ विधि से पकावे, चतुर्थांश शेष रहने पर, छान कर, उसमें शतावरीक स्वरस, गुड़ और मधु मिला, किसी शुद्ध चिकने मटके में भर, मुख मुद्रा कर, जमीन में गाड़ देवे। ४० दिन बाद निकाल कर छान ले, और बोतलों में भर, १० दिन धूप में रक्खे। पश्चात् पुनः छान कर भर कर रख दे।

मात्रा--१ तो० से २ तो० तक। अनुपान-आवश्यकतानुसार, अथवा शुद्ध जल।

गुण—अनुपान भेद से स्त्रियों के सम्पूर्ण रोगों पर सेवन कराया जाता है। तत्काल अपना चमत्कारी प्रभाव दिखलाता है। साधारणतया सब प्रकार के प्रदर, योनिविकार, संतान का न होना अथवा हो होकर मर जाना, मासिक ऋतु की खराबी आदि पर उत्तम है।

(धन्वन्तरि-सिद्धयोगांक)

३९—अशोकारिष्ट नं० ३—स्त्री-रोग-नाशक।

(स्वर्गीय पं० सोहनलाल जी रसवैद्य)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विधि—अशोक की छाल ३ सेर लेकर, १८ सेर जल में क्वाथ करे। ६ सेर जल शेष रहने पर, छान कर, शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें-४ सेर गुड़, १० तोले धाय के फूल, ३ तोले त्रिफला, तथा लोध, दशमूल, बिदारीकंद, नागकेशर, बनपसा, असगंध, गुलाब के फूल, बासा (अड़ूसा), कमल, जीरा, मजीठ, शतावरी, और पीपल प्रत्येक का चूर्ण १-१ तोला, तथा बाजारू सुरा (मद्य) एक तोला, सब को मिला कर, मुख बन्द कर, ५ या ६ दिन तक सुरक्षित रक्खे, पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—आधा तोला से एक तोला तक। अनुपान-दूध, अथवा ताजा जल। प्रातः सायं देवे।

गुण—प्रदर, सोम रोग, गर्भस्राव, योनिविकार, मासिक-विकृति आदि, स्त्रियों के सब विकारों को दूर करता है।

(अ० योगमाला)

४०—अशोकारिष्ट नं० ४—स्त्री रोग हारक।

(वैद्यराज पं० बलवंत जी शर्म्मा)

विधि—अशोक की छाल १५ सेर लेकर जवकुट कर, क्वाथ विधि से, सोलह गुने जल में पकावे। चतुर्थांश शेष रहने पर, छान कर, शुद्ध चिकने घड़े में भरे और उसमें ४० सेर शुद्ध देशी शक्कर तथा कमल के फूल, चमेली के फूल, शतावरी, असगंध, खिरेंटी की जड़, आमके नवीन लाल पत्ते, जामुन की गुठली की गिरी, अड़ूसे की जड़ की छाल, सफेदजीरा, कालाजीरा, श्वेत-

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

चन्दन का बुरादा, नागरमोथा, सोंठ, दारुहल्दी, कपूरकचरी, गूलर की जड़ की छाल, सेमल के फूल और कत्था, प्रत्येक १-१ पाव कूट पीस कर मिला देवे; और पात्र का मुख खूब मज़बूत बांध, कपड़ मिट्टी कर, गरम जगह में रखे। हर सप्ताह (प्रति ७ वें दिन) खूब ज़ोर से हिला देना चाहिए। बाद १ माह के निकाल, छान कर स्वच्छ अरिष्ट सुन्दर बोतलों में भर कर रख दे। पश्चात् १॥ या २ मास के बाद, इन बोतलों का अरिष्ट निथर कर, ऊपर साफ़ होजावेगा, किट्ट तलभाग में बैठ जावेगा, तब अन्य बोतलों में धीरे से शुद्ध साफ़ अरिष्ट निथार कर भर लेवें और गंदला भाग फेंक देवे।

मात्रा—१ तो० से २ तो० तक, २॥ तोले जल में मिला कर दे। दिन रात में दो बार। भोजन करने के एक घन्टा बाद पिलाना चाहिये।

गुण—सब प्रकार के प्रदर, हिस्टीरिया (योषापस्मार), सोम रोग, मासिकधर्म-विकृति चेहरे का पीलापन, अशक्ति, सिर का चकराना, मगज़ और कमर की पीड़ा, हाथ पाँव और आँखों की जलन, तालू का सूखना, मूर्च्छा, दुःस्वप्न देखना, ज्वर, रक्त पित्त, रक्तार्श मंदाग्नि, अतिसार, संग्रहणी, खूनीदस्त ये सब रोग दूर होते हैं।

पथ्यपालन—अजीर्ण में भोजन, मैथुन, विशेष मार्ग चलना, शोक, उपवास, बोझ उठाना, दिनका सोना, दही, खटाई; गरिष्ठ पदार्थ, बाजार की मिठाई इत्यादि से सख्त परहेज़ करना चाहिए।

(बूटीदर्पण)

———

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

४१ अशोकारिष्ट नं० ५--प्रदरादि नाशक ।

(वैद्यराज गौरिशंकरजी आनन्द, हरीपुर)

विधि—अशोक की छाल ५ सेर, लोध २॥ सेर, शतावर, असगंध, कुड़े की छाल और मुलैठी प्रत्येक १०—१० छटाँक लेकर, महीन चूर्ण कर, ८० सेर जल में भिगो २४ घन्टे बाद क्वाथ करे। चौथाई भाग शेष रहने पर, छानकर शुद्ध चिकने मटके में भरे, और उसमें ८ सेर गुड़, १ सेर धाय के फूल तथा सोंठ, कालाजीरा, नागरमोथा, दारुहल्दी, हरड़, बहेड़ा, आमला, आमकी गुठली की गिरी, सफेदजीरा, अडूसा (बासा), सुपारी, माजूफल, लालचन्दन, भांग, नागकेशर, और रसौत प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले, पुष्यानुग चूर्ण * ३२ तोले, इन सब को मिला कर, पात्र का मुख अच्छी तरह सन्धान कर एक मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तो० से ४ तोले तक।

गुण—रक्तप्रदर, श्वेतप्रदर, क्षीणता, तथा गर्भाशय के रोगों पर उत्तम लाभदायक है।

(अ० चि० संग्रह)

---

* पाठा, जामुनकी गुठली की गिरी, आमकी गुठली की गिरी, पाखानभेद, रसौत, अम्बष्ठा, मोचरस, मजीठ, कमल केसर, केसर, अतीस, नागरमोथा, बेलगिरी, लोध, गेरू, कायफल, कालीमिरच; सोंठ, मुनक्का, लालचन्दन, सोनापाठा (अरलू) की छाल, इन्द्रजौ, अनन्तमूल, धाय के फूल, मुलैठी और अर्जुन की छाल, इन सब को 'पुष्य नक्षत्र' में संग्रह कर, समान भाग एकत्र कर चूर्ण करे। इस ही "पुष्यानुगचूर्ण" कहते हैं।

—सम्पादक।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अशोकारिष्ट नं० ६—देखिये, रमणीसुधासव ।

* ४२ अश्वगन्धारिष्ट नं० १—मूर्च्छापस्मारादि नाशक ।

विधि—नागौरी असगन्ध २॥ सेर, सफेदमुसली १ सेर तथा मजीठ, हरड़, हल्दी, दारुहल्दी, मुलैठी, रास्ना; विदारीकंद, अर्जुन की छाल, नागरमोथा, निसोथ, ये प्रत्येक आध-आध सेर, श्वेत अनन्तमूल; काली सारिवा (मूल में श्यामा पद है, इससे कोई श्यामलता या कोयल ग्रहण करते हैं। हमारे मत से कृष्ण सारिवा ही इस स्थान में विशेष गुणदायक है), श्वेतचन्दन, लालचन्दन, मीठीबच और चीते की जड़ की छाल ये प्रत्येक ३२-३२ तोले लेकर, सबको जवकुट कर, क्वाथ विधि से, २ मन २४ सेर जल में पकावे। अष्टमांश अर्थात् १३ सेर जल शेष रहने पर; छानकर, शुद्ध चिकने मटके में भर दे । और ठंढा हो जाने पर उसमें १० सेर शहद, १३ छटाँक धायके फूल, तथा

---

* तुलार्धं चाश्वगन्धाया मुसल्याः पल विंशतिः । मंजिष्ठाया हरीतक्या रजन्योर्मधुकस्य च ॥ रास्ना विदारी पार्थानां मुस्तक त्रिवृतारापि । भागान् दशपलान् दद्यादनन्ताश्यामयोस्तथा ॥ चन्दन द्वितयास्यापि बचायाश्चित्रकस्य च । भागानष्टपळान् क्षुण्णानष्ट द्रोणेऽम्भसः पचेत् ॥ द्रोणशेषे कषायेऽस्मिन् पूते शीते प्रदापयेत् । धातक्याः षोडशपलं माक्षिकस्य तुला द्वयम् ॥ व्योषस्य द्विपळं चापि त्रिजातक चतुःपळम् । चतुःपळ प्रियंगोश्च द्विपलं नागकेशरम् ॥ मासादूर्ध्वं पिबदेनं पलार्धं परिमाणतः । मूर्च्छामपस्मृतिशोषमुन्मादमपि दारुणम् ॥ कार्श्यमर्शांसि मन्दत्व भग्नेर्वातभवान् गदान् । अश्वगंधाद्यऽरिष्टोऽयं पीतो हन्यादसंशयम् ॥

—भै० रत्नावली ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सोंठ, मिरच, पीपल और नागकेशर प्रत्येक ८-८ तोले दाल-चीनी; छोटी इलायची, पत्रज और प्रियंगु प्रत्येक १६-१६ तो० इन सब का चूर्ण कर मिलावे। पात्रका मुख यथाविधि सन्धान कर, एक मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तो० से ४ तोले तक। जल या दूध के साथ।

गुण—मूर्च्छा, मृगी (अपस्मार), क्षय, उन्मादादि मस्तिष्क सम्बन्धी विकार, कृशता, बवासीर, मन्दाग्नि, वातरोग, वीर्य दोष, नपुंसकता आदि नाशक है।

ताक़त एवं पुष्टी के लिये इसे ५ से १० तो० तक गाय के गरम दूध में मिला कर हिलावे। जब दूध फट जाय तब उसे छानकर मिश्री मिला कर सेवन करे, शीघ्र ही बल वीर्य की पुष्टी होती है। इसके सेवन से स्नायुतन्तु सबल होकर, शरीर के सब यन्त्र बलवान होते हैं। रज एवं वीर्य की शुद्धि होकर गर्भोत्पादक कीटाणु पुष्ट होते हैं।

निर्बल एवं कृश बालकों पर भी इसका प्रयोग उत्तम लाभ-दायक देखा गया है। बालकों को न्यून मात्रा में देना चाहिये यथा-१ माह से ३ माह तकके बालक को ५ से १० बून्द तक,

३ ,, ,, २ साल ,, ,, ,, १० से ३० ,, ,,
२ साल ,, ५ साल ,, ,, ,, ३० से ६० ,, ,;
५ ,, ,, १२ ,, ,, ,, ,, १ तोला तक।

दूध के अनुपान से देवे।

हिस्टीरिया (योषापस्मार) में इसके साथ योगराज गग्गुल देने से शीघ्र लाभ होता है। प्रसूतज्वर, एवं सूतिका रोगों में इसकी उचित मात्रा के साथ दशमूलारिष्ट

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मिश्रण कर, समभाग जल मिलाकर भोजन के पश्चात् सेवन कराने से शीघ्र लाभ होता है।

---

* ४३ अश्वगंधारिष्ट नं० २—क्षयरोग नाशक।

विधि—इसे प्रस्तुत करने की विधि उपर्युक्तानुसार ही है। केवल फर्क इतना ही है कि-रास्ना, बिदारीकंद और अर्जुन की छाल इसमें नहीं डाली गई है। शेष सब द्रव्य अश्वगंधारिष्ट नं०१ के अनुसार ही लेकर, क्वाथ्य जल १२मन ३२ सेर डाल, पकावे। अवशिष्ट जल अष्टमांश अर्थात् ६४ सेर रहने पर उसमें प्रक्षेप द्रव्य-धाय के सूखे फूल ४ सेर, शहद ३८ सेर, छोटी इलायची ६४ तोले, शेषत्रिजात, त्रिकुटा, प्रियंगु और नागकेशर का प्रमाण ऊपर (नं० १) में कहे अनुसार ही मिला यथाविधि एक मास तक अच्छी तरह सन्धान कर रखने के पश्चात् छान लेवे और उसमें ३ तोले 'स्वर्णद्रुति' मिलाने को कहा गया है।

स्वर्णद्रुति की विधि—३ तोले शुद्ध स्वर्ण को आतशी शीशी में डाल स्प्रिट लेम्प पर गरम करे। स्वर्णका चतुर्थभाग नमक और शोरे का तेजाब, बहुत धीरे २ तथा बहुत थोड़ा २ करके उस वक्त तक ऊपर से डालते रहे, जब तक संपूर्ण स्वर्ण पिघल न जाय। पिघलने पर, ४ तो० सैंधानमक का चूर्ण और डाले, जब जल सूख जाय और स्वर्ण का रंग नारंगी के समान

---

* यह एक नवीन प्रकार, जिसमें अरिष्ट के साथ स्वर्णद्रुति का मिश्रण किया जाता है, श्रीमान् रसवैद्य शास्त्री पं० भैरवलाल जी ने प्रकाशित कराया है। यह प्रयोग विचारणीय है।

—संपादक।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मालूम होने लगे, तब शीशी को उतारकर स्वर्ण-लवण निकाले। यही "स्वर्ण-द्रुति" तैयार हो गई। इसे उक्त अश्वगंधारिष्ट में मिला बोतलें भर कर रख लेवे।

मात्रा—रोगी के बलानुसार ६ माशे से दो तोले तक।

गुण—क्षय में अत्यन्त हितकर है।

(धन्वन्तरि)

४४—अश्वगंधारिष्ट नं० ३—स्मरणशक्ति की वृद्धि के लिये।

विधि—असगंध १ पाव, ब्राह्मी १ पाव, शंखपुष्पी १ पाव, तीनों को १२ सेर जल में डाल कर पकावे। ३ सेर जल शेष रहने पर, उसे अच्छी तरह मल कर छान लेवे, फिर उसमें ३ सेर अंगूर का रस और दो सेर मिश्री मिलाकर पकावे। जब पक कर ६॥ सेर शेष रह जाय, तब उतार कर, उसमें ३०। ० रेक्टिफाइड स्प्रिट मिला कर बोतलों में बन्द कर रख देवे। ७ दिन के बाद काम में लाना चाहिए।

मात्रा— २॥ तोला, अनुपान जल।

गुण—नष्ट हुई स्मरण शक्ति की वृद्धि होती है। यद्यपि आयुर्वेद में स्मरण शक्ति को बढ़ाने वाली सैंकड़ों औषधियाँ हैं, परन्तु इसका शतांश भी वे लाभदायक नहीं होतीं। यदि इसका सेवन करते समय, छोटी इलायची १०, बादाम की मींग दो तोला तथा सौंफ १ तो० सब को एकत्र पीस छान कर और उसमें शुद्ध खांड डाल कर, आध पाव जल में ठंडाई बना कर संध्या के समय पीवे और यथेष्ट आहार करे तो बलवीर्य और स्मरणशक्ति की अत्यन्त वृद्धि होती है।

("वैद्य"-से उद्धृत)

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

४९—अश्वगन्धारिष्ट नं० ४—।हिस्टीरिया, मूर्छादिनाशक।

(वैद्यराज गौरीशंकर जी आनन्द, हरीपुर)

विधि—असगंध ५ सेर, मुसली २ सेर, शतावर, मजीठ, हरड़, हल्दी, दारुहल्दी, मुलैठी, रास्ना, बिदारीकन्द, नागरमोथा, अर्जुनकी छाल, निशोथ, बालछड़, नेत्रवाला और मुनक्का प्रत्येक १-१ सेर, तथा सारिवा, श्वेतचन्दन, लालचंदन, बच और पिप्पली प्रत्येक ३२-३२ तोले, सब का यवकुट चूर्ण कर, ६ मन १६ सेर जल में भिगो, १२ घंटे के बाद क्काथ करे, ३२ सेर शेष रहने पर, छान ले, और ठंडा होने पर, शुद्ध मटके में भर, उसमें धाय के फूल १२८ तोले, शहद ३० सेर, त्रिकुटा (सोंठ, मिरच, पीपल) १६ तोले, तथा दारचीनी, इलायची, तेजपात और प्रियंगु प्रत्येक ३२-३२ तो० नागकेशर, गम्भारी के फल १६-१६ तोले, बिदारीकंद, गोखरू, ब्राह्मी, शंखपुष्पी, अतीस, काकड़ासिंगी, सौंफ और द्राक्षा (मुनक्का) प्रत्येक ८-८तोले, सब का चूर्ण कर मिलावे और १ मास तक, यथाविधि सन्धान कर रक्खे। पश्चात् छान कर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तो० से ४ तोले तक। अनुपान—सौंफ का अर्क या शुद्ध जल।

गुण—रसायन है। मूर्च्छा, वातरोग, हिस्टीरिया, बालशोष आदि में लाभकारी है।

(अ० चि० सग्रह)

नोट—यह अश्वगंधारिष्ट नं० ४, उत्तम स्वादिष्ट, एवं शीघ्र गुणदायक है।

—संपादक।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

४६—अश्वगंधारिष्ट नं० ९—प्लेग तथा ज्वरों पर लाभकारी ।

विधि—असगन्ध १ पाव, नीम की छाल १ पाव, सोंठ, मिरच, पीपल और चिरायता प्रत्येक २॥—२॥ तोले, गिलोय ५ तो०, भटकटैया की जड़ ५ तो०, बिसौंटा ५ तो० सब को एकत्र कर (अवकुट कर), १६ सेर जल में डाल कर पकावे। ३ सेर जल शेष रहने पर, अच्छी तरह मल कर छान लेवे। फिर एक कलई की हुई कढ़ाईमें डाल और उसमें आधसेर शहद मिलाकर पकावे। जब पक कर दो सेर प्रमाण शेष रह जाय, तब उतार कर छान लेवे और उसमें १००/० (प्रतिशत १० के प्रमाण से) रेक्टि-फाइड स्प्रिट मिला, बोतलों में भर कर एक मास तक रखा रहने देवे।

मात्रा—१० बूंद से आधा तोला तक। अनुपान जल।

गुण—कैसा ही प्लेग क्यों न हो, दूर हो जाता है। प्लेग के मौसम में १०—१५ बूंद नित्य सेवन करते रहने से, उसके आक्रमण का भय नहीं रहता। इसके द्वारा मलेरिया ज्वर तथा अन्य सब प्रकार के ज्वर, शीतज्वर, सन्निपात आदि भी दूर होते हैं।

("वैद्य" से उद्धृत)

४७—अश्वत्थारिष्ट—(स्वकृत) कुष्ठनाशक।

विधि—अश्वत्थ वृक्ष (पीपल) की ताजी छाल ५ सेर और खैर की छाल २॥ सेर, कूट कर, १ मन १२ सेर जल में क्वाथ करे। चतुर्थांश अर्थात् १३ सेर जल शेष रहने पर, छान लेवे, और उसमें—धाय के फूल, हरड़, बहेड़ा, आमला, सोंठ, काली मिरच, पीपल, हल्दी, दारुहल्दी, नागरमोथा और गिलोय

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

प्रत्येक ३२-३२ तोले सब का चूर्ण कर मिट्टी के चिकने पात्र में भर, यथा योग्य सन्धान कर, एक महीने तक रक्खा रहने देवे पश्चात् छान कर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ से ४ तोले तक। जल के साथ देवे !

गुण—महाकुष्ठ तथा साधारण कुष्ठ दूर होकर शरीर कांतिमान होता है। अर्श, भगंदर, प्रमेह, कास, श्वास और क्षय पर भी यह लाभदायक है।

---

* ४८ अष्टशतोऽरिष्ट—शोथादि नाशक।

विधि—खम्भारी (गंभारी) के फल, आमला, कालीमिरच, हरड़, बहेड़ा, मुनक्का, पीपल और पुराना गुड़ प्रत्येक ५—५ सेर लेकर जवकुट कर १३ सेर जल मिला, पुराने चिकने मट के में शहद का लेप कर, भर देवे।

नोट—इसमें जल का प्रमाण बहुत कम होता है।

---

* काश्मर्य धात्री मरिचाभयाक्ष द्राक्षाफलानां च स पिप्पलीनाम्। शतं शतं जीर्ण गुडात्तुलां च संक्षुद्यकुम्भेमधुनाप्रलिप्ते ॥ स प्ताहमुष्णे द्विगुण तु शीते स्थितं जलद्रोणयुतं पिबेत्। शोफान्विबन्धान्कफवातजांश्च स हन्त्यरिष्टोऽष्टशतोऽग्निकृच्च ॥ (चरक)

नोट—कहीं २ 'द्राक्षाफलानां' के स्थान पर 'क्षुद्राफलानां' पाठ है। यदि क्षुद्राफळ (भटकटैया) कटेरी के फल लिये जांय, तब तो इस प्रयोग में गुड़ के साथ शहद भी मिलाना योग्य है (२॥ सेर पुराना गुड़ और २॥ सेर शहद मिलावें) इसके समर्थन में हमें एक पाठान्तर भी मिला है "शतं शतं क्षौद्रगुडात् पुराणात्तुलातु कुम्भे मधुना प्रलिप्ते ॥"

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

यदि जल ७ सेर (१ मन ३८ सेर मिलाया जाय तो ठीक आसव क्रिया होती है। इसे अरिष्ट के बजाय आसव ही कहना योग्य हैं।

उक्त मटके का यथा योग्य संधान कर रक्खे। ग्रीष्म ऋतु में ७ दिन तथा शीतकाल में १४ दिन रक्खे रहने से यह आसव तैयार होजाता है।

मात्रा—१ तो० से २ तोले तक।

गुण—सूजन .कब्जी तथा कफ वातज रोगों का नाश कर, अग्नि को प्रदीप्त करता है इसे 'काश्मर्याद्यरिष्ट' (काश्मर्याद्यासव) भी कहते हैं।

---

* ४९ अस्रहरारिष्ट—क्षय पर अपूर्व लाभदायक।

विधि—विशल्यकर्णी (निर्विषी) का स्वरस (इसके अभाव में कोई २ मजीठ का स्वरस लेते हैं) और मृतसंजीवनी सुरा दोनों समभाग (कम से कम दोनों ४-४ तोले) लेकर, चिकने चीनी मिट्टी के पात्र में अथवा शीशी में भर, पात्र के मुख को अच्छी तरह मिट्टी से बन्द कर ७ दिन तक, रक्खा रहने देवे। पश्चात् मोटे वस्त्र से छानकर शीशी में यत्न से रक्खे।

---

* अस्रघ्नीस्वरसं चैव मृतसंजीवनी तथा। पलमेकं समादाय प्रत्येकं मानतो भिषक्॥ मृदालिप्तमुखे भाण्डे स्थापयेत्सप्तवासरान्। ततः स्थूलपटापूतः क्षोतलेन जलेन च॥ सेव्यो माषमितो नित्यं यामे यामे प्रयत्नतः। उरःक्षतं रक्तपित्त कासरक्तातिसारकम्॥ नाशयेद् राजयक्ष्माणं रक्तप्रदरमेव च॥

—भैषज्य रत्नावली।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मात्रा—५ बून्द से २० बूंद तक, अथवा अधिक से अधिक १ मासा तक, शीतल जल के साथ, एक २ प्रहर के बाद सेवन करावे। बच्चों को १ से २ बूंद तक देवे।

गुण—उरःक्षत, खांसी, रक्तातिसार, रक्तप्रदर और राजयक्ष्मा नष्ट होता है।

नोट—यदि 'मृतसंजीवनी सुरा' न प्राप्त हो तो निर्विषी के जवकुट किये हुये १ भाग चूर्ण में 'अल्कोहळ'—मद्य (जिसमें ४० से ६० प्रतिशत मद्य हो) ४ भाग मिळा, चीनी या कांच के पात्र में मुख मुद्रा कर ७ दिन तक रक्खा रहने देवें, पश्चात् बनात या फळालैन में छान शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—१० से ३० बूंद तक बड़ों के लिये, छोटे बच्चों को कम मात्रा में देवे।

इसके सेवन से उरःक्षत, रक्तपित्त, यक्ष्मा, कास, रक्तप्रदर, रक्तातिसार तथा अनेक प्रकार के स्थावर और जंगम विष, रोगों में बड़ा लाभ होता है। इसे आवश्यकतानुसार उरःक्षत, रक्तपित्त, यक्ष्मा और कासादि, फुफ्फुस रोगों में वासारिष्ट, द्राक्षारिष्ट, उशीरासव तथा कूष्माण्डासवादि के साथ, और रक्तातिसार में कुटजारिष्ट के साथ तथा विष रोगों में शिरीषारिष्ट के साथ मिला कर भी दे सकते हैं।

---

* ९० अहिफेनासव—हैजे पर रामबाण।

* तुलां मधूक मद्यस्य शुभे भाण्डे परिक्षिपेत् । फणिफेनस्य कुडवं मुस्तकं पलसम्मितम् ॥ जातीफलञ्चेन्द्रयवं तथैलां तत्र दापयेत् । रुद्ध्वा भाण्डं मासमात्रं यत्नतः परिरक्षयेत् ॥ हन्त्यतीसारमत्युग्रं विषूचीमपि दारुणाम् ॥

—भैषज्य रत्नावली

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विधि—महुवे की शराब (सुरा या मद्य) ५ सेर, अफीम १६ तोले, नागरमोथा, जायफल, इन्द्रजौ और बड़ी इलायची के दाने प्रत्येक ४-४ तोले लेकर, सब का यथाविधि चूर्ण कर, एवं एकत्र मिला, शुद्ध मटके में (चीनी मिट्टी के पात्र में) भरे। अच्छी तरह सन्धान कर एक मास तक सुरक्षित रक्खे।

मात्रा—२ बूंद से १० बूंद तक, शहद अथवा जल के साथ सेवन करावे।

गुण—अत्यन्त प्रबल अतिसार (पेचिश) तथा दारुण, भयंकर विषूचिका (हैजा) को शीघ्र दूर करता है। मधुमेह के उपसर्ग तथा शर्करामेह को भी यह शीघ्र भगाता है।

नोट—इसआसव के लिये उक्त सुरा (शराब) ऐसी होनी चाहिये। जिसमें ७० से ८० प्रतिशत तक मद्य हो। इसकी सन्धानावधि कम से कम ७ दिन और ज्यादा से ज्यादा १ मास है। सत्वों के संघोलनार्थ पात्र को बीच २ में हिलाते रहना चाहिये।

अवधि के समाप्त होने पर किसी वनात या फलालेन की चलनी से छान शीशियों में भर कर रख दे। इसकी मात्रा युवावस्था वालों को १५ से ६० बूंद तक और बालक तथा वृद्धों को २ से १५ या ३० बूंद तक दे सकते हैं।

अतिसार, आमातिसार, रक्तातिसार, ज्वरातिसार और अन्त्रशूलादि उदर रोगों पर आवश्यकतानुसार अहिफेनासव को यदि मुस्तकारिष्ट, कुटजारिष्ट, बिजयासव, कर्पूरासव या सुदर्शनासव के साथ मिला कर सेवन कराया जाय तो इसकी प्रथम मात्रा ही अपना पूर्ण चमत्कार दिखलाती है। जिन

Digitization by American Academy of Indic Studies: AAIS(USA)

रोगियों को अनेक बार थोड़ा २ दस्त होता हो, उन्हें प्रातः सायं इसकी ५ या १० बूंदें गर्म जल के साथ, विचारपूर्वक देने से शीघ्र लाभ होता है।

विशूचिका (हैजा) की प्रथमावस्था में इसे कर्पूरासव और मुस्तकारिष्ट के साथ मिलाकर सेवन कराने से बड़ा लाभ होता है।

शुष्क कास पर इसे वासारिष्ट के साथ देने से तत्काल लाभ होता है।

प्रत्येक स्थान के शूल, अनिद्रा, वेदना और कहक के लिये इसका सेवन विशेष लाभदायक है। इन रोगों में इसे यदि विजयासव या 'पारसिक यवान्यासव' के साथ मिलाकर दिया जाय तो तत्काल वेदना कम होकर, रोगी को आनन्द की नींद आती है।

यह पित्तनाशक है, अतएव पित्त से सम्बन्ध रखने वाले, उदर रोगों में इसके सेवन से बड़ा लाभ होता है। ऊर्ध्वग रक्तपित्त पर–इसकी ५ बूंदें, शुद्ध फटकरी ५ रत्ती और जल २॥ तोले मिश्रण कर थोड़ा २ पिलावे और कुरले करावे।

शोथ पर–पुनर्नवारिष्ट या काकमाच्यासव के साथ मिला कर इसका सेवन लाभप्रद माना जाता है।

श्वास पर—धुस्तूरासव के साथ मिलाकर इसे देने से श्वास का दौरा तत्काल कम हो जाता है।

गर्भपात, गर्भस्राव तथा रक्तप्रदर में भी इसके सेवन से लाभ होता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मधुमेह—इसे जम्बूकासव के साथ मिलाकर देने से मधुमेह में शर्करा की मात्रा बहुत कम हो जाती है।

ध्यान रहे अहिफेन (अफीम) अत्यन्त ग्राही होती है, अतएव किसी रोग में, इसके सेवन से यदि बद्धकोष्ठ का भय हो तो इसे अरण्डी (रेंडी) के तैल के साथ मिलाकर देना चाहिये।

इसे रेंडी के शुद्ध तैल के साथ मिलाकर देने से मूत्रावरोध में विशेष लाभ होता है। ऐय्याशी से उत्पन्न हुए मूत्रावरोध पर या अधिक देर तक पानी में भीगने के कारण उत्पन्न हुई मूत्र की रुकावट पर अहिफेनासव को रेंडी के तैल में मिलाकर सेवन करावे।

५१—अहिफेनासव नं २—अतिसार और हैजानाशक।

विधि—विशुद्ध उत्तम सुरा १ सेर, अफीम २। तोले, शुद्ध कर्पूर २। तोले, इलायची, सोंठ, नागरमोथा, जायफल और सफेद अतीस प्रत्येक ७-७ माशे लेकर, महीन चूर्ण कर, सबको सुरा में मिला दे और उस पात्र का मुख अच्छी तरह बन्दकर, एक मास तक एकान्त स्थान में पड़ा रहने देवे। बाद में पात्र का मुख खोल कर, उसमें से सुरा को निकाल, साफ़ वस्त्र से एक पात्र में छान कर, शीशियों में भर ले।

मात्रा—५ से १० बूंद तक, दोषानुसार, आवश्यक अनुपान के साथ या वैसे ही सेवन करावे।

गुण—अत्यन्त प्रबल धारावत् बहते हुए अतिसार को तथा हैजे को बन्द करने में उत्तम महौषध है। किंतु एक साथ दस्त बन्द करने से होने वाले उपद्रवों का ध्यान रखना चाहिए।

(धन्वन्तरि से)

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

* ५२—अहिफेनासव नं ३—विशूचिका, अतिसारादि नाशक ।

विधि—शुद्ध अफीम ३ तोला लेकर, ५० तोले मृतसंजीवनी सुरा में डाल, कांच की शीशी में रख, मुख मुद्रा कर, ७ दिनतक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् काम में लावे।

मात्रा—रोगी के बलाबल का विचार कर, ६ बूंद से १५ बूंद तक, दोषानुसार अनुपान के साथ देवे।

गुण—हैजा, अतिसार, दन्तशूल, श्वास, कास, प्रमेह, कर्ण-शूल, अंगों का टूटना, आदि विकारों को शीघ्र नष्ट करता है।

५३—अहिफेनासव नं ४—विशूचिका नाशक।

(श्री० प० शालिग्राम जी देव शुक्ल, वैद्यशास्त्री)

विधि—अफीम १ तोला लेकर, नीबू का रस १ सेर और देशी शक्कर १ सेर, तीनों को एकत्र कर, बोतल में भर, अच्छी तरह बोतल का (अथवा चीनी मिट्टी के पात्र में भर, उसका) मुख बन्द कर, २१ दिन तक रक्खा रहने देवे। पात्र को रोज़ एकबार अच्छी तरह हिला देना चाहिये। किंतु आखिरी ७ दिन

---

* संशुद्धमहिफेनं च कर्षत्रयमितं तथा। मृत संजीवनीं चात्र पंचाशत् कर्ष सम्मितम् ॥ गृह्य काचभवायां तु कूप्यां संस्थापयेत् भिषक्। मुखे पिधानकं दत्वा दिनानि सतस्थापयेत् ॥ षड्बिन्दुभ्यां फलं दृष्ट्वा दद्यात्पंच दशावधि। यथादोषानुपानेन हन्ति वृद्धां विसूचिकाम् ॥ अतीसारं दन्तशूल श्वासं कासं प्रमेहकम्। कर्णशूलङ्गमर्दमहिफेनासवा नृणाम् ॥

—सिद्धप्रयाग भा० २।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

उसे न हिलावे। २१ दिन बाद छान कर बोतलों में भर कर रख देवे।

मात्रा—१० बूंद से ६० बूंद तक।

गुण—चाहे जैसे कै, दस्त क्यों न हों, फ़ौरन बन्द होजाते हैं।

नोट—लेखक ने, अ० योगमाला में, अतिसंक्षेप में इसे लिखा था, हमने सम्पूर्ण विधि बढ़ाकर लिख दी है। —सम्पादक।

५४—अहिफेनासव नं० ९—अतिसारादि नाशक।

विधि—अफीम १ भाग, गरम शुद्ध जल २॥ भाग और मद्यसार (६० प्रतिशत वाली) २॥ भाग, सब को एकत्र मिलाकर, बोतल में भर, दृढ़ काग लगा कर रक्खे। दो दिन बाद छानकर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—२ से १० बूंद तक।

गुण—उपर्युक्तानुसार। (औषधि-विज्ञान)

५५—अहिफेनाद्यासव—(स्वकृत)—हैजा आदि नाशक।

विधि—अफीम ३ माशे, लोवान का सत्त ३ माशे, कपूर २ माशे और सौंफ का शुद्ध तैल ३० बूंद तथा रेक्टिफाइड स्प्रिट ५० तोले सब को एकत्र मिला, कांच की शुद्ध बोतल में भर, अच्छी तरह मुख मुद्राकर, ७ दिन सुरक्षित रक्खे। पश्चात् फलालैन से छान कर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—१५ बूंद से ६० बूंद तक।

गुण—उपर्युक्तानुसार। इसे अंग्रेज़ी (ल्याटिन) में "टिंकच्यूरा क्यांफरीकंपाभिटा" कहते हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

आ

* ५६ आकारकरभासव—मुखपाक, दंतशूल पर।

विधि—१ तोला अकरकरे को जवकुट कर, उसमें ५ तोले मद्य (जिसमें ७० से ८० प्रतिशत मद्य हो) मिला, चीनी या कांच के पात्र में भर, सन्धान कर ७ से १५ दिन तक रक्खे। विशेष सर्वविधि अनंतमूलासव के समान करे।

मात्रा—१० से ३० बून्द तक।

गुण—इसके लगाने से मुख में एक प्रकार की शून्यता सी आजाती है। अतएव इससे मुखपाक और दन्तशूल में बड़ा लाभ होता है। यदि इसका अल्प मात्रा में सेवन किया जाय तो अग्निमांद्य और अरुचि में भी लाभ होता है। यह कामोत्तेजक और स्तंभक भी माना जाता है।

अश्मर्यादि मूत्र विकारों के लिये हमारा 'अकरकराद्यासव' देखिये।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

९७ आम्रासव नं० १—बल, वीर्य वर्धक ।

(श्री० विष्णुकांतजी जैन वैद्य, संपादक—'वैद्य' कृत)

विधि—अच्छे पके हुये कलमी आमका गूदा १० सेर, मुनक्का १ सेर, सेव १ सेर, नासपाती १ सेर, बादाम-गिरी १ पाव, छुआरे १ पाव, खांड़ २॥ सेर, शहद १ सेर, सब को अच्छी तरह एक मजबूत मटके में भर कर, उसमें धायके फूल ३२ तोले तथा जावित्री, जायफल, दारचीनी, लौंग, इलायची और धनिया प्रत्येक ४-४ तोले महीन चूर्ण कर डाले एवं २६ सेर जल डाल कर, यथाविधि सन्धान कर २० दिन तक रक्खा रहने देवे । पश्चात् उसका अर्क खींच लेवे । भवके के द्वारा अर्क खींचते समय एक-तोला केशर और ३ मासे कस्तूरी एकत्र मिला, पोटली में बांध कर, नीचे के मुख में, अर्थात् भवके के अन्दर के नालमुख पर इसे बांध देवे ।

नोट—यदि अर्क न खींचना हो तो वैसे ही साधारण आसव विधि से १ मास तक इसे सुरक्षित रखना चाहिये । यह भी उत्तम लाभदायक है ।

मात्रा—१ से २ तोला तक, प्रातः सायं, । दूध या जल के साथ, भोजन के बाद, सेवन करे ।

गुण—अपूर्व बल, वीर्य और कान्ति की वृद्धि होती है । भूख खूब लगती है, चित्त में प्रसन्नता उत्पन्न होती है । यह वातरोग नाशक, पुष्टि-कारक, कामोद्दीपक, आनन्ददायक तथा स्तंभक भी है ।

---

९८ आम्रासव नं० २—नवजीवन संचारक ।

(श्री हकीम गंगासहायजी पाठक)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विधि--पके हुये तथा मीठे आमका रस १ मन, गुठली निकाले हुये छुहारे, सूखे अंजीर, मुनक्का, केले की पकी फली का गूदा और फालसे प्रत्येक २-२ सेर, खांड़ ५ सेर, शहद ५ सेर, लेकर कूटने योग्य द्रव्यों को कूट पीसकर, सब को एकत्र मिला, मिट्टी के बड़े और मजबूत चिकने पात्र में भर कर, मुख बन्द कर, अनाज़ के ढेर में दबा देवे। २१ दिन बाद निकाल कर, भबके के द्वारा इसमें से २४ बोतल अर्क खींच लेवे और बोतलों का मुख बन्द करके, कुए में डाल दे, अथवा पानी के कुण्ड में रख दे। ७ दिन बाद निकालकर काम में लावे।

मात्रा—५ तोले से १० तोले तक, दोनों समय, भोजन से पहले सेवन करे। अभ्यास के बाद इसे अधिक मात्रा में भी सेवन कर सकते हैं।

गुण—यह एक अद्भुत चीज़ है। यदि बल हो तो १ साल लगातार सेवन करके देखिये, नया जीवन आजावेगा।

(धन्वन्तरि—बूटीचित्राङ्क)

---

५८ आम्रासव (टिंचर)—फोड़ा, फुंसी नाशक।

(हकीम पं० गंगासहायजी पाठक)

विधि—आमके कच्चे फलों को जिनमें गुठली सख्त न हुई हो कुचल कर, मोटे कपड़े में डालकर, रस निचोड़ लेवे। जितना यह रस हो उसका चौथाई भाग मेथोलिटिड़ स्पिरिट या खालिस देशी शराब मिलाकर, शीशे, या चीनी मिट्टी के

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पात्र में भर रक्खे। तीसरे दिन से यह लगाने लायक हो जाता है।

गुण—दाद, चुंबल जो कि बरसों से तङ्ग कर रहे हों और जिस्म को अपना घर बना बैठे हों, इसके लगाने से दूर होजाते हैं। गहरे से गहरे नासूर भी इसे दिन में दो बार लगाते रहने से दूर होजाते हैं। यह निहायत तेज़ दवा है, इसलिये ज़ख्मों पर बहुत लगती है, दिन में दो बार इसी प्रकार (रुई की फुरहरी से) लगाते रहने से फूटे हुये कंठमाला, भगन्दर, पुराने से पुराने मुग़लई फोड़े आदि जड़ से दूर होजाते हैं। पर अर्शके मस्सों पर सावधानी से लगावे, ताकि दूसरी जगह न लगजावे। इससे मस्से भी सूखजाते हैं।

(धन्वन्तरि)

---

६० आमलकासव—प्रमेहनाशक।

विधि—आमले की छाल का क्वाथ कर रस छान लेवे अथवा कूटकर स्वरस निकाले, फिर आमले की पत्तियों को कूटकर जल योग से रस निकाले और आमलों को भी कूटकर स्वरस निकाले। इन तीनों स्वरसों को समभाग लेकर, कलईदार पात्र में पकावे। जब आधा शेष रहजावे तब उसे शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें अर्धभाग शहद, और धायके पुष्पों का चूर्ण अंदाज से मिला कर, पात्र का मख अच्छी तरह बन्द कर, ७ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर काम में लावे।

मात्रा—३ माशे से १॥ तोले तक। ऊपर से धारोष्ण गौ दुग्ध पिलावे।

Digitization by American Academy of Indic Studies: AAIS(USA)

गुण—प्रमेह और मधुमेह को शर्तिया दूर करता है। किंतु रोगी पथ्य से रहे और व्यायाम करता रहे।

(अ० योगमाला)

आमलक्यारिष्ट—देखिये, धाव्यरिष्ट।

६१ आयुर्वेदिक सालसा—रक्त शोधक।

विधि—अनन्तमूल आध सेर, कौंच के बीज आध सेर, उसबा, डीकामाली, छोटी हरड़, सरफोंके की जड़, ब्रह्मदण्डी बूंटी और नीम की छाल प्रत्येक १०-१० तोले तथा चिरायता मुलैठी, मकोय, इन्द्रायन की जड़, भटकटैया की जड़ और कचनार की छाल प्रत्येक ५-५ तोले तथा गुलाब के फूल की कलियाँ, बड़े गोखरू, बड़ी हरड़, धनिया, कासनी, लौंग, सौंफ, बड़ी इलायची, दारचीनी और ईसबगोल प्रत्येक ३-३ तोले तथा चोबचीनी, पद्मकाष्ठ और कासमर्द प्रत्येक २-२ तोले एवं अजमोद, कालीमुसली, तुख्म बालंगा, रेवन्दचीनी, बीहीदाना, तालमखाना, प्रत्येक १॥—१॥ तोले और कालादाना, शीरेख़िस्त, तेजपात, बीजबन्द, सालममिश्री, जावित्री, हरड़, बहेड़ा और आमला प्रत्येक १-१ तोला, रक्तचंदन ६ तोले, इन सब द्रव्यों को कूट कर, चौगुने जल (१२ सेर) में डाल देवें, उसी में ३ सेर गुड़ और एक सेर शहद मिला, पात्र का यथाविधि सन्धान कर, जमीन में गाड़ देवे, तथा ४० दिन बाद निकाल भवके के द्वारा अर्क निकाल लेवे।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक, चौथाई मधु मिलाकर प्रातः सायं सेवन करावे।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

गुण—पूर्णतया रक्त को शुद्ध करता है। हजारों प्रकार के सालसों के गुण इसके सामने हेच हैं।

(अ० योगमाला)

आयुर्वेदिक सालसा नं २—देखिये, अनन्तमूलाद्यरिष्ट।

६२—आरग्वधासव—(मन्यान कुसुद)—श्वास रोग नाशक।

(वैद्यराज श्री उमादत्त जी मिश्र, मिर्जापुर)

विधि—अमलतास के फूल ४०० नग और पान (देशी पान या मगही या केताकी) का स्वरस ४० तोले, एकत्र शुद्ध मटके में भर, २४ घंटे रखने के बाद, मसल कर, साफ़ वस्त्र से छान, चीनी मिट्टी के पात्र में भर कर, उसमें अर्क गावज़ुवाँ, अर्क मकाय, अर्क मुलैठी, अर्क चिरायता और अर्क दशमूल प्रत्येक २५ प्रतिशत वाले अर्क (देखो नोट अरविन्दासव नं० २) आध—आध सेर, तथा मिश्री १॥ सेर मिलाकर, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छान कर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से २॥ तोले तक। अनुपान-शीतल जल के साथ, २४ घंटे में ४ बार सेवन करावे।

गुण—श्वास रोग की सर्वदशाओं में लाभदायक है।

६३—आरग्वधारिष्ट—उदर रोग नाशक।

(श्री० पं० कैलाशनाथ जी शर्मा)

विधि—अमलतास का गूदा १ सेर दंती (जमालगोटे की जड़) १ सेर, लेकर, प्रथम ३२ सेर जल में दंती का क्वाथ बनावे,

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

जब चौथाई शेष रह जाय, तब छानकर उसी शुद्ध चिकने मटके में भर उस में उक्त अमलतास का गूदा, गुड़ १ सेर, तथा धाय के फूल, मिरच, सोंठ और पीपल प्रत्येक का चूर्ण ५-५ तोले मिलाकर, पात्र का मुख सन्धान कर, जमीन में गाड़ देवे। एक मास के बाद निकाल और छानकर बोतलों में भरकर रख दे।

मात्रा—१ से २॥ तोले तक। प्रातः सायं।

गुण—उत्तम रेचक है, कोष्ठ साफ़ करता है, उदर, गुल्म, प्रमेह, उदावर्त आदि के लिये विशेष लाभदायक है। बहुपरीक्षित है। इसके साथ में नारायण चूर्ण का सेवन कराने से चाहे जैसा उदर रोग हो, शीघ्र दूर हो जाता है।

(धन्वन्तरि, बूंटी-चित्रांक)

---

६४ आरोग्यामृतासव—वीर्यवर्धक, नपुंसकता नाशक।

(वैद्यराज लक्ष्मीनारायणजी कृत)

विधि—प्रथम मिट्टी के नवीन मटके को जामुन के नवीन पत्तों के क्वाथ से अच्छी तरह धोकर उसके भीतर लाख का रंग पोत दीजिये। फिर उसे खांड और अगर की धूनी देकर ज़मीन में गाड़ दीजिये। आधा मटका जमीन के भीतर और आधा बाहर रहे और सूर्य की धूप व चन्द्रमा की चांदनी भी उस पर पड़ती रहे। पश्चात् उस मटके में धायके नवीन फूल साफ़ किये हुये ७ छटाँक, सुपारी मानिकचन्दी कुटी हुई १० छटाँक, खैरसार १० छटाँक (खैरसार के अभाव में साफ़ किया हुआ कत्था लेवे) और पान उत्तम-देशी पके हुये पीसकर १५०० लेवे, शहद-देशी १। सेर, अंगूर ताजे मथे हुये २॥ सेर, ताजा

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कुए का जल ४ सेर, कंकोल दो छटाँक, छोटी पीपल दो छटाँक, तथा जायफल, इलायची, लौंग, दारचीनी, तेजपात, असली, नागकेशर, जावित्री, केशर, वायबिडंग और चित्रक प्रत्येक २-२ तोले लेकर, सब को जवकुट कर, मटके में डाल देवे। और तीन दिन तक मल मल कर हिलाते रहें। जब सब चीजें एक रस होजाँय और उसमें शब्द होने लगे तब उसमें उत्तम गुड़ ४ सेर, देशी खाँड सफेद ४ सेर, जल १६ सेर में अच्छी तरह घोल कर और आंच पर गर्म करके डाल दें, तथा मुख बंद कर रख देवे। एक मास के बाद छान कर बोतलों में भर कर रख ले। इसका रंग, सुगन्ध व स्वाद अत्युत्तम होगा।

व्यवहार—मात्रा एक २ तोला, प्रातः सायं, भोजनोपरान्त।

गुण—इससे भोजन अच्छी तरह पचता है, भूख बढ़ती है, शीतकाल में होने वाले रोग, कफ, खाँसी, जुकाम, समस्त वात कफ से होने वाले रोग, तथा धातु सम्बन्धी रोग, जैसे-प्रमेह, नपुंसकता, आदि नष्ट होकर शुक्र की वृद्धि होती है। वृद्धावस्था में होने वाले रोग, अथवा किसी प्रकार से आई हुई कमज़ोरी, जैसे कमर का दर्द, बहुमूत्र, घुटनों का दर्द, अर्श आदि नाशक है। एक वर्ष पर्यन्त सेवन करें तो कायाकल्प सा हो जाता है।

(धन्वन्तरि से उद्धृत)।

---

६९ आर्द्रकाद्यासव—(स्वकृत) उदर रोग नाशक।

विधि—अदरख का रस १ सेर, ग्वारपाठे का रस १ सेर और शहद असली १ सेर, किसी उत्तम चिकने मटके में भर, उसमें

Digitization by American Academy of Indic Studies AAIS(USA)

धाय के फूल १० छटांक, पीपलामूल, छोटी पीपल, लाल चीते की जड़ की छाल, अपामार्ग की जड़, जवाखार, सज्जीखार, पांचो नमक, सरफोंके की जड़ और अजवायन प्रत्येक २-२ तोले, महीन चूर्ण कर मिलावें यथाविधि मुखमुद्रा-सन्धान कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर शीशी में भर कर रख दे।

मात्रा—२ माशे से दो तोले तक, शक्ति एवं अवस्थानुसार जल में मिला कर देवे।

गुण—समस्त उदर रोग, गुल्म, प्लीहा, शूल, आध्मान आदि शीघ्र दूर होते हैं।

---

६६ आर्द्रकाद्यासव नं० २—उदर व्याधि पर।

विधि—अदरख का रस, नीबू का रस, घी कुवार के गूदे का रस, असली शहद, चारों को समभाग लेकर किसी शुद्ध कांच की भरनी में भर कर और अच्छी तरह उसका मुख संधान कर १० दिन तक धूप में रक्खा रहने देवे। पश्चात् उसे छान कर दूसरी शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तो० से २ तोले तक।

गुण—पेट का अफारा, शूल, गुड़गुड़ाहट, जी मिचलाना, जलन, वमन, यकृत और प्लीहा के विकार नष्ट होते हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

६७ * आवर्तक्याद्यासव—दद्रु नाशक।

विधि--सनाय की जड़ ३२ तोले, एलुआ ६ तो० (कोई २ 'इलायची' लेते हैं, किन्तु 'एलुआ' यहाँ शीघ्र इष्ट फलदायक होता है), रूमी मस्तगी दो तोले, रेवन्दचीनी दो तोले (कोई २ 'नागकेशर' लेते हैं, किन्तु हम रेवन्दचीनी ही डालना पसन्द करते हैं) और जल १३ सेर एकत्र मटके में भरे। इसमें शहद २॥ सेर तक अवश्य मिला देवे, नहीं तो आसव-क्रिया ठीक न होगी। मटके का मुख अच्छी तरह सन्धान कर रक्खे। यह ३ दिन में ही सेवन योग्य होजाता है। ३ दिन के बाद थोड़ा २ छानकर पिलाना चाहिए।

मात्रा—१ से ४ तोले तक।

गुण—कमर का दाद, दो मास में दूर होजाता है।

---

* नेत्रभेषजाशिफापलाष्टकं सार्धसैलपळमर्धमस्तकीम्। हेमजार्धपलमेकतः कृतं द्रोणवारिमिलितं दिनत्रयम्॥ यः पिबेद् द्विपळकं दिनोदये नीरमस्तसमये समाहितः। तस्य नश्यति कटिसमुद्भवं दद्रु मास युगलेन निश्चितम्॥

—गदानिग्रहे।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

इ

६८ इन्द्रयवाद्यासव—(स्वकृत) अतिसारादि नाशक।

विधि—इन्द्रजौ का चूर्ण ५ सेर और गुड़ १० सेर एकत्र, ३६ सेर जल में घोलकर, चिकने मटके में रख, उसमें-शहद २॥ सेर तथा धाय के फूल १३ छटांक, नागरमोथा, बेलगिरी, पठानीलोध और नागकेशर प्रत्येक ४-४ तोले महीन चूर्ण कर मिला देवे। अच्छी तरह सन्धान कर १ मास तक रखा रहने देवे। पश्चात् छानकर बोतलों में भरकर रख दे।

मात्रा—१ तो० से २ तो० तक, जल के साथ।

गुण—सब प्रकार के अतिसार तथा पांडु और कामला नाशक है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

६९ इन्द्रयणाद्यासव नं० २—(स्वकृत) प्रमेहादि नाशक।

विधि—इन्द्रजौ, हल्दी, दारुहल्दी, मजीठ, रास्ना, नागरमोथा, दन्तीमूल, सिरस की छाल, अर्जुन की छाल और वायविडंग प्रत्येक एक एक सेर, गिलोय, श्वेतचन्दन कुड़े की छाल और वांसे की जड़ आध आध सेर लेकर जवकुट कर, उत्तम शुद्ध मटके में भर उसमें २६ सेर जल डाल कर खूब अच्छी तरह मिला देवे। फिर उसमें धाय के फूल १३ छटांक, शहद १० सेर, दारचीनी, इलायची, पत्रज और नागकेशर प्रत्येक ८-८ तोले महीन चूर्ण कर मिलावे। अच्छी तरह मुख मुद्रा एवं सन्धान कर ४० दिन पड़ा रहने देवे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर सुरक्षित कर रक्खे।

मात्रा—१ तोले से २ तोले तक।

गुण—प्रमेह, वायु रोग, बवासीर, संग्रहणी तथा मूत्रकृच्छ्र को नष्ट करता है।

७०—इन्द्रवारुण्यासव नं० १—कफ, श्वास नाशक।

(श्री० मोहनलाल जी आयुर्वेद विशारद, हरसोर)

विधि—इन्द्रायण का एक बड़े से बड़ा पका फल लेकर, उस में युक्तिपूर्वक छिद्र करके, अन्दर की गिरी और बीजों को एक लोह सलाक से मन्थन करे। जब अन्दर का सब भाग ढीला हो जाय, तब उसके अन्दर उत्तम बनारसी शक्कर जितनी आ सके भर कर, छिद्र का मुख बन्द कर, ऊपर से ७ कपरौटी कर, सुखा कर, कूड़े करकट के ढेर में दबा देवे। ८ दिन के बाद उसे निकाल कर, शुद्ध शीशी में अन्दर का अर्क चुआ लेवे। २४ घंटे बाद नितार कर काम में लावे।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मात्रा—६ माशे से १॥ तो० तक, रोग के बलानुसार देवे। अनुपान-दूध, या शक्कर।

गुण—कफ़, श्वास, कास के लिये रामबाण है, इससे जुलाब होते हैं। यदि ज्यादा दस्त हों तो घी खिचड़ी खावे, विरेचन द्वारा यह कफ को निकाल बाहर करता है।

---

७१ इन्द्रवारुण्यासव नं० २—यकृत, प्लीहादि विकार नाशक।

(आयुर्वेदज्ञ आर० के० शर्मा रसायनाचार्य, जगराओं-पंजाब)

विधि—इन्द्रायण के फल २० सेर लेकर टुकड़े २ कर शुद्ध चिकने मटके में कर उसमें ५ सेर गुड़ को ३० सेर जल में घोल कर मिलावे और पात्र का मुख सन्धान कर २१ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१॥ तोला तक। प्रातः सायं।

गुण—यकृत, प्लीहा, जलोदर, कृमि, गुल्म, बिवन्ध (कोष्ठ बद्धता), ज्वर, उदरशूल और आमवात पर अत्यन्त लाभप्रद है।

---

७२ इन्द्रवारुण्याद्यारिष्ट नं० १—(स्वकृत) प्रमेहादि नाशक।

विधि—इन्द्रायन के फल २॥ सेर तथा इन्द्रायन की जड़ का चूर्ण १ सेर (फल छोटी इन्द्रायन के लेवे, जो छोटे २ कचरियों जैसे और खूब बीजों वाले तथा विशेष लाल नहीं होते और जड़, बड़े अथवा छोटे फल वाले किसी भी, इन्द्रायन की ले सकते हैं) लेकर, फलों को खूब महीन कतर कर तथा उसी में चूर्ण मिला, १ मन १२ सेर जल में पकावे, जब १३ सेर जल

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

शेष रहे तब छानकर, उसमें-शहद ५ सेर तथा पोहकरमूल, लोध, बड़ी इलायची, हरड़, बहेड़ा, आमला, हल्दी, दारुहल्दी, अतीस, पाठा, प्रियंगु, तगर और वायविडङ्ग प्रत्येक ४-४ तोले तथा धाय के फूल १३ छटाँक चूर्ण कर मिलावे। अच्छी तरह सन्धान कर १ मास, बाद छानकर शीशियों में भर कर रख ले।

मात्रा—१ से २ तो० तक। अनुपान—नीबू का रस और जल एकत्र मिला लेवे।

गुण—यह अरिष्ट अपने शोधन प्रभाव द्वारा बस्तियंत्र को शुद्ध कर प्रमेह को नष्ट करता है, तथा उपदंश, पांडु, ग्रहणी, अर्श और चर्म रोगों पर भी लाभप्रद है।

---

७३ इन्द्रवारुण्याद्यरिष्ट नं० २—रक्त शोधक।

(श्री पं० अनन्तदेवजी दीक्षित, वैद्यशास्त्री)

विधि—इन्द्रायन की जड़ ४० तोले, फल २० तोले, बांस के पीले पत्र, मुण्डी, मजीठ और महादण्डी प्रत्येक २०-२० तोले, छोटी कटेरी का पञ्चाङ्ग, बकायन की छाल और निम्ब पंचांग छाल प्रत्येक ४०-४० तोले लेकर सब को जबकुट कर, १८ सेर जल में १ दिन रात भिगो कर, मंदाग्नि से पकावे। चतुर्थांश शेष रहने पर, छानकर शुद्ध चिकने मटके में भर उसमें पुराना गुड़ (३ साल का) १०० तोले मिला (मुख मुद्राकर रक्खे, १५ दिन बाद छानकर) बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—बलानुसार २ तो० से ५ तोले तक।

गुण—इसके सेवन से १-२ दस्त भी साफ होते हैं तथा फोड़े, फुन्सी, दाद, खुजली आदि समस्त रुधिर विकारों के

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

लिये यह रामबाण है। जितना रोग बलिष्ठ हो उतने ही अधिक दिन सेवन करना चाहिये। कुष्ठ रोग भी इससे दूर होजाता है। पथ्य में जौ, चना, गेंहू, मूंग और दूध देना चाहिए। शेष सब वस्तुएँ अपथ्य हैं।

---

७४ इन्द्रवारुण्याद्यरिष्ट नं० ३—रक्त शोधक।

(श्री वैद्य मोहनलालजी हरसोर)

विधि—इन्द्रायन की जड़ आध सेर, चिरायता १ पाव तथा नीम की छाल, बकायन की छाल, बबूल की छाल, गोरखमुंडी, हरड़, बहेड़ा, आमला प्रत्येक १॥-१॥ पाव, झरबेरी की छाल १ पाव, दोनों चन्दन का बुरादा १ पाव; सनाय और गुलाब पुष्प ३-३ छटाँक, रोहिड़े की छाल आध पाव लेकर जबकुट कर, १ मन जल में भिगो दे, उसी में १॥ सेर मुनक्का भी डाल देवे। ३ दिन तक भीगने के बाद सब द्रव्यों से चौगुना गुड़ मिला कढ़ाई में पकावे; आधा शेष रहने पर छानकर ठंढाकर शुद्ध मटकी में भर २। सेर शहद मिला, मुख मुद्राकर जमीन में गाढ़ देवे। ७ दिन बाद छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—रोग शक्त्यनुसार २॥ तोला तक।

गुण—रक्त को शीघ्र शुद्ध करता है, उपदंश के उपद्रवों को नष्ट करता है।

इन्द्रायनासव—देखिये, इन्द्रवारुण्यासव।

इमलीआसव—देखिये, तिन्तिड़ीकासव।

इस्पन्दासव—देखिये, हरमलासव।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

७९—इक्षुरसासव-(सिरका)—(स्वकृत) मेदोऽग्निमांद्यादिनाशक।

विधि—ईख (गन्ने) का रस १२ भाग, गुड़ १ भाग, शहद दो भाग तथा शुद्ध जल ४ भाग, एकत्र मिला चीनी मिट्टी के पात्र में अच्छी तरह संधान कर रक्खे। १ मास के बाद छान लेवे। फिर प्रत्येक दो मास के बाद छान लेना चाहिये। यह जितना पुराना होगा उतना ही तेज एवं शीघ्र गुणकारी होगा।

मात्रा—१ तो० से २ तो० तक। जल के साथ देवे।

गुण—मेदे के रोगों में इसके सेवन से विशेष लाभ होता है। ज्वर की अवस्था में जब तृष्णा की अधिकता हो तथा शरीर में विशेष दाह हो, तब १ तोला आसव में १० तोले जल मिला, थोड़ा २ पिलावे, तृष्णा कम होकर ज्वर का वेग मंद होजाता है। मूत्रकृच्छ्र में तीन माशे आसव में चौगुना जल मिला कर पिलावे। प्रत्येक ३—३ घंटे के बाद इस प्रकार पिलाने से मूत्र साफ़ होने लगता है। हैज़े (कालरा)-की अवस्था में जब मूत्र रुक जाता है, इसका सेवन लाभ दायक होता है। चेचक-मसूरिका या मंथरज्वर में जब ज्वराधिक्य के कारण शरीर लाल हो जाता है, तब इसका बाह्यप्रयोग विशेष लाभदायक होता है—एक भाग आसव (सिरका) में ३ भाग जल मिला, हलके हाथों से ज्वर—रोगी के शरीर पर लगावे, इससे ज्वर हलका पड़ जाता है तथा चेचक का उभार जोर से नहीं होने पाता, और यदि जोर का उभार हो तो इसके लगाने से खुजली आदि का कष्ट नहीं भोगना पड़ता। श्वास, कास एवं कफ के विकारों में भी उक्त बाह्य प्रलेप (विशेषतः छाती और पेट पर) करने से लाभ होता है। रक्तार्श पर उक्त प्रलेप की पट्टी मस्सों

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

पर बांधने से लाभ होता है। उसी प्रकार अकाल के गर्भस्राव के कारण, जब रक्त का स्राव विशेष होता है, तब उक्त प्रलेप की पट्टी योनि मार्ग पर धारण की जाती है।

अग्निदग्ध पर—आग से जहाँ जल गया हो, वहाँ उक्त प्रलेप की पट्टी रखने से जलन शांत होती है। इस आसव जल की पट्टी का प्रयोग जहरीले कीड़ों के दंश पर भी लाभदायक होता है। ज्वर की दशा में 'कोलन वाटर' के समान इसका उपयोग किया जा सकता है। और भी इसके कई प्रयोग हैं, जो विस्तार भय से यहाँ नहीं दिये जा सके।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

७६—ईश्वरी—आसव—ज्वर नाशक।

(श्री० पं० अनन्तदेव जी शर्मा, वैद्यशास्त्री)

विधि—ईश्वर मूल १० तो०, सूखी गिलोय १० तो० तथा चिरायता, कुटकी, लौंग और इलायची प्रत्येक ५-५ तोले, लेकर, सब को बारीक कूट पीस कर, उत्तम २॥ सेर सुरा में डालकर, कपूर ५ तोले मिला, बोतलों में भर कर दृढ़ कार्क लगा कर, ७ दिन तक सूर्य ताप में तपावे, पश्चात् फलालैन में छान कर रख लेवे, सरदीके स्थान से बचावे।

मात्रा—६ माशे से १ तोले तक, आवश्यकतानुसार, प्रातः सायं पानी में मिला कर सेवन करावे।

गुण—सब प्रकार के ज्वर शीघ्र नष्ट हो जाते हैं।

(धन्वन्तरि-बूटी चित्रांक)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

उ

उदरसुधासव—देखिये, सुधासव नं० २।

७७ उदरासव—उदररोग नाशक।

विधि—घीकुवार का गूदा (रस) ऽ।, मूली रस ऽ।, नीबू का रस ऽ।, अदरक का रस ऽ।, भुना हुआ सुहागा, नौसादर, भुना जीरा, अजवायन, फौलाद-भस्म और भुनी हींग प्रत्येक १-१ तोला, त्रिकुटा (सोंठ मिरच पीपल,)२ तो० इन सब का चूर्ण कर एक बोतल में डाल देवे। ७ दिन धूप में रक्खे। बोतल का मुख मजबूत काग लगा कर रस्सी से कस कर बांध देना चाहिये। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रख ले।

मात्रा—३ माशे से १ तोला तक।

गुण—समस्त उदर व्याधि नष्ट करने में अद्वितीय है।

(धन्वन्तरि—प्रयोगाङ्क)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

७८ उदरामृतासव नं० १—उदर रोग नाशक।

(कविराज शम्भुदत्त शर्मा, कौशिक)

विधि— सूखा पोदीना २० तो०, प्याज २० तो०, हींग १० तो०, लालमिरच ६ तो०, छोटी इलायची १० तो० और शुद्ध लहसुन १२॥ तो० (लहसुन की गिरी को साफ कर, ३ सेर गाय के मट्ठे में भिगो देवें, ७ दिन बाद छाया में सुखा लेवें, शुद्ध हो जावेगा) सब को कूट कर १२ सेर जल में ५ दिन तक भिगो रक्खे, पश्चात् भवके के द्वारा अर्क खींच कर (नीले रंग की) शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तो० से २॥ तोले तक।

गुण—आध्मान, शूल, मल—विवन्ध, मन्दाग्नि, अजीर्ण, अम्ललपित्त, परिणामशूल, आमशूल और उदर सम्बन्धी सब प्रकार के विकरों का नाशक है। जल, वायु के दोष से होने वाले विकार भी इसके सेवन से दूर होजाते हैं, दस्त साफ़ आता है और खूब भूख लगती है।

('वैद्य')

नोट—उक्त उदरामृतासव और जोरकाद्यासव नं० २ प्रत्येक १।-१। तोला एकत्र मिला, जळ २॥ तो० के साथ सेवन करने से विशेष लाभ होता है।

उदरामृतासव नं० २—देखिये, क्षुधामृतासव नं० २।

७९—उन्मत्तासव—(अर्क) पौष्टिक, वीर्य वर्धनार्थ।

(वैद्यराज बालकृष्ण जी शर्मा, भूपालकृत)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विधि—धतूरे के बीज, भांग, जावित्री, कपूर और पोस्त के डोडे प्रत्येक १०-१० तोले, खुरासानी अजवायन ६० तोले, सब का महीन चूर्ण कर, १२ सेर गो दुग्ध में मिला २४ घंटे तक संधान कर रक्खे। इसे भवके के यन्त्र में संधान करना ठीक होता है। पश्चात् नालिका यन्त्र उस पर लगा कर, मंदाग्नि पर चढ़ा अर्क खींच लेवे। प्रथम २ या ३ बोतल अर्क नं० १ जो निकले उसे अलग रक्खे, और फिर २ या ३ बोतल अर्क जो बाद में निकले वह नं० २ का अर्क जाने ।

मात्रा—आसव नं० १ को २॥ से ५ तोले तक और नं० २ को ५ से १० तोले तक, दूध में मिलाकर सेवन करे।

गुण—वीर्यवर्धक, उत्तम वाजीकरण है, तथा वीर्य स्तंभन भी इससे अच्छा होता है।

---

* ८० उशीरासव—रक्तपित्तादि नाशक।

विधि—खस, सुगन्धवाला (नेत्रवाला), लाल कमल के फूल, खम्भारी (गंभारी के फल), नीलोफर (नीलकमल),

---

* उशीरं बालकं पद्मं काश्मरीं नीलमुत्पलम्। प्रियंगुं पद्मकं लोध्रं मंजिष्ठां धन्वयासकम्॥ पाठां किरात तिक्तञ्च न्यग्रोधोदुम्बरं शठीम्। पर्पटं पुण्डरीकञ्च पटोलं कांचनारकम्। जम्बू शाल्मलि निर्यासं प्रत्येकं पल सम्मितम्। सर्वं संचूर्णितं कृत्वा द्राक्षायाः पल विंशतिम्॥ धातकीं षोडशपलां जलद्रोण द्वये क्षिपेत्। शर्करायास्तुलां दत्वा क्षौद्रस्यार्धतुलां तथा॥ मासं संस्थापयेद् भाण्डे मांसीं मरिच धूपिते। उशीरासव इत्येष रक्तपित्त विनाशनः। पांडु कुष्ठ प्रमेहार्शः कृमिशोथ हरस्तथा॥

—भैषज्य रत्नावली।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

फूलप्रियंगु, पद्माख, पठानीलोध, मजीठ, धमासा (यवासामूल), पाठामूल, चिरायता, कुटकी, बड़ की जटा (अथवा छाल), गूलर की छाल, कचूर (कपूरकचरी), पित्तपापड़ा (स्यातरा), श्वेतकमल (कोई २ कुष्ठ या कूठ लेते हैं), पटोलपत्र (परवल के पत्ते), कचनार की छाल, जामुन की अन्तर छाल और सेमर का गोंद (मोचरस) इनमें से प्रत्येक ४—४ तोले लेकर महीन चूर्ण कर लेवे और दाख (मुनक्का बीज निकाले हुए) एकसेर, धाय के फूल १३ छटांक, चीनी ५ सेर, शहद २॥ सेर तथा जल २६ सेर, सब को एकत्र कर, जटामांसी और मरिच से धूपित मिट्टी के पात्र में भर कर, यथाविधि संधान कर १ मास तक रक्खा रहने देवे। पश्चात् छान कर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा–२ से ४ तोले तक। जलके साथ मिलाकर सेवन करे।

गुण—रक्तपित्त, पांडु, कुष्ठ, प्रमेह, बवासीर, कृमिविकार, शोथ (सूजन) तथा पित्तजन्य रोगों पर अतीव लाभदायक है। कालीखांसी या पुरानी खांसी पर उशीरासव २॥ तोले, शर्बत बनफसा और अर्क गुलाब दोनों २॥ तोले एकत्र मिला, भोजन के पश्चात् रोगी को सेवन करावे शीघ्र लाभ होता है। इसे चन्दनादि चूर्ण के साथ सेवन कराने से रक्तपित्त और प्रदर पर शीघ्र लाभ होता है। आतपज्वर या लू लगने पर जब रोगी की मुखचर्या लालवर्ण की होकर, सिरदर्द हो, ज्वर-वेग एक समान रहता हो, तथा हाथ पाँवों में, नेत्रों में या सर्वाङ्ग में जलन या दाह हो तो ऐसी अवस्था में उशीरासव की एक मात्रा (दो तोला) में, त्रिभुवनकीर्तिरस १ से २ रत्ती तक

Digitization by American Academy of Indic Studies: AAIS (USA)

मिला तथा ४ तोले जल मिला दिन में ४ बार सेवन कराने से शीघ्र लाभ होता है।

---

८१ उसवासव—नं० १ (स्वकृत)—रक्तदोषनाशक।

विधि—उसवा मगरबी १ सेर लेकर, जवकुट कर १६ सेर जल में पकावे। ६ सेर जल शेष रहने पर, छानकर, शुद्ध चिकने मटके में भरे और ठंडा होने पर, उसमें मिश्री ४ सेर, शहद ३ सेर और धाय के पुष्पों का चूर्ण १ सेर मिला, अच्छी तरह मुख मुद्रा कर, २१ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रखदे। प्रत्येक बोतल में ५-५ तोले रेक्टि-फाइड स्प्रिट मिला देवे। ४ दिन बाद काम में लावे।

मात्रा—१ तो० से २॥ तोले तक।

गुण—खुजली, फोड़ा, फुंसी, जोड़ों का दर्द और रक्त विकार को दूर करता है।

८२—उसवासव नं २—रक्तशुद्धिकारक।

विधि—उसवा १ पाव लेकर, जवकुट कर, १ सेर रेक्टी-फाइड स्प्रिट में मिला, बोतल या चीनी मिट्टी के पात्र में भर कर रख दे। १५ दिन के बाद मसल छान कर बोतलों में भर कर रखदे।

मात्रा—३० बूंद से ६० बूंद तक।

गुण—फोड़ा, फुंसी, खुजली, रक्तविकार नाशक है। जोड़ के दर्द को भी दूर करता है।

(सुधानिधि)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

ए

८३ एलाद्यासव नं० १—(स्वकृत)—उदरशूल नाशक।

विधि—बड़ी इलायची के दाने, सोंठ और दारचीनी प्रत्येक दो २ तोले, तथा असली सत पोदीना, असली सत अजवायन, शुद्ध कपूर, असली केशर, असली हींग और अफीम प्रत्येक १–१ तोला लेकर, सब का चूर्ण कर, १ पौंड मद्यसार (स्प्रिट रेक्टीफाइड) में मिला, बोतल में भर, मज़बूत कार्क लगा, १५ दिन तक धूप में रक्खे। पश्चात् फिल्टर द्वारा छान-कर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—५ बून्द से १५ बूंद तक, उष्ण जल में मिलाकर देवे।

गुण—उदर के तीव्र शूल को एकदम शान्तकर देता है, इसे पीते ही ऐसा अनुभव होता है कि जैसे आग पर ठंडा जल पड़ गया हो।

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

८४ एलाद्यासव नं० २—शूल, अग्निमान्द्यादि नाशक ।

विधि—छोटी इलायची ८ तोले तथा जावित्री, दारचीनी, केशर और क्षीरकाकोली (अभाव में असगंध की जड़) प्रत्येक का चूर्ण ४–४ माशे लेकर, 'रेक्टीफाईड स्प्रिट' अथवा मद्य (७० से ८० प्रतिशत वाली) २४ तोले में मिला, बोतल में भर, दृढ़ काग लगा कर, ७ या १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे । बीच २ में हिलाते रहना चाहिये । पश्चात् फलालेन या बनात से छान लेना चाहिए ।

मात्रा—आधा माशा से ४ माशे तक ।

गुण—शूल, अग्निमान्द्य, अजीर्ण, अरुचि, अम्लपित्त और ग्रहणी आदि उदर रोगों के लिये अत्यन्त लाभप्रद है ।

(मद्यासव)

एलाद्यासव नं० ३—देखिये, सूक्ष्मैलासव ।

८५ * एलाद्यारिष्ट—विसर्प, मसूरिका आदि पर ।

---

* पंचाशत्पलमेलायाः वासायाः पलविंशतिम् । मंजिष्ठां कुटजं दन्ती गुडूचीं रजनीद्वयम् ॥ रास्ना मुशीरं मधुकं शिरीषं खदिरार्जुनौ । भूनिम्ब निम्बचन्द्रांश्च कुष्ठं मधुरिकां तथा ॥ गृहीत्वा दिक्पलोन्मित्याजलद्रोणाष्टके पचेत । द्रोणशेषे कषाये च पूते शीते विनिक्षिपेत् ॥ धातक्याः षोडशपलं माक्षिकस्य तुलात्रयम् । चातुर्जातं त्रिकटुकं चन्दनम् रक्तचन्दनम् मांसीं मुरां मुस्तकं च शैलेयं सारिवाद्वयम् । पलप्रमाणतश्चात्र क्षिप्त्वा मासं निधापयेत् ॥ एलाद्यरिष्टो हन्त्येष विसर्पांश्च मसूरिकाम् । रोमान्तिकां शीतपित्तं विस्फोटं विषमज्वरम् ॥ नाडीं व्रणं व्रणं दुष्टंकासंश्वासं च दारुणम् । भगन्दरोपदंशौ च प्रमेह पिडिकास्तथा ॥

—भैषज्य रत्नावली ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विधि—बड़ी इलायची २॥ सेर, वासा (अडूसे की छाल) १ सेर, मजीठ, इन्द्रजौ (अथवा कुड़े की छाल), दन्तीमूल, गिलोय, हल्दी, दारुहल्दी, रास्ना, खस, मुलैठी, सिरस की छाल, खैर (खदिरकाष्ठ), अर्जुन की छाल, चिरायता, नीम की छाल, चीते की जड़ कूठ और सौंफ ये प्रत्येक ४०-४० तोले (आध सेर) लेकर तथा जवकुट कर, दो मन २४ सेर जल में पकावे। जब अष्टमांश अर्थात् १३ सेर जल शेष रहे तब छानकर शुद्ध मटके में भर उसमें (ठंडा होने पर) धाय के फूल १३ छटाँक, शहद १५ सेर, दालचीनी, तेजपात, नागकेशर, छोटी इलायची, सोंठ, मिरच, पीपल, श्वेतचन्दन, लालचन्दन, जटामांसी (बालछड़), मुरामांसी (मुरमकी अथवा कपूरकचरी), नागरमोथा, सिलारस (भूरि छरीला या छैलछरीला) और अनन्तमूल (सारिवा) दोनों प्रकार का प्रत्येक ४-४ तोले महीन पीसकर मिला देवे। यथाविधि सन्धान कर १ मास तक रखा रहने देवे। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रखदे।

मात्रा—१। तोला से २॥ तोले तक। जल के साथ सेवन करावे।

गुण—विसर्प, मसूरिका (चेचक), रोमान्तिका, शीतपित्त, विस्फोटक (फोड़ा फुन्सी), विषमज्वर, नाडीव्रण (नासूर) दुष्टव्रण, दारुण खांसी और श्वास, भगन्दर, उपदंश तथा प्रमेह पिड़िकाओं को इसके सेवन से लाभ होता है।

---

८६ एलुवासव—कोष्ठबद्धता नाशक।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विधि—एलुवा १ भाग और मद्य (४० से ६० प्रतिशत वाली) ८ भाग दोनों को एकत्र कर, बोतल में भर दृढ़ काग लगा कर, ७ या १५ दिन तक रखा रहने देवे। बीच २ में हिलाते रहना चाहिये। पश्चात् फलालेन या बनात से छानकर रख लेवे।

मात्रा—आधा माशा से ४ माशे तक।

गुण—बद्धकोष्ठ (कब्जी) को शीघ्र दूर करता है। पेट की ऐंठ मरोड़ आदि दोष दूर करने के लिये इसे पारसिक यवान्यासव और शृङ्गवेरासव के साथ मिलाकर देना चाहिये। स्त्रियों के रजोरोध में भी इसके सेवन से बड़ा लाभ होता है।

(मद्यासव)

---

८७ एलुवाद्यासव—प्लीहा नाशक।

(वैद्यराज गौरीशंकरजी आनन्द)

एलुवा (मुसब्बर), लहसुन का रस, हीराकसीस और नवसादर प्रत्येक १-१ तोला लेवे। प्रथम एक बोतल में या शुद्ध चिकने मटके में—दो बार की खेंची हुई शराब १ पाव और पुराना (अंगूरी) सिरका दो तोले एकत्र मिलावे, और फिर उसमें लहसुन का रस तथा एलुवा आदि का चूर्ण मिला, पात्र का मुख बन्द कर ४० दिन तक धूप में रक्खे। इसे मटके की अपेक्षा बोतल में अच्छी तरह काग लगाकर रखना अच्छा है। ४० दिन के पश्चात् छान कर रख दे।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मात्रा—५ से २० बून्द तक। दिन में २। ३ बार, भोजन के पश्चात् सेवन करे।

गुण—प्लीहा वृद्धि को शीघ्र नष्ट करता है। बहुत उत्तम है।

(अ० चिकित्सा संग्रह)

नोट—अंगूरी सिरका जो पेशावर से आता है, उसे लेना चाहिये। ईख का सिरका भी यदि तेज हो तो डाला जा सकता है। तेजाब डालकर जो सिरका बनाया जाता है, वह भी लाभप्रद होता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

ओ३म्

८८ औदुम्बरासव—(स्वकृत) प्रदर, वीर्यविकारादि नाशक ।

विधि—कच्चे गूलर को कूट पीस कर, उसमें थोड़ा २ करके ४ सेर तक जल मिला, स्वच्छ वस्त्र में छान लेवे (गूलरों का वज़न ३ सेर तक होना चाहिये) और एक शुद्ध किये हुये मटके में डाल, उसमें मिश्री ३ सेर, धाय के फूल ८ छटाँक, मद्य (महुवे की जिसमें ७० से ८० प्रतिशत मद्य हो) १६ सेर मिला, यथा योग्य सन्धान कर १५ दिन तक रक्खे। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रखदे।

मात्रा—१० से ३० बूंद तक, जल मिला कर सेवन करावे।

गुण—दोनों प्रकार के प्रदर, तथा वीर्यस्राव को तत्काल दूर करता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

८९—औदुम्बरारिष्ट—(स्वकृत)—प्रदर, बहुमूत्रादि नाशक ।

विधि—गूलर की छाल ५ सेर और छाया शुष्क कच्चे गूलर का चूर्ण २ सेर लेकर, १ मन १२ सेर जल में पकावे। जब १३ सेर जल शेष रहे तब उसे अच्छी तरह छान कर, शुद्ध किये हुए मटके में भरे, और उसमें-धाय के फूल १३ छटांक, मिश्री २ सेर, तथा आम की गुठली की गिरी, जामुन की गुठली, बंसलोचन, पीपल की लाख, पठानी लोध, इलायची (छोटी), धनियाँ और कालीमिरच प्रत्येक ४—४ तोले, महीन चूर्ण कर मिलावे। यथाविधि सन्धानकर १५ दिन से १ मास तक रक्खे। उष्णकाल में १५ दिन में ही यह सिद्ध हो जाता है, शीतकाल में १ मास तक रखना पड़ता है। फिर छान कर बोतलों में भरकर रख दे।

मात्रा—२ से ४ तोले तक, जल के साथ।

गुण—प्रदर पर बहुत ही मुफ़ीद है। यक्ष्मा या क्षय की उस हालत में जब गले मे खराश अधिक हों, श्वास रुकता हो तथा यक्ष्मा के कीटाणु पाये जाते हों, इस अरिष्ट के सेवन से अपूर्व लाभ होता है। इससे बहुमूत्र के कई रोगी अच्छे किये हैं। वीर्यक्षीणता, स्वप्नधातुस्राव आदि वीर्य सम्बन्धी कई शिकायतें दूर हो जाती हैं।

९०—औदुम्बरारिष्ट नं० २—श्वास नाशक ।

विधि—गूलर के फल, गूलर के पत्ते और उसी की छाल प्रत्येक २—२ सेर लेकर, अध कुटा कर १३ सेर जल में पकावे।

Digitization by American Academy of Indic Studies AAIS(USA)

पकाने के पहिले ४८ घंटे तक भिगो रखना चाहिये। जब ४ सेर जल शेष रहे, तब छान कर, शुद्ध मटकी में भर देवे, और उसमें खजूर की बनी हुई खांड दानेदार ५ सेर, शहद २॥ सेर, धायके फूल, २० तोले, सोंठ, मिरच, पीपल, नागकेशर (असली), प्रत्येक का चूर्ण २-२ तोले, तथा बासा ६ माशे मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह सन्धान कर, एक मास तक रक्खे। पश्चात् छान कर बोतलों में भर कर रखदे।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक।

गुण—श्वास (दमा) को शीघ्र ही समूल नष्ट करता है।

(एक प्राचीन हस्त लिखित पुस्तक से)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

क

९१ * कङ्कोलासव नं० १—प्रमेहादि नाशक।

विधि—शीतलचीनी (कबाबचीनी) का चूर्ण एक भाग और मद्य (७० से ६० प्रतिशतवाली) ५ भाग दोनों को एकत्र कर, बोतल में भर, दृढ़ काग लगाकर, ७ दिन तक रक्खा रहने देवे। बीच में हिलाते रहना आवश्यक है। पश्चात् छानकर, बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—आधा माशे से ४ माशे तक।

गुण—मूत्रल और कीटाणु नाशक है। इसके सेवन से पूय-मेह और मूत्रकृच्छ्रादि मूत्राशय सम्बन्धी रोगों में बहुत लाभ होता है। गलक्षत, स्वरकार्कश्य, कास और अग्निमान्द्य में भी इसका प्रयोग किया जाता है।

(मद्यासव)

नोट—इसे 'सुगन्धमरिच्यासव' भी कहते हैं। कबावचीनी का मोटा चूर्ण ७ तो० तक लेकर, उसमें रेक्टिफाइडस्प्रिट ५० तो० मिला, उक्त विधि से यह तैयार किया जाता है, यह ३ दिन में ही तैयार हो जाता है। यदि स्प्रिट ५० तो० से कम होजाय तो ऊपर से और मिला कर शीशियों में भर कर रख दे। इसे अंग्रेजी (लैटिन) में 'टिंकच्यूरा-क्युबेबा' कहते हैं।

—सम्पादक।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

९२ कङ्कोलासव नं० २-(स्वकृत)-वीर्यस्राव, स्वप्नदोषादि नाशक।

विधि- शीतलचीनी (कबाबचीनी), लौंग, जायफल, नागकेशर, छोटी इलायची, अकरकरा, मुलहठी, असगंध और शतावरी प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले, शहद दो सेर, धाय के फूल आध सेर, शक्कर ५ सेर तथा जल २५ सेर, एकत्र शुद्ध मटकी में सन्धान कर रक्खे। सन्धान करते समय उसमें कपूर ४ तो० और अफीम ४ तोले एकत्र पीस कर मिला देवे। १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ माशा से १॥ तोला तक। जल के साथ।

गुण—कैसा भी वीर्यस्राव, स्वप्नदोष आदि हो इसके सेवन से शीघ्र दूर होजाता है। पित्तजन्य जो ६ प्रमेह हैं, वे भी नष्ट होजाते हैं। जो बालक सोते समय बिस्तरे पर पेशाब करते हैं, उनका मूत्र सम्बन्धी बिकार भी इससे दूर होजाता है।

कचनारारिष्ट—देखिये, काञ्चनारारिष्ट।

९३ कट्फलाद्यासवार्क—निमोनिया पर प्रभावशाली।

(वैद्यराज श्री उमंगूलालजी भिषक्, बिजनौर)

विधि—कायफल, खस, नागरमोथा, धनिया, वच, बड़ी हरड़, चिरायता, दालचीनी, भारंगी, पीपलामूल, हींग, शाहतरह, बबूल की जड़, पाढ़ की जड़, कुटकी, कचूर, पीपल, इन्द्रजौ बलामूल, काकड़ासिंगी और एरण्ड की जड़ प्रत्येक १-१ तोला और दशमूल १० तोले लेकर, सब को जवकुट कर, १२ सेर जल में भिगो देवे। २४ घन्टे के बाद क्वाथ कर, ६ सेर शेष रहने पर,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

छानकर शुद्ध चिकने मिट्टी के पात्र में भर कर, मुंह बन्द कर, जमीन में गाड़ देवे। एक मास बाद निकाल कर भवके के द्वारा इसका दो सेर अर्क खींच लेवे।

मात्रा—आधा-तोला, अनुपान दूध दो तोला।

गुण-फुफ्फुससन्निपात में जब नाड़ी और हृदय की अत्यन्त दुर्बलता हो और अकस्मात् स्वेद की अधिकता से रोगी की हालत भयंकर हो तब मकरध्वज और कस्तूरी आधी २ रत्ती इन दोनों को पीस शहद में मिला कर चटावे और ऊपर से उक्त कट्फलादि आसवार्क दो तोले की मात्रा से सम० भाग जल मिला कर पिलावे, अथवा मृतसंजीवनी सुरा पिलावे। उक्त आसवार्क को वैसे भी पिलाने से बहुत लाभ होता है।

(राकेश)

नोट—उक्त प्रयोग चिकित्सक के 'प्रयोग साहसी' में प्रकाशित है। मालूम नहीं वैद्यराज उमंगूलालजी ने इसे कैसे अपना लिया और डकार तक नहीं ली, इस आसव के गुणों के विषय में प्रयोग साहसी में लिखा है कि प्लेग पर इसके सेवन से गिल्टी बैठ जाती है, सन्निपात शांत होजाता है। इसे प्लेगहरासव भी कह सकते हैं।

---

९४ कट्फलारिष्ट—(स्वकृत)-वंध्यादोष, अतिसारादि निवारक।

विधि—कायफल वृक्ष की नवीन छाल ५ सेर लेकर जवकुट कर, १ मन १२ सेर जल मिला क्वाथ सिद्ध करे। १३ सेर जल शेष रहने पर, उसमें-मिश्री १२ सेर, शहद ६॥ सेर, धाय के फूल १३ छटाँक, दालचीनी, तेजपात, नागकेशर, छोटी इलायची और लौंग प्रत्येक ४-४ तो० मिला, ठीक २ सन्धान कर १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर शीशियों में भरकर रखदे।

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

मात्रा—१ से २॥ तोले तक। जल के साथ।

गुण—जिस स्त्री को गर्भ धारण न होता हो, उसे मासिक धर्म के उपरांत ३ दिन इसे दोनों शाम सेवन करावे और पश्चात् मैथुन कर्म करे, गर्भस्थापना होकर ईश्वर कृपा से पुत्र संतति होती है। पथ्य में स्त्री को केवल दूध भात खिलावे।

यदि कफ दोष, पाचनदोष या वातदोष के कारण सिर में दर्द हो तो इसके सेवन से शीघ्र दूर होजाता है। पाचन दोष से होने वाला धातुपात, मूत्र में सफेदी का जाना अतिसार, आध्मान (अफारा) पेट का भारीपन आदि विकार तथा शीत वायु-एवं कफ जन्य विकार इसके सेवन से शीघ्र दूर होते हैं।

तिजारी आदि विषम ज्वरों में भी इससे लाभ होता है।

कटसरैयासव—देखिये, कटसारिकासव।

९९—कटसारिकासव—(स्वकृत), शूल, कास निवारक।

विधि—कटसरैया (पियाबासा) का पंचाङ्ग (इसमें जड़ अधिक लेनी चाहिये) लगभग ५ सेर लेकर, कूट कर, १ मन १२ सेर जल में पकावे। १३ सेर क्वाथ जल शेष रहने पर अच्छी तरह निचोड़ छान कर, घृत से चिकने किये हुए मटके में भर देवे। और ठंडा हो जाने पर उसमें मिश्री ५ सेर, शहद १५ सेर, धाय के फूल १ सेर, पीपल ८ तोले, बड़ी इलायची, दालचीनी, तेजपात और नागकेशर प्रत्येक ४-४ तोले चूर्ण कर मिलावे। यथाविधि सन्धान कर १ मास तक रक्खे। पश्चात् छान कर काम में लावे।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

गुण—कमर का दर्द, रक्तविकार, और खांसी को नष्ट करता है। बच्चों की काली खांसी पर इसे थोड़ा २ चटाने से तुरन्त लाभ होता है।

नोट—इसे 'झिण्टिकासव' भी कहते हैं।

कटहरासव—देखिये, पनसासव।

* कटुकासव—मन्दाग्नि नाशक।

विधि—कुटकी ८ तोले, सन्तरे के छिलके ३ तोले, इलायची के दाने १ तोला, इनका चूर्ण कर मद्य (४० से ६० प्रतिशत वाली) १२० तोले मिला, चीनी या काँच के पात्र में भर, यथा विधि सन्धान कर ७ से १५ दिन तक रक्खा रहने देवें। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रखदे।

मात्रा—४ से ८ माशे तक। बड़ी अवस्था वाले रोगियों को शक्ति अनुसार देवें। जल मिला कर सेवन करावे।

गुण—मन्दाग्नि, अजीर्ण, अरुचि और अम्लपित्तादि रोगों में बड़ा लाभदायक है। इन रोगों में आवश्यकतानुसार इसे चित्रकाद्यासव, और विषतिन्दुकासव तथा अन्य आसवारिष्टों के साथ मिला कर प्रयोग करना चाहिये।

(मद्यासव)

---

९७ कटुकाद्यरिष्ट—(स्वकृत) यकृत, पांडु आदि नाशक।

विधि—कुटकी का चूर्ण १ सेर १० छटाँक, मुनक्का (दाख) ५० तोले नीम की छाल ४० तो०, हरड़, बहेड़ा, आमला प्रत्येक,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

द्रव्य ५-५ छटाँक लेकर जवकुट कर १ मन १२ सेर जल में क्वाथ विधि से पकावे। जब लगभग १३ सेर तक जल शेष रहे तब उसे छानकर, शुद्ध मटकीमें भरे, और फिर उसमें-गुड़ १० सेर, धाय के फूल १३ छटांक, कटुपटोलपत्र, दारुहल्दी, गिलोय, सोंठ, पीपल और बायबिडंग प्रत्येक ४-४ तोले महीन चूर्णकर मिला देवे तथा ठीक प्रकार से सन्धान कर १ मास तक रक्खा रहने देवे। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तो० से ३ तोले तक। जल के साथ।

गुण—इसके सेवन से यकृत में से पित्तस्राव ठीक २ होने लगता है, यकृत की अशक्तता, सूजन, पीड़ा आदि विकार दूर होते हैं। कामला रोग जो प्रायः यकृत में पित्त द्रव्य के अधिक संचय हो जाने से उत्पन्न होता है, इसके सेवन से शीघ्र ही दूर हो जाता है। यकृत की अशक्ति से उत्पन्न मन्दाग्नि, अतिसार, उदरशोथ, मलाश्रित वातादि विकार इससे शीघ्र दूर हो जाते हैं।

बालकों की यकृत वृद्धि पर यह रामबाणवत् कार्य करता है। प्लीहा और जलोदर का तो यह काल ही है। जलोदर में इस कटुकाद्यरिष्ट की मात्रा २ से ४ तोले तक दोनों शाम बिना जल मिलाये देवे। यदि सहन न हो तो किंचित् गाय का दूध इसमें मिलाकर देवे, यदि रोगी बहुत ही अशक्त हो तो आधी रत्ती स्वर्णचन्द्रोदय इसके साथ देवे, रोगी को केवल दूध पर ही रखना चाहिए। यह अरिष्ट कासश्वासयुक्त विषमज्वर, कफ-प्रधान-पित्तज्वर, कृमिजन्य हृद्रोग, बद्धकोष्ठता आदि रोगों को शीघ्र ही नष्ट करता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कण्टकरंजारिष्ट—देखिये, करञ्जारिष्ट।

कण्टकार्याद्यासव—देखिये, कूष्माण्डासव नं० १ और व्याघ्र्यासव

कठूमरारिष्ट—देखिये, काकोदुम्बरिकारिष्ट।

९८ कण्टकार्यरिष्ट—(स्वकृत)—कास, श्वास, मूत्रविकार आदि नाशक।

विधि—कटेरी (छोटी भट कटैया) का पंचाङ्ग ४ सेर, और अडूसे की जड़ आध सेर, खूब जवकुट कर, १ मन १२ सेर जल में पकावे। जब जल लगभग ८ या १० सेर रहे, तब उतार कर छान लेवे। और एक शुद्ध मटकी में भर, उसमें मिश्री १० सेर, शहद १५ सेर, धाय के फूल १० छटांक, छोटी पीपल, कालीमिरच, काकड़ासिंगी, कूठ और मुलैठी प्रत्येक ४-४ तोले महीन चूर्ण कर मिलावे, और यथाविधि सन्धान कर १ मास तक सुरक्षित रक्खे। फिर छान कर शीशियों में भरकर रख दे।

मात्रा—२ से ४ तो० तक।

गुण—शुष्क खांसी, क्षयकी अथवा पुरानी खांसी और श्वास पर अत्यन्त लाभ दायक है। यह शीघ्र ही कफ को निकाल देता है। वृक्क के रोग, मूत्रकृच्छ्र तथा मूत्राघात पर भी लाभदायक है। शीतला (मसूरिका) का वेग इसके सेवन से शांत होजाता है। शीतपित्त तथा साधारण खुजली भी इसके सेवन से दूर हो जाती है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

९९. कणासव—* बालरोग।

विधि—छोटी पीपल, वायविडङ्ग, नागरमोथा, मुलैठी का सत, जायफल, जाविन्त्री, काकड़ासिंगी, अतीस, केशर और कूधवच प्रत्येक १–१ तोला, कस्तूरी ४ माशे सब को कूटकर, ४० तोला उत्तम सुरा (बराण्डी) में डाल देवे, और पात्र का मुख बन्द कर ७ दिन रक्खा रहने दें, बाद को छानकर बोतल में भर कर रखले। इसकी २।३ बूंद बालकों को देने से तमाम विकार शीघ्र नष्ट होजाते हैं। यदि मूर्च्छावशात् बालक न पी सके तो 'सिरिञ्ज' द्वारा इसी का इन्जेक्शन करना चाहिये। बड़ी उत्तम औषधि है।

(धन्वन्तरि से उद्धृत)

१०० कदम्बारिष्ट—(स्वकृत) ज्वरनाशक, पौष्टिक।

विधि—कदम्ब की छाल (खास कर जमुना नदी के किनारे के कदम्ब वृक्ष की छाल विशेष गुणवर्धक होती है) ५ सेर लेकर अवकुट, कर २६ सेर जल में पकावे जब ६॥ सेर जल शेष रहे तब

---

* कणा विडङ्गम् वर मुस्तकञ्च सत्वं तथा वै मधुकस्य चापि। जातीफलं सत्वगपीहशृङ्गीघुंणाप्रिया कुङ्कुमजं वचां च ॥ १ ॥ कर्षं पृथक् चापि समस्तमेतत् दत्वाच क्षाणं मृगजं मदञ्च। प्रस्याधं मात्रां परितः प्रसन्नाम् सुरांसमादाय विनिक्षिपेच्च ॥२॥ सप्ताहमेनं परिरक्ष्य विमुद्रय मुखं पिदध्यात् भिषजग्र युक्तः। पश्चात् समुद्घाट्य पटेन पूत्वा प्रयोजयेत् बालामयेषु विद्वान् ॥ ३ ॥ कणासवोऽयं विविधान् निहन्ति, बालामयान् शीघ्रमयो प्रयुक्तः। मूर्च्छादिना पातुमयोग्यसक्के सूच्याप्रदेयं धमनीषु रक्ते ॥ ४ ॥

—काव्यतीर्थ श्री पं० रमादत्तजी शर्मा।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

उतार कर छान लेवे। शुद्ध चिकने घड़े में भर कर उसमें गुड़ १० सेर अच्छी तरह घोल देवे, और धाय के फूल ८ छटाँक, जीरा, बायबिडङ्ग, हरड़, बहेड़ा और आमला प्रत्येक का चूर्ण ४—४ तोला मिला, अच्छी तरह सन्धान कर १ मास तक सुरक्षित रक्खे, पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रखले।

मात्रा—१ से २ तो० तक।

गुण—वीर्यवर्धक, पौष्टिक, ज्वरनाशक, तथा प्लीहा, अग्नि-मांद्य, और शूल नाशक है। बच्चों का अतिसार-युक्त ज्वर, जिसमें तृष्णाधिक्य और तालु-स्थान अत्यधिक फड़कता है, इस अरिष्ट के सेवन से शीघ्र दूर होता है।

---

१०९ कनकबिंद्वरिष्ट * नं० १—कुष्ट, अर्शादि नाशक।

विधि—खैर की छाल ५ सेर को जवकुट कर १ मन १२ सेर जल में पकावे। जब १३ सेर जल शेष रहे तब छानकर, शुद्ध चिकने पात्र में भर, उसमें त्रिफला, त्रिकुटा, (सोंठ, मिरच, पीपल), बायविडङ्ग, हल्दी, नागरमोथा, बासा (अडूसा), इन्द्रजौ, दारुहल्दी, और गिलोय प्रत्येक का चूर्ण ३२-३२ तोले मिलावे। (इसमें धतूरे की जड़ की छाल ३२ तोला चूर्ण कर मिलाने

---

* खादिर कषायद्रोणं कुम्भे घृत भाविते समारोप्य। द्रव्याणि चूर्णितानि त्वष्टपलिकान्यत्र देयानि॥ त्रिफला व्योष विडंग रजनी मुस्ताटरूषकेन्द्रयव सौवर्णीच। तथा त्वक् छिन्नरुहा चेति तन्मासं निदधीत धान्यमध्येतु॥ प्रातः प्रातः पिबेत्ततो युक्त्या मासेन महाकुष्ठं हन्त्येपाऽर्श्च तु। प्रक्षेणार्शः श्वास भगन्दर कास किलास प्रमेह शोषाँश्च॥ ना भवति कनकवर्णः पीत्वारिष्टं कनक बिन्दुन्॥ —चरक।

Digitization by American Academy of Indic Studies: AAIS (USA)

से यह पूर्ण प्रभावशाली, यथानाम तथा गुणकारी होजाता है।)
पश्चात् उस पात्र का मुख बन्द कर, धान्य की राशि में गाड़ देवे। एक महीने के बाद निकाल कर, शीशियों में छानकर भर लेवे।

मात्रा—यदि इस अरिष्ट में धतूरे की जड़ की छाल न मिलाई गई हो तो, इसकी मात्रा २ से ४ तोले तक है। अन्यथा १ मासा से १ तोला तक जल के साथ सेवन करावे।

गुण—नियम पूर्वक १ मास तक नित्य प्रातःकाल इसका सेवन किया जाय तो महाकुष्ट (गलितकुष्ट) और यदि केवल १५ दिन तक इसका सेवन कराया जाय तो साधारण कुष्ट, अर्श (बवासीर), श्वास, खाँसी, भगन्दर, किलासकुष्ट, प्रमेह तथा क्षय नष्ट होजाते हैं। शरीर की कान्ति अपूर्व निर्मल, शोभायमान होजाती है।

---

१०२ कनकबिन्दुनामारिष्ट * नं० २—कुष्ट, श्वासादि नाशक।

विधि—खैर का क्वाथ १३ सेर सिद्ध करके, घी के चिकने बासन में भर कर, उसमें त्रिफला, सोंठ, मिरच, पीपल, हलदी, नागरमोथा, भिलावे, वायविडङ्ग, बावची, धतूरे की छाल,

---

* खदिर कषाय द्रोणं कुम्भे घृतभाविते समावाप्य। प्रक्षेप्याः पृथक् पलिकाः सर्वास्तु चूर्णितास्तस्मिन् ॥ १ ॥ त्रिफला त्रिकटुक रजनी मुस्ता- रुष्करविडङ्गवाकुचिकाः। सुवर्णत्वक् छिन्नरुहा धातकी मधुशतपलं मासम् ॥ २॥ विदधीतं धान्यमध्ये प्रातः प्रातः पिबेत्ततो युक्तया। मासेन महाकुष्ठं हन्त्य- नल्पश्च पक्षेणार्शः ॥ ३ ॥ श्वास भगन्दर कास किलास प्रमेह शोफांश्च। स भवति कनकवर्णः पीत्वारिष्टं कनकबिन्दुश्च ॥ ४ ॥

—योगसेब।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

गिलोय और धाय के फूल प्रत्येक का चूर्ण ४-४तोले (धाय के फूल लगभग ३२ तो० डालना अच्छा होगा) और शहद ४०० तोले डाल देवे। पात्र का मुख अच्छी तरह सन्धान कर, उसे १ मास पर्यन्त धान्यराशि में गाढ़ देवे, पश्चात् निकाल और छानकर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ मासा से १ तोला तक। २ तो० जल में मिलाकर नित्य प्रातःकाल सेवन करावे।

गुण—यह अरिष्ट १ महीने में कुष्ठ को, और १५ दिन में बवासीर को दूर कर देता है। तथा इसके सेवन से श्वास, भगन्दर, खांसी, किलासकुष्ठ, (श्वित्र कुष्ठ या सफेद कोढ़), प्रमेह और सूजन ये सब रोग शमन हो जाते हैं। जो मनुष्य इस 'कनकबिन्दुअरिष्ट' का सेवन करता है उसके शरीर की कान्ति, सुवर्ण के समान शोभायमान हो जाती है।

कनकशिरोमण्यासव—देखिये, कनकासव नं० १

१०३ कनकासव * नं० १—कास श्वासादि नाशक।

---

* संक्षुद्य कनकं शाखामूल पत्र फलैः सह। ततश्चतुष्पलं ग्राह्यं वृष-मूलस्य वल्कलं तथा ॥ १ ॥ मधुकं मागधी व्याघ्री केशरं विश्वभेषजम्। भार्ङ्गी तालीसपत्रञ्च संचूर्ण्यं पलद्वयम् ॥ २ ॥ संगृह्य धातकी प्रस्थं द्राक्षायाः पल विंशतिम्। जलद्रोणद्वयं दत्वा शर्करायास्तुलां तथा ॥ ३ ॥ क्षौद्रस्यार्ध-तुलाञ्चापि। सर्वं संमिश्र्य यत्नतः भाण्डे निक्षिप्य चावृत्य निदध्यान्मास-मात्रकम् ॥ ४ ॥ निहन्ति निखिलान् श्वासान् कासं यक्ष्माणमेव च। क्षय जीर्ण ज्वरं जीर्णी रक्तपित्तमुरः क्षतम् ॥ ५ ॥

—भैषज्य रत्नावली।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विधि—शाखा, मूल, पत्र और फल सहित कुटा हुआ धतूरा और वांसे (अडूसे) की जड़ की छाल १६–१६ तोले, मुलैठी, पीपल, कटेरी (भटकटैया), नागकेसर, सोंठ, भारंगी और तालीसपत्र प्रत्येक का चूर्ण ८–८ तोले, धाय के फूल १३ छटाँक, मुनक्का १ सेर, चीनी (खांड) ५ सेर, शहद २॥ सेर और जल २६ सेर, लेकर सब को एकत्र करके, यथाविधि सन्धान करके एक मास तक रक्खा रहने देवे। अथवा जमीन में गाड़ देवे। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—१० से ३० बूँद तक, जल में मिलाकर सेवन करावे। यदि उक्त विधि में जल दुगुना अर्थात् १ मन १२ सेर मिलाया जाय तो इसकी मात्रा १। तोला तक हो सकती है।

गुण—सब प्रकार के श्वास, खांसी, बच्चों की कुकुरखांसी या काली खांसी, राजयक्ष्मा (क्षय), क्षत-क्षीणता, जीर्णज्वर, रक्तपित्त और उरःक्षत नाशक है। इसे कनकशिरोमणिआसव भी कहते हैं। यह प्रमेहनाशक और वज्र वीर्य वर्धक भी है।

---

१०४ कनकासव नं० २—कास श्वास आदि नाशक।

(वैद्यराज पं० गौरीशंकरजी आनन्द हरिपुर)

विधि—धत्तूर पंचांग, वासा पंचाङ्ग, खिरेंटी पंचाङ्ग, दश मूल, मधुयष्टि, अर्जुन, द्राक्षा, बहेड़ा इनका यवकुट चूर्ण ४०–४० तोले लेकर, ६४ सेर जल में डाल, २४ घंटे भिगोकर काढ़ा पकावे। चौथाई भाग शेष रहने पर छान लेवे, और शुद्ध चिकने मटके में भर उसमें सोंठ, मिरच, पीपल, तेजपत्र, जटामांसी, हरड़, बहेड़ा, आमला, खुरासानी अजवायन, इलायची, तालीं-

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सपत्र, दालचीनी, नागकेशर, भारंगी, काकड़ासिंगी, पोहकरमूल, नागरमोथा, वायबिडंग, बहेड़ा, और रास्ना प्रत्येक ४-४ तोले, महीन चूर्ण कर मिलावे तथा गुड़ २ सेर, और शहद २ सेर घोलकर मिला देवे। पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तो० से ४ तोले तक। अनुपान—शर्बत बनफशा, जल मिला कर।

गुण—कास, श्वास में अत्यन्त उपयोगी है। श्वास के दौरे में लाभप्रद है।

—अ० चि० संग्रह।

---

१०९ कनकारिष्ट * नं० १—अर्श, ग्रहण्यादि नाशक।

---

* नवस्यामलकस्यैकां कुर्याज्जर्जरितां तुलाम्। कुडवांशश्च मागध्या विडंगं मरिचानि च॥ यवासः पिप्पलीमूलं (पाठां मूलं च पिप्पल्याः इति पाठः चरके) क्रमुकं चव्य चित्रकौ। मंजिष्ठैल्वालुकं लोध्रं पलिकान्युप कल्पयेत्॥ कुष्ठं दारुहरिद्रां च सुराह्वं सारिवाद्वयम्। मुस्तामिन्द्रयवांश्चैव कुर्यादर्धपलोन्मितम्। चत्वारि नागपुष्पस्य पलान्यभिनवस्य च॥ जलद्रोण द्वयेनैतत्साधयित्वावतारयेत्। द्रोणावशेषे (पादावशेषे इति चरके) पूते च शीते तस्मिन्प्रदापयेत्॥ मृद्वीकाढ्याढकरसं शीतं निर्यूहसाधितम्। शर्करायाश्च शुद्धायाः दद्यात् द्विगुणितां तुलाम्॥ कुसुमस्वरसस्यैव अर्धप्रस्थं नवस्य च। त्वगेलात्वपत्राम्बुसेव्यक्रमुककेसरान्। मतिमांश्चूर्णयित्वा तु कार्षिकान् संप्रदापयेत्॥ तत्सर्वं स्थापयेत्पक्षं शुचौ च घृत भाजने।

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

विधि—नवीन ताजे आँवले कुटे हुए ५ सेर, पीपल १६ तोले, वायविडंग, कालीमिरच, जवासा (इसके स्थान में पाठा ले सकते हैं), पीपलामूल, सुपारी, चव्य, चीता, मजीठ, एलुआ, लोध प्रत्येक ४-४ तोले (चरक के पाठानुसार वायविडंग और मिरच इसमें प्रत्येक १६-१६ तोले लिया जाता है), कूठ, दारुहल्दी, देवदारु, दोनों प्रकार की सारिवा, नागरमोथा, इन्द्र जौ ये प्रत्येक २-२ तोले और नवीन नागकेशर १६ तोले सब को एकत्र जवकुट कर, २६ सेर जल में पकावे। जब १३ सेर जल शेष रहे, तब उसे छानकर, एक शुद्ध घृत से चिकने एवं खांड तथा अगर से धूपित मटके में भर देवे। जब वह ठंडा हो जाय, तब उसमें मुनक्का का क्वाथ ६॥ सेर (इसके लिये ६॥ सेर मुनक्का लेकर, बीज निकाल २६ सेर जल में पकावे, चतुर्थांश अर्थात् ६॥ सेर जल शेष रहनेपर, छानकर डाले), उत्तम खांड १० सेर, नवीन शहद ६॥ छटांक, दालचीनी, बड़ी इलायची के दाने, भद्रमोथा, तेजपात, नेत्रवाला (सुगन्धवाला), खस, सुपारी और नागकेशर प्रत्येक का चूर्ण १-१ तो० मिलाकर पात्र के मुख को ठीक प्रकार से सन्धान कर १५ दिन तक रक्खा रहने दे। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रख ले।

प्रलिप्ते सर्पिषा किंचिच्छर्करागुरुधूपिते। पक्षादूर्ध्वमरिष्टोऽयं कनको नाम-विश्रुतः। पेयः स्वादुरसो हृद्यः प्रयोगाद्भक्तरोचकः॥ अर्शांसि ग्रहणीदोष-मानाहमुदरं ज्वरम्। हृत्पाण्डुरोगशोथांश्च गुल्मवर्चोऽनिलग्रहान्॥ कासान्कफामयांश्चोग्रान्सर्वानेवापकर्षति। वलीपलित खालित्यं दोषजं च व्यपोहति॥

—चक्रदत्त और चरक।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मात्रा—२ से ४ तोला तक। यथोचित जल मिलाकर सेवन करना चाहिए।

गुण—यह मधुर, हृदय को प्रिय, अन्न में रुचि बढ़ानेवाला अरिष्ट, बवासीर, संग्रहणी, अफारा, उदररोग, ज्वर, हृदय के विकार, पाण्डु, सूजन, गुल्म, खाँसी, कफजन्यरोग, बली (झुर्री) पलित (बालों का सफेद होना) तथा गंजनाशक है। इसके सेवन से मल तथा अपान वायु का ठीक २ निस्सरण होता है।

---

१०६ कनकारिष्ट * नं० २—कुष्ट, शोथ, प्रमेहादिनाशक।

विधि—खेर का क्वाथ १३ सेर सिद्ध कर (इसके लिये ५ सेर खैर की छाल जवकुट कर, १ मन १२ सेर जल में पकावे १३ सेर जल शेष रहने पर छान लेवे) घृत से चिकने कियेहुए मिट्टी के घड़ेमें भर, उसमें—हरड़, बहेड़ा, आमला, सोंठ, मिरच, पीपल, हलदी, निर्मली, दालचीनी, बावची, गिलोय और बायविडंग प्रत्येक का महीन चूर्ण ४-४ तोले; शहद १० सेर

---

* खदिर कषाय द्रोणं कुम्भे घृतभाविते समावाप्य। पलिकां मात्रां क्षेप्यां कृत्वा तामेव सूक्ष्मचूर्णं तु ॥ १ ॥ त्रिफला त्रिकटुक रजनी कतकत्व-ग्वाकुची गुडूच्याश्च। स विडङ्गमत्रं मधुपल शतद्वयं प्रक्षिपेत्सर्वम्॥२॥धात-कीपलान्यष्टौ क्वाथे चास्मिन्प्रदेयानि। प्रातः प्रातस्तु पिबेन्नाशयति चि-रोत्थितं कुष्टम्॥३॥मासेन सर्वरोगान्निहन्ति च शोफमेहांश्च। निर्जित कास-श्वासो गुदकीलभगन्दरैर्विनिर्मुक्तः॥४॥कनकारिष्टं प्रपिबन्भवति पुमान्कनक कान्तिश्च।

—गदनिग्रह।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

तथा धाय के फूलों का चूर्ण ३२ तोले डालकर, अच्छी तरह सन्धान कर, १५ दिन तक धान्यराशि में गाढ़ कर रक्खे। यदि धान्यराशि में न गाढ़े तो किसी सुरक्षित उष्ण स्थान में १ मास तक रक्खा रहने देवे। पश्चात् छानकर बोतलोंमें भरकर रखदे।

मात्रा—१ से ४ तोले तक, यथोचित जल के साथ मिला कर सेवन करावे।

नोट—यह 'अरिष्ट' कनकबिन्दुनाभारिष्ट नं० २ के अनुसार ही है, किन्तु गुणों में उससे सौम्य है। बालकों के लिये बहुत लाभकारी है।

गुण—इसे नित्य नियमपूर्वक प्रातःकाल सेवन करने से पुराने से पुराना कुष्ठरोग एक मास के पश्चात् नहीं रह सकता। तथा सूजन, प्रमेह, खांसी, बालकों की भयंकर काली खांसी, श्वास, बवासीर के मस्से और भगन्दर आदि समस्त रोग नष्ट होकर, शरीर कुन्दन के समान कान्तिमान हो जाता है।

---

१०७ कन्थार्यासव—(स्वकृत)—कास, श्वास नाशक।

विधि—नागफनी, थूहर के अच्छे पके हुए लाल फलों को लेकर, युक्तिपूर्वक उनके कांटों को निकाल, मोटे खादी के स्वच्छ वस्त्र में रख पोटली सी बना और दबा २ कर सब स्वरस निकाल लेवे, फिर इस रस को २। ४ बार और छानकर, मजबूत बोतल में भर या चीनी मिट्टी के पात्र में भर, अच्छी तरह दृढ़ता से मुख मुद्राकर, जमीन में एक हाथ का गड्ढा खोदकर दबा कर रक्खे। २१ दिन के बाद निकालकर काम में लावे। पुनः छानने की आवश्यकता नहीं है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मात्रा—बलाबल के अनुसार १ माशा से १॥ तोला तक। अनुपान शक्कर का शर्बत।

गुण—खांसी, काली खांसी, कुकुरखांसी और श्वास को शीघ्र नष्ट करता है। छोटे बच्चों की खांसी पर इसमें इलायची या सौंफ का चूर्ण मिला कर सेवन कराना चाहिए।

नोट—३ या ४ मास के बाद यह बिगड़ जाता है, अतएव इसमें रेक्टिफ़ाइडस्प्रिट मिलाकर रखनी चाहिए।

१०८ कपिकच्छ्वारिष्ट—(स्वकृत) वातव्याधि नाशक।

विधि—कौंच (केंवाच) की जड़ ५ सेर और कौंच के बीज ५ सेर दोनों को जबकुट कर, १ मन १२ सेर जल में पकावो। जब १३ सेर जल शेष रहे तब उसे उतार और छान कर, घी से चिकनी की हुई मटकी में भर, उसमें—गुड़ ५ सेर, शहद २॥ सेर, धाय के फूल १३ छटांक, एरंड की छाल ८ तो०, रोहिषतृण ४ तो०, रास्ना ४ तो०, और असगंध ४ तो०, महीन चूर्ण कर मिला देवे, और मटकी का मुख उत्तम प्रकार से सन्धान कर एक मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छान कर शीशियों में भरकर रख ले।

मात्रा—१ से ४ तोले तक। यथावश्यक जल या दूध अथवा रेंडी के तैल के अनुपान से देवे।

गुण—अर्धांगवात, कंपवात इत्यादि वीर्य क्षीणता जनित वातविकारों पर यह उत्तम लाभदायक है। यदि वात की अत्यन्त प्रबलता हो तो इसे रेंडी के तैल के अनुपान से देवे। ७ या १४ दिन में ही वात से जकड़ा हुआ अङ्ग वातमुक्त होकर, शरीर में चैतन्यता आती है। बस्तिगत वात पर भी यह अच्छा

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

कार्य करता है। तीव्र और जीर्णज्वर में इसके सेवन से मूत्र साफ़ होकर ज्वर, भ्रम आदि लक्षण शीघ्र दूर होते हैं।

---

१०९ कपित्थकासव—(स्वकृत) मधुमेह, बहुमूत्रादि नाशक।

विधि—कैथ वृक्ष की छाल दो सेर, उसी की (कैथ की) पत्तियाँ ३ सेर, और बेलपत्र २ सेर महीन पीसकर, हल्दी, दारुहल्दी, शीतलचीनी और अगर ४-४ तोला महीन चूर्णकर एकत्र २६ सेर जल में मिला, धूप से सुवासित शुद्ध मटके में भरे, और उसमें धाय के फूल १२ छटांक, मिश्री ५ सेर, तथा शहद ३ सेर मिला, यथाविधि सन्धान कर १ मास तक जमीन में गाड़कर रक्खे। पश्चात् निकाल और छान कर, शीशियों में भर कर रख दें।

मात्रा—१ से ४ तो० तक। यथोचित जल के साथ।

गुण—यह आसव मधुमेही के मूत्र की शर्करा को तथा बहुमूत्र रोग को शीघ्र नष्ट कर देता है। अश्मरी (पथरी) में भी लाभदायक है और शीतपित्तनाशक है।

ककारिष्ट—देखिये, वासारिष्ट।

कबाबचन्यासव—देखिये, कङ्कोलासव।

कमरखासव—देखिये, कर्मरङ्गासव।

११० करञ्जारिष्ट * नं० १—अर्श, प्लीहादि नाशक।

---

* द्रोणेऽपां पूतिवल्कद्वितुलमथपचेत्पादशेषे च तस्मिन् देयाशीति-र्गुडस्य प्रतनुकरञ्जतो व्योषतोऽष्टौ पलानि। एतन्मासेन जातं जनयति-परमामुक्षणः पक्तिशक्तिं शुक्तं कृत्वानुलोम्यं प्रजयतिगुदज प्लीह गुल्मोदराणि॥

—वाग्भट।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विधि—कराटकरंज (करंजुआ) की छाल १० सेर लेकर जवकुट कर, २६ सेर जल में पकावे। जब ६॥ सेर जल शेष रहे, तब उसे छानकर, उत्तम शुद्ध पात्र में भरे, और फिर उसमें गुड़ ४ सेर, सोंठ, मिरच, और पीपल प्रत्येक ४-४ तोले मिलावे (पाठ में त्रिकुटा ३२ तोले लिखा है, हमारे अनुभव से अत्य० धिक है, अरिष्ट अत्यन्त ही तीक्ष्ण हो जाता है) तथा धाय के फूल लगभग ५ छटांक इसमें मिला कर, ठीक २ संधान कर, १ मास तक उष्ण स्थान में सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर शीशियों में भरकर रख दे।

मात्रा—१ से २ तो० तक। यथोचित जल के साथ।

गुण—अर्श (बवासीर), प्लीहा, वायगोला, उदररोग नाशक है। और अग्नि प्रदीपक है।

---

१११ करञ्जारिष्ट नं० २—(स्वकृत)—ज्वरादि नाशक।

विधि—करंजुए के पत्ते ६ सेर, और उसी के बीजों का चूर्ण १ सेर, दोनों को १ मन १२ सेर जल में पकावे, १३ सेर जल शेष रहने पर उसे छान, शुद्ध मटकी में भर देवे। फिर उसमें-गुड़ ५ सेर, मिश्री ५ सेर, धायके फूल १३ छटाँक, सौंफ ८ तोला दारचीनी ४ तो०, छोटी पीपल ४ तो० तथा छोटी इलायची ४ तो० चूर्ण कर मिलावे। यथाविधि मुख संधान कर १ मास तक रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ से ४ तो० तक। यथोचित जल के साथ।

गुण—यह मलेरिया ज्वर को शीघ्र ही नष्ट करता है। प्लीहा, यकृतविकार तथा कोष्ठगत वात विकार को दूर करता

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

है। प्रस्वेदक और मूत्रल है। क्विनाइन मिक्चर की अपेक्षा अधिक लाभदायक है। उपदंश पर भी लाभदायक है। आन्त्र पर इसका स्तम्भनकार्य बहुत उत्तम होता है। मलेरिया के पश्चात् किसी २ रोगी को आंत्र शैथिल्य के कारण संग्रहणी विकार होजाता है, उसे यह शीघ्र ही दूर कर देता है। गर्भाशय के विकारों को भी यह दूर करता है, सूतिका ज्वर को लाभप्रद है। मासिकधर्म को साफ़ करता है। वातजन्य शूल। तथा उदर के कृमि विकारों पर भी इसका उत्तम असर होता है

---

११२ करञ्जादि अरिष्ट- * नं० ३-अर्श आदि नाशक।

विधि—करञ्जुए की छाल ५ सेर, चित्रक छाल ५ सेर और कटेरी (भटकटैया) की जड़ ५ सेर लेकर एकत्र जवकुट कर, ३= सेर ३२ तो० जल में पकावे। चौथाई भाग शेष रहने पर, छान लेवे, और घृत से चिकने किये हुए मटके में भर देवे। उसमें ५ सेर गुड़ को घोल देवे तथा दालचीनी, इलायची, तेजपात, सोंठ, मिरच, पीपल, पीपलामूल, अनार के दाने, पाषाणभेद, पोहकरमूल, धनिया, चव्य, हाऊबेर, अदरख, अम्लबेत प्रत्येक

---

* पचेत्तुला पूतिकरंज कल्कद्वि मूलतश्चित्रक कण्टकार्योः। द्रोणत्रयेऽपां चरणावशेषे पूते शतं तत्र गुडस्यदद्यात् ॥१॥ पलिकञ्च सुचूर्णितं त्रिजात त्रिकटुग्रान्थिक दाड़िमाश्म भेदम्। परपुष्करमूल धान्यचव्यं हपुषामार्द्रक-मम्लवेतसंच ॥२॥ शीतीभूतं क्षौद्रार्धप्रस्थयुपेतमार्द्रद्राक्षा बीजपूरार्द्धकैश्च ॥३॥ युक्तं कामं गण्डिकाभिस्तथेक्षोः सर्पिः पात्रे मास मात्रेण जातम्। अरिष्टं ककचामिवेदं दुर्नाम्नां वन्हिदीपनं परमम् ॥४॥ पाण्डु गरोदरगुल्म प्लीहाना-ध्मकृच्छ्रघ्नम्।

—वाग्भट।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

का चूर्ण ४-४ तो० शहद १ सेर, दाख ४० तोले, बिजौरे नीबू का गूदा ४० तोले और ईख की गंडेरियाँ इच्छानुसार मिला पात्र के यथाविधि सन्धान कर १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रखदे।

मात्रा—१ से ४ तो० तक। उचित जल के साथ।

गुण—बवासीर को शीघ्र दूर करता है, और जठराग्नि को दीपन करता है, तथा पाण्डु, जरोदर, गुल्म, प्लीहरोग, पथरी, अफारा और मूत्रकृच्छ्र नाशक है।

करंजाद्यरिष्ट नं० ४—देखिये, विषमज्वरारिष्ट।

११३ कर्पूरफेनासव—अजीर्ण, विसूचिकादिनाशक।

(कविराज पं० गौरीशंकरजी आनन्द, हरिपुर)

विधि—विशुद्ध सुरा १० सेर, अफीम ३२ तो०, कपूर ६४ तो० छोटी इलायची, नागरमोथा, जायफल, लौंग, इन्द्रजौ, सोंठ, अजवायन, कालमिरच प्रत्येक ८-८ तोले, महीन चूर्ण कर, सुरा में मिला, एक चीनी के पात्र में डालकर मुख बन्द कर रक्खे। १ मास पश्चात् निकाल कर छान लेवें।

मात्रा—५ से २० बून्द तक। अनुपान जल।

गुण—अजीर्ण, हैजा, संग्रहणी, उदरशूल, खाँसी, और श्वास में उत्तम है। बहुत गुणकारी योग है।

—अ० चि० संग्रह।

---

११४ कर्पूरासव * नं० १—विसूचिका (हैजा) नाशक।

विधि—उत्तम मद्य) रेक्टिफाइडस्पिरट अथवा मृत संजीवनी सुरा) पांच सेर लेकर, शुद्ध चीनी मिट्टी के पात्र में भर कर

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

उसमें-शुद्ध कपूर (अथवा भीमसेनी कपूर) ३२ तोले, इलायची छोटी, नागरमोथा, सोंठ, अजवायन और कालीमिरच प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले मिला, उत्तम प्रकार से मुख सन्धान कर १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—५ से २० बून्द तक। बतासा, मिश्री अथवा सौंफ के अर्क के साथ।

गुण—हैजा और अतिसार को शीघ्र ही नष्ट करता है। तथा अनेक प्रकार के उदर रोगों को भगाता है। कुचला विष का शीघ्र प्रतिकारक है, यदि किसी को कुचले के विष की बाधा हो तो इसकी २ या ३ मात्रा से ही विष बाधा दूर होती है। मूत्रावरोध पर इस आसव को पेड़ू पर मल कर सेंकने से मूत्र खुल कर आता है। यदि इतने पर भी मूत्र खुल कर न आवे तो शिश्न के मुख के अन्दर इस आसव से भिगोई हुई बत्ती को अन्दर प्रविष्ट करे· शीघ्र ही मूत्र खुलकर आवेगा। अमृतधारा या अर्ककपूर के समान भिन्न २ अनुपानों के साथ, विविध विकारों में इसका सेवन किया जा सकता है।

---

* तुलां प्रसन्नां परिगृह्य शुद्धां पलाष्टकं चोडुपतेः क्षिपेच्च । एला च सूक्ष्मा घनशृङ्गबेरै यमानिकावेल्लजमत्रसर्वम् ॥ पलप्रमाणं पिहितं च भाण्डे मासं निदध्यात् भिषगत्रयत्नात्। विषूचिकायाः परमौषधं तद्विहन्ति चान्यान् विविधान्विकारान् ॥

—भैषज्य-रत्नावली।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

११५ * कर्पूरासव नं० २—विसूचिका, अजीर्णादि-नाशक।

विधि—कपूर १ तोला, सत्वलोबान १॥ तोला, अफीम ३ माशे, सौंफ ६ माशे, इलायची ६ माशे, सोंठ ६ माशे, कालीमिरच ६ माशे, और अजवायन ६ माशे, चूर्ण कर ५० तोला मद्य (७० से ६० प्रतिशत वाली) में मिला किसी शुद्ध कांच या चीनी मिट्टी के पात्र में भर कर रख दें। ७ या १५ दिन के पश्चात् छान कर काम में लावें। मात्रा—नं० १ के अनुसार। बड़ी अवस्था वालों को २ से ४ माशे तक भी दे सकते हैं।

गुण—विसूचिका, अग्निमांद्य, अजीर्ण, अम्लपित्त, उदर शूल, अतिसार, आमातिसार, रक्तातिसार तथा श्वासकासादि रोगों में बड़ा लाभदायक है। इन्हीं रोगों से सम्बन्ध रखनेवाली अन्य औषधियों के साथ मिलाकर देने से इसकी और भी गुण-वृद्धि होजाती है। यह आसव नं० १ की अपेक्षा कुछ अधिक गुणदायक है। (मद्यासव)

---

११६ कर्पूरासव नं ३–(स्वकृत)–विसूचिका नाशक।

विधि–देशी कपूर १५ तोले लेकर, कूटकर एक बोतल में भर, उसमें मद्य (रेक्टिफाइडस्प्रिट) ३० तोले और शुद्ध अफीम ३ तोले डालकर, बोतल का मुख, अच्छी तरह बन्द कर रक्खा रहने देवे। ७ दिन के पश्चात् काम में लावे।

मात्रा–१ बूंद से ३ बूंद तक। शक्कर या बताशे के साथ।

गुण—हैजे की उल्टी और दस्तों को शीघ्र बन्द कर देता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

११७ कर्पूरासव नं. ४--विशूचिका नाशक ।

(डॉ० श्री वी० एल० कश्यप, आयुर्वेदभूषण)

विधि—देशी कपूर ४ तोले को बारीक पीसकर एक बोतल में डालकर, ऊपर से १२ तोले रस का सिरका डाल देवे, और कार्क लगाकर, एक महीने तक धूप में रक्खा रहने दे, परन्तु रोज एक बार हिला दिया करे । १ मास के बाद छान कर, नीली बोतलों में भर कर रख दे ।

मात्रा—४ या ५ बून्द से १० बून्द तक। अर्क गुलाब दो तोले के साथ सेवन करावे।

गुण—हैजे पर तुरन्त लाभ करता है ।

(अ० योगमाला–सिद्ध योगाङ्क)

---

११८ कर्पूरासव नं. ५–(स्वकृत)–सर्वरोग नाशक।

विधि–कपूर १५ तोले, पोदीने का फूल (सत्व), अजवायन का सत्व और सत्व लोवान प्रत्येक २॥–२॥ तोले एकत्र १ बोतल में मिला धूप में रक्खे, सब एक जीव होजाने पर उसमें अहिफेनासव ८ माशे मिला, बोतल का मुँह बन्द कर रख दे । ७ दिन बाद काम में लावे।

गुण—रोगानुसार अनुपान भेद से यह सर्व रोगों पर लाभदायक है।

---

११६ कर्मरङ्गासव—मधुमेह नाशक।

विधि—कमरख की छाल १ सेर और हल्दी ४ तोले, जब कुट कर, ३२ सेर जल में पकावे । ४ सेर काथ-जल शेष रहने

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पर, छानकर शुद्ध चिकने घड़े में भर देवें, ठंडा होने पर उस में १ सेर शहद और २० तोले धायके फूलों का चूर्ण मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर काम में लावे।

मात्रा—१ तोला से २॥ तोले तक। अनुपान-चूने के निटरे हुए चौगुने जल के साथ।

गुण—मधुमेह, प्रमेह, और बहूमूत्र रोग को शीघ्र दूर करता है। रोगी को पथ्य से रहना, और व्यायाम करते रहना चाहिये।

(अ० यो० माला)

कल्पनाथासव—देखिये, यवातिक्तासव।

कस्तूरिकासव—देखिये, मृगमदासव।

कसौंदीआसव—देखिये, कासमर्दासव।

१२० काकमाच्यासव नं० १—जलोदर नाशक।

(श्रीमान् स्वामी विभूतिनन्दजी महाराज)

विधि—मकोय (शायद पंचाङ्ग) ७॥ सेर अच्छी तरह कुचल कर शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें १ मन (४० सेर) जल, ५ सेर गुड़, २॥ सेर लोहचूर्ण और कीकड़ की छाल (कुचली हुई) २ सेर मिलाकर, चार दिन पीछे मुख बन्द कर रख दे। ४० दिन बाद खोलकर, छानकर बोतलों में भर ले।

मात्रा—५ तोले। केवल प्रातःकाल ही लेवे।

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

गुण—जलोदर, जहरबाद को शर्तिया दूर करता है।

नोट-कोई २ इसमें जल २५ सेर ही डालते हैं, और कोई २ एक मन जल में गुड़ १० सेर डालते हैं। लेखक ने इसका नाम जहरबाद अर्क रक्खा है।

(धन्वन्तरि—बूटी चित्रांङ्क)

काकमाच्यासव नं २—देखिये, माचिकासव।

११२ काकोदुम्बरिकारिष्ट—(स्वकृत) प्रदरहर।

विधि—कठूभर की जड़ ५ सेर और कठूभर के फल २ सेर, जवकुट कर, १ मन १२ सेर जल में पकावे। १३ सेर क्वाथ शेष रहने पर, छान लेवे और शुद्ध चिकने मिट्टी के पात्र में भरकर, ठंडा हो जाने पर उसमें धाय के फूल १० छटांक, शहद ३ सेर, मिश्री ६ सेर, श्वेत चन्दन ४ तो०, लाल चन्दन ४ तो०, लौंग ४ तो० और नागरमोथा ४ तो० चूर्ण कर मिला देवे। ठीक प्रकार मुख सन्धान कर १ मास तक सुरक्षित रक्खे, पश्चात् छानकर शीशियों में भरकर रख दे।

मात्रा—१ से ४ तोले तक। यथोचित जल के साथ देवे।

गुण—रक्तप्रदर, रक्तपित्त, कुष्ठ विकार निवारक है। गर्भकारक है। ऋतु स्नान के पश्चात् चतुर्थ दिन से केवल ३ दिन तक इसका सेवन करावे, फिर गर्भाधान करे। यह गर्भपातावरोधक भी है जिस स्त्री को गर्भपात हो जाता हो, उसे कुछ दिनों तक इसका सेवन कराना चाहिए।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

१२२ काञ्चनारारिष्ट—(स्वकृत)—गंडमालादि विकारे।

विधि—लाल कचनार की छाल अवकुट कर ५ सेर लेवे। १ मन १२ सेर जल में पकाकर क्वाथ करे। जब १३ सेर जल शेष रहे, तब छानकर, चिकने तथा गुग्गुल से धूपित मटके में भर कर उसमें—धाय के फूल आध सेर, शहद १० सेर तथा सोंठ, सफेद जीरा, कालीमिरच और शुद्ध गूगल प्रत्येक ४-४ तोले चूर्ण कर मिला दे। मटके का मुख अच्छी तरह सन्धान कर, १ मास तक रक्खा रहने दे। पश्चात् छानकर शीशियों में भरकर रख दे।

मात्रा—१ से ४ तोले तक। अनुपान जल।

गुण—यह शीघ्र ही रक्त को शुद्ध करता है। गराडमालापर रामबाण है। कुष्ठादि चर्मरोग, दाह, अतिसार, तथा आन्त्र के कृमियों का नाशक है।

---

१२३ कामिनीवल्लभारिष्ट—योषापस्मार नाशक।

विधि—चीते की छाल, दुग्ध बच, ऊसवा मगरबी, लाल चन्दन, श्वेत चन्दन, अनन्तमूल प्रत्येक ८—८ तोले, मजीठ, निशोथ, हल्दी, नागरमोथा, दारुहल्दी, रास्ना (असली), बिदारीकन्द, मुलैठी का घनसत्व, बड़ी हरड़ का छिलका और अर्जुन की छाल प्रत्येक १०-१० तोले, सफेद मुसली १२॥ तोले तथा असगंध ५० तोले, इन १८ द्रव्यों को अधकुट कर, नाड़ी (नेत्रवाला) के ५० सेर स्वरस में मिला, कढ़ाई में मंदाग्नि पर पकावे। जब चौथाई अर्थात् १२॥ सेर जल शेष रहे, तब उतार

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

ले ठंडा होने पर, हाथ से मलकर छान लेवे। इस छने हुए क्वाथ में त्रिकुटा (सोंठ, मिरच, पीपल) ३ तोले, नागकेशर (असली), दारचीनी, फूलप्रियंगु (असली), तेजपात और छोटी इलायची ४-४ तोले, शिलाजीत शुद्ध ८ तो०, धाय के फूल १६ तो० उत्तम शहद (मधु) ३०० तो०, इन द्रव्यों को मिला, चीनी के पात्र में भर देवें, और मुख बन्दकर, १ मास तक रखा रहने दे। फिर छानकर बोतलों में कुछ खाली रख कर भर देवे।

मात्रा—१ तोला से २ तोले तक। अनुपान-जल ।

गुण—इसके सेवन से स्त्रियों की जरायुज-मूर्च्छा (हिस्टीरिया) अर्थात् योषापस्मार अवश्य ही आराम होजाता है।

(धन्वन्तरि, अनुभूतयोगाङ्क)

कायफलाद्यासव—देखिये, कट्फलाद्यासव।

कायफलारिष्ट—देखिये, कट्फलारिष्ट।

१२४ कारवेल्लासव—(स्वकृत)-मसूरिका नाशक।

विधि—करेले के पत्तों का अथवा फलों का स्वरस १ सेर निकाल शुद्ध चिकनी मटकी में भर उसमें धाय के फूलों का चूर्ण ५ तोले, शहद आध सेर और हल्दी का महीन चूर्ण २ तोले मिला, मुख मुद्रा कर, १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे, पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—आधा तोला से १ तोला तक। दुगुना जल मिला दिन में दो बार सेवन करावे।

गुण—चेचक में शान्ति कर, उपद्रव बढ़ने नहीं पाते, दस्त साफ़ लाता है। स्वस्थ व्यक्ति भी यदि चेचक के दिनों में

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

इसका सेवन करता रहे तो उसे चेचक का भय नहीं रहता। यदि चेचक का हमला हो भी जाय तो उसे विशेष कष्टों का सामना नहीं करना पड़ता।

---

१२५ कारस्करादयासव—वातव्याधि पर।

(सौ० श्रीमती ब्रह्मदेवीजी विशारदा कृत)

विधि—कुचला १५ तोले (इसे शुद्ध करने की आवश्यकता नहीं, यों ही कूट लेवे), अर्जुन की छाल ३ तोले, त्रिफला ६ तो०, नागौरी असगंध ३ तोले, चिरायता कड़वा ३ तोले, गिलोय ३ तोले इनको जवकुट कर अलग रखे। नागरमोथा, छोटी इलायची, दारचीनी, जटामांसी, लताकस्तूरी प्रत्येक २-२ तोले इन सुगन्धित द्रव्यों को कूट पीस कर पृथक् रखे। लोह चूर्ण ५ तोले लेकर प्रथम हर्रों के साथ खरल कर तीन चार दिन भीगने देवे, फिर क्रमशः आमले और बहेड़े के स्वरस में घोट सुखा कर अलग रखे। पश्चात् १४ सेर जल को आग पर खूब खौलावे और उसमें गुड़ ४ सेर घोल देवे, साथ ही में साफ़ की हुई मुनक्का ६ तोले पीस कर डाल देवे, गुड़ के घुलजाने पर उसमें उक्त लोहचूर्ण घोल देवे, फिर उसे उतार कर किसी चीनी के पात्र में भर देवे। ध्यान रहे चीनी के पात्र में उक्त आसवीय घोल भरने से पहिले उसे चूने के पानी से धोकर, लोबान, कपूर, गूगल और चन्दन की धूनी दे देनी चाहिए। फिर उसमें कुचला से लेकर गिलोय तक के कुल ८ द्रव्यों का चूर्ण मिला देवे, और कपड़े से ढक देवे। जब अन्दर का घोल ठंडा हो जाय, तब सन्धान कर, सील रहित शुद्ध स्थान में

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सुरक्षित कर रक्खे। २० वें दिन खोलकर, उसमें नागरमोथादि ५ सुगन्धि द्रव्यों के चूर्ण को मिला, पुनः सन्धान कर रख देवे, और ८। १० दिन बाद खूब अच्छी तरह छानकर बोतलों में भरकर रख दे। बोतलों में भरने के बाद, प्रत्येक बोतल में थोड़ी थोड़ी केशर, कस्तूरी अल्कोहल में घुली हुई (अल्कोहल अर्थात् मद्य अथवा मृतसंजीवनी सुरा २॥ तो०, केशर ३ माशे और कस्तूरी ३ माशे एकत्र मिलाकर सब घोट लेवे) डाल देवे। फिर काग लगा कर उसके मुँह पर कपरौटी कर देवे।

मात्रा—१० बूंद तक । अनुपान—जल।

गुण—यह नाड़ी मण्डल के रोगों की (वातव्याधि को), और पट्ठों की दुर्बलता की उत्तम औषधि है। हृदय, आमाशय और गुर्दों को बल देता है। गर्भाशयोन्माद (हिस्टेरिया) पर इस आसव को अश्वगंधारिष्ट नं० १ के साथ, उचित मात्रा में मिला कर सेवन कराने से शीघ्र लाभ होता है।

[राकेश—गर्भाङ्क से]

---

१२६ कारस्करासव नं० २—(स्वकृत) ज्वरादि नाशक।

विधि—कुचले का चूर्ण वज़न में जितना हो उससे ग्यारह गुनी रेक्टिफाइड स्प्रिट अर्थात् मद्य लेकर, चीनी मिट्टी के पात्र में एकत्र मिला १५ दिन तक, सन्धान कर रक्खे। फिर अच्छी तरह दबाकर, निचोड़ ले और फिर छानकर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—५ बूँद से १५ बूँद तक। अनुपान-जल।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

गुण—शीघ्र ही ज्वर को दूर करता है। पाचनशक्ति बढ़ाता है। इन्द्रिय शैथिल्य, स्वप्नदोष, ध्वजभंग, प्रमेह, वीर्यस्राव आदि विकारों को शीघ्र नष्ट करता है। स्त्रियों के रोग, जैसे-रज की कमी, ऋतुकाल में कष्ट, जरायु के दोष, अधिक रक्तस्राव आदि नाशक है। तीव्र वेदना, शूल, एकांगवात, कंपवात, उन्माद और अर्श पर उत्तम लाभकारी है। जीर्णज्वर, यकृत, प्लीहा, अजीर्ण, अग्निमांद्य पर भी विशेष उपकारी है।

---

१२७ कारस्करासव नं ३—प्रमेह, मधुमेहादि नाशक।

(श्री स्व० पं० परशुराम जी शास्त्री विद्यासागर)

विधि—१ तोला कुचले, बारीक कतर कर, जल में भिगो देवे। फिर कूटकर, शीशी में ८ तोले एलकोहल (मद्य) के साथ, डाल कर, मुख मुद्राकर, १५ दिन तक रक्खा रहने देवे। पश्चात् छान कर शीशी में भर कर रख दे।

मात्रा—४ बूँद, ४ तोले पानी में मिलाकर सेवन करावे।

गुण—प्रमेह तथा मधुमेह को शीघ्र नष्ट करता है।

(अ० योगमाला)

नोट-इसे 'विषतिन्दुकासव' भी कहते हैं। यह अग्निमांद्य, अजीर्ण, अरुचि, बद्धकोष्ठ एवं रोगजन्य दुर्बलता पर उत्तम लाभदायक है। इन रोगों में इसे कटुकासव और चित्रकासव के साथ मिलाकर सेवन करना चाहिए। निमोनियाँ और सूखी खाँसी आदि जिनमें कफ निकलने की आवश्यकता होती है, इसका सेवन लाभदायक होता है। पुराने अर्धाङ्ग में भी इसके सेवन से लाभ होता है, किन्तु नवीन एवं शोथसहित अर्धाङ्ग

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

में इसे कभी सेवन नहीं कराना चाहिये । उत्तेजक होने के कारण नपुंसकत्व में भी इससे लाभ होता है, किंतु अति मैथुन जनित नपुंसकता में इससे हानि की ही संभावना है ।

—(मद्यासव)

कारस्करासव नं ४—देखिये विषमुष्ट्यासव ।

१२८ * कार्पासाद्यासव—स्त्री रोग नाशक ।

विधि—कपास के पौधों की जड़ की छाल ८ तोले, अरगट (ये अर्गट नामक वृक्ष के बीज हैं, जो इन्द्रजव के समान ही लम्बे और चौड़े होते हैं, इन पर सड़ान की फफूंदी सी चढ़ी हुई होती है, औषधि कर्म के लिये इन्हीं बीजों का चूर्ण बनाकर रख लिया जाता है) ८ तोले, इन दोनों के चूर्ण को ६८ तोले मद्य (७० से ६० प्रतिशत वाली) घोलकर, चीनी मिट्टी के पात्र में भरकर, सन्धान कर ८ से १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे । पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रख देवे ।

मात्रा—२ से ८ माशे तक । बालकों को कम मात्रा में दे । अनुपान-जल ।

गुण—इसके सेवन से स्त्रियों के गर्भाशय के पिछले भाग में, निश्चित रूप से एक प्रकार का संकोच होता है, जिससे गर्भस्थ शिशु सुगमता से वेगपूर्वक बाहर आ जाता है । प्रसव काल में जिन निर्बल स्त्रियों के शूल (प्रसववेदना) अधिक पैदा न होने के कारण प्रसव कष्ट-प्रद होता है, उनके लिये यह आसव बड़ा लाभदायक है । मक्कलशूल, और रक्तस्राव में यह लाभप्रद है । (मद्यासव)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

१२९ कार्पासारिष्ट—स्त्री रोगे।

(श्री० पं० घनानन्द जी पन्त, विद्यार्णव कृत)

विधि—कार्पासमूल त्वक् (कपास की जड़ की छाल), ३ सेर, बांस की जड़ की छाल (वेणुमूलत्वक्) २ सेर, शोभांजन (सहिंजने) की छाल १॥ सेर, लाल चित्रकमूल १॥ सेर, अशोक की छाल १॥ सेर और दशमूल १॥ सेर, जवकुट कर, २ मन ८ सेर जल में पकावे। २२ सेर जल शेष रहने पर, छान लेवे, और शुद्ध चिकने मटके में भर कर, उसमें बाबूला के फूल १ सेर, धाय के फूल आध सेर, लोध्र १० तोले, गुग्गुल, एलुआ, देवदारु, पुनर्नवा, जटामांसी, दारुहल्दी, सुगन्धमरिच, सदा-रुहा (बेल वृक्ष की छाल) सफेद चन्दन, लाल चन्दन प्रत्येक १०-१० तोले, द्राक्षा (मुनक्का) १। सेर, शहद २॥ सेर और गुड़ १० सेर मिलाकर, सन्धान कर एक मास तक रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—२ तोले से ४ तोले तक। अनुपान—जल।

गुण—प्रसवकाल में, गर्भाशय की निर्बलता हो जाती है, वह इसके सेवन से शीघ्र दूर होती है। तथा प्रसूति समय का कष्ट दूर होता है और प्रसव वेगपूर्वक सुगमता से होजाता है।

कालमेघासव—देखिये, यवतिक्तासव।

१३० कालिन्दासव नं० १—रक्तपित्तादि नाशक।

(वैद्यभूषण श्री० पं० मक्खनलाल जी शर्म्मा—खेरली)

विधि—एक बड़ा तरबूज लगभग १० सेर, वजन वाला

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS (USA)

लेकर, तेज चाकू से उसमें गहरा छेद करे, और उसमें १। सेर मिश्री, तथा सौंफ, कासनी, नीलोफ़र, कमल के फूल, खस, गुलाब के फूल, छोटी इलायची के दाने और गुलबनपसा प्रत्येक का चूर्ण २॥-२॥ तोले, तथा कपूर १ तो० चूर्ण कर डाल देवे, और छिद्र के मुख को उसी के टुकड़े से बन्द कर, अच्छी तरह चारों ओर से डोरी से कस देवे। इस तरबूज को काठ या पत्थर के बड़े पात्र में, ८ दिन तक, दिन में धूप और रात्रि के समय शरद् चांदनी या ओस जहाँ पड़ सके ऐसे खुले शुद्ध स्थान में सुरक्षित रक्खे। इसमें कभी २ उबाल सा उठकर अन्दर का द्रव्य बाहर निकलता है। ८ दिन के बाद ऊपर का छिलका अलग कर, शेष सबको मसल और छानकर, बोतलों में भर देवे। इस बीच २ में छानते रहना चाहिये। यह ज्यादह दिन बाद खराब होजाता है।

मात्रा—१ तोला। ६ माशे शहद में मिला कर पीवे।

गुण—रक्तपित्त, सूजाक, मूत्रकृच्छ्र, रक्तप्रदर, दाह, जलन, घबराहट, बेचैनी पर लाभदायक है।

---

१३१ कालिन्दासव नं० २--पाण्डु, यकृतादिविकार नाशक।

(श्री वैद्यशास्त्री पं० देवदत्तजी शर्मा, शकरगढ़)

विधि—अच्छे पके हुये तरबूज की गिरी २६ सेर लेकर, शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें हरड़, बहेड़ा, आमला, मेंहदी, हस्तिशुण्डी, सनाय, बनपसा, मजीठ, धनिया, अपामार्ग की जड़, अडूसे की जड़, छोटी हरड़, कचूर, सोंठ, और संतरे के ऊपर का छिलका प्रत्येक का चूर्ण ८-८ तोले, तथा गुलाब के

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

फूल १० तो०, गोरखमुण्डी और सौंफ प्रत्येक का चूर्ण १२-१२ तोले, जौ का चूर्ण १६ तोले, मंडूरभस्म १ पाव, कीकड़ की छाल १। सेर, पुराना गुड़ ५ सेर, और देशी खांड २॥ सेर, मिला कर मुख मुद्रा कर, एक मास तक सुरक्षित रक्खे। फिर छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—३ तो०, से ५ तोले तक।

गुण—पाण्डु, यकृतविकार, रक्त की कमी, हृदय की धड़कन आदि विकारों पर रामबाण है। किसी भी कारण से उत्पन्न हुई रक्तकी कमी (एनिमिया) इससे अवश्य दूर होजाती है। यह अत्यन्त पित्तनाशक होने से, पित्तविकार बढ़कर चाहे कैसा भी रूप धारण करचुके हों, इसके सेवन से शीघ्र ही दूर होजाते हैं। दाह के लिये यह एक मानी हुई औषध है। ज्वरों के बाद में हुई दुर्बलता इससे अवश्य नष्ट होजाती है। प्लीहा एवं उदर विकारों पर भी इसका उत्तम अनुभव अनेक बार किया जाचुका है। जिन स्त्रियों को पित्त विकृति के कारण मासिक स्राव कम आता है, शरीर में बेचैनी रहती है, मासिक कष्ट से होता है, सन्तान नहीं होती, ऐसी स्त्रियों के लिये यह एक चुनी हुई औषध है।

कालिन्दासव नं० ३—देखिये, अङ्गूरासव।

काश्मर्याद्यरिष्ट—देखिये, अष्टशतारिष्ट।

१३२ कासमर्दासव—(स्वकृत)—उपदंशादि विष विकार।

विधि—कसौंदी की जड़ ५ सेर और पत्र दो सेर जवकुट कर, १ मन १२ सेर जलमें पकावे, १३ सेर जल शेष रहने पर,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

उतार कर छान लेवे। उसे शुद्ध चिकने मिट्टी के पात्र में भर, उसमें शहद १० सेर, धायके फूल ४० तोले, कालीमिरच का चूर्ण और श्वेत जीरा प्रत्येक ४-४ तोले मिला, ठीक प्रकार से सन्धान कर, १ मास तक रक्खे। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—२ से ४ तोले तक। अनुपान–जल।

गुण—उपदंश, आमवात नाशक, शीघ्र प्रसूतिकारक है। पारे का विष शरीर में पहुंच गया हो तो इस आसव के सेवन से शीघ्र दूर होजाता है। अफीम के विष को भी यह दूर करता है। रक्तार्श पर भी लाभदायक है।

---

१३३ किनगिचासव—(स्वकृत)—प्रसूत रोग नाशक।

विधि—किनगिच या वाल की ताज़ी पत्तियों का स्वरस १ भाग लेकर, उसमें ५ गुना मद्यसार (६० प्रतिशतवाला) मिला कर, बोतलों में भर कर रख दे। कार्क अच्छी तरह मजबूती से बन्द करना चाहिये। ७ दिन बाद छानकर काम में लावे।

मात्रा—५ से ६० बून्द तक।

यदि किनगिच के ताज़े पत्ते न मिलें तो इसके छाया में सुखाये हुये शुष्क पत्ते ५ सेर लेकर तथा कूटकर, १३ सेर जल

※ किनगिच का वेलदार क्षुप लगभग ४—५ फीट तक लम्बा होता है, इसके पत्ते और कांटे कंजा (लताकरंज) के जैसे होते हैं। इसमें जो फलियाँ लगती हैं, उनके अन्दर रत्ति या गुंजा से दुगुने बड़े लाल वर्ण के बीज होते हैं, उन्हे 'वाल' कहते हैं। सुनार लोग इन्हें तौल के काम में लाते हैं। दक्षिण में इसे वाल का पौधा या बेल कहते हैं। उत्तर की ओर इसे ही किनगिच कहते है। —लेखक।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

में पकावे, लगभग ४ सेर क्वाथ जल शेष रहने पर, उसे छान कर, एक शुद्ध चिकने मटके में भरे। ठंडा होजाने पर उसमें शहद ३ सेर, कालीमिरच, सोंठ, अजवायन और कङ्कोल का चूर्ण ४-४ तोले मिला कर यथाविधि सन्धान करके रक्खे। १ मास के बाद छानकर काम में लावें।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक।

गुण—स्त्रियों के प्रसूतजन्य उपद्रवों को शीघ्र नष्ट करता है। प्रसूत ज्वर में जब ज्वर का वेग अत्यंत तीव्र हो और अन्य उपद्रव बढ़े हुये हों, इस आसव का सेवन महान् लाभदायक है। ७ दिन में ही जच्चा को पूर्ण शान्ति प्राप्त होती है। किन्तु इस पर पथ्य से रहना चाहिये। गाय का दूध, गेंहू की रोटी, दलिया, और गो घृत के सिवाय दूसरी कोई चीज़ नहीं देनी चाहिये। नमक को तो विषवत् त्याग देना चाहिये।

---

१३४ किरातितिक्तासव—(स्वकृत)-ज्वरादि विकारे।

विधि—चिरायता ८ तोले, गिलोय ४ तोले और मुनक्का ६ तोले, अच्छी तरह कूट पीस कर, ८० तोले अल्कोहल या मद्य में मिला, शुद्ध चीनी मिट्टी के पात्र में, या कांच के पात्र में भर तथा यथाविधि सन्धान कर १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् अच्छी तरह दबाते हुये छानकर शीशियां में भर कर रख ले।

मात्रा—२ से १५ बून्द तक। अनुपान-जल।

गुण—यह ज्वर नाशक कोष्ठबद्धता नाशक, और पौष्टिक है। जीर्णज्वर, पित्तज्वर को दूर करते हुये यकृतवृद्धि को

Digitization by American Academy of Indic Studies- AAIS(USA)

शमन करता है। मलेरिया ज्वर जिसमें अग्निमांद्य की प्राधान्यता रहती है उस पर यह विशेष लाभदायक है।

किराततिक्तासव नं० २--देखिये, चिरतिक्तासव।

१३५ कुङ्कुमासव नं० १—(स्वकृत)—योषापस्मारादि विकारे।

विधि--असली शुद्ध काश्मीरी केशर, छोटी पीपल, नागकेशर (असली), बच, कूठ, जावित्री, असगंध, अदरख और बायबिडंग प्रत्येक ४–४ तोले, दारचीनी, लौंग, अनन्तमूल, दारुहल्दी और बेलगिरी प्रत्येक २—२ तोले, तथा पतंग और खैरसार १–१ तोला, महीन चूर्ण कर २६ सेर खौलते हुए जल में डालकर पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर देवे। ३ घंटे के पश्चात् पात्र का मुख खोल कर, उसमें शहद २॥ सेर, धाय के फूलों का चूर्ण १३ छटांक, और बीज निकाली हुई मुनक्का १ सेर मिलाकर, पुनः अच्छी तरह सन्धान कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से २ तोले तक। अनुपान–जल या दूध।

गुण—योषापस्मार (हिस्टेरिया), मूर्च्छा, आर्तवरोधजन्यशूल, प्रदर तथा वातपीड़ा नाशक है। रक्तशोधक, वीर्यस्तंभक एवं बुद्धिवर्धक है। आमाशय की दुर्बलता इससे शीघ्र दूर होती है। इसे द्राक्षासव के साथ सेवन कराने से पथरी, मधुमेह, तथा मूत्रकृच्छ्र पर विशेष लाभ होता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

१३६ कुङ्कुमासव नं० २—(स्वकृत)—मूत्राघातादि नाशक।

विधि—शुद्ध चिकने मिट्टी के पात्र में, १८ सेर खौलता हुआ गरम जल डालकर, उसमें उत्तम असली केशर ४ तोले, जल में घोटकर मिला देवे। पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर देवे। ३ या ४ घंटे के पश्चात् मुख को खोल कर उसमें-धाय के फूल, चूर्ण कर ४० तोले और शहद ३ सेर मिलाकर, दृढ़तापूर्वक मुख सन्धान कर १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छान कर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से २ तोले तक। अनुपान-जल।

गुण—इसके सेवन से मूत्राघात, मूत्र के समय होने वाली पीड़ा, चिनक दाह आदि विकार शीघ्र ही दूर होकर, शुक्र की वृद्धि होती है।

---

१३७ कुङ्कुमासव * नं० ३—बालशोष रोगे।

विधि—उत्तम काश्मीरी केशर १ तोला लेकर, काली गौ के ६४ तोले मूत्र में अच्छी तरह घोट कर मिला देवे। पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर ८ दिन तक सुरक्षित स्थान में रक्खे, पश्चात् छान कर बोतल में भर कर रख दे।

---

* कृष्णायाः सुरभेर्मूत्रे प्रस्थमात्रे भिषग्वरः।
कर्षं कुङ्कुममाक्षिप्य स्थापयेत् दिवसाष्टकम्॥
यथावयः प्रदत्तोऽसौ मात्रया पयसासमम्।
कुङ्कुमासव आहन्याद् बालशोषं सुदुस्तरम्॥
—सि० भै० स० बालरोगे।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मात्रा—१० बूँद से २० बूँद तक। बालकों को अवस्थानुसार, दूध के साथ पिलावे।

गुण—इसके सेवन से बालकों का सूखा रोग शीघ्र दूर होकर, वे हृष्ट पुष्ट होजाते हैं।

---

१३८ कुङ्कुमासव नं० ४—(वाल्हीक-कुसुद)—शक्तिवर्धक।

(वैद्यराज श्री पं० उमादत्त जी मिश्र मिर्जापुर)

विधि—केशर (सूर्य मार्का) दो तोले, जायफल १ तो०, और कस्तूरी आधा तोला सब का एकत्र मोटा चूर्ण कर, कांच के पात्र में डाल कर, उसमें-मीठे अनार का स्वरस २० तोले, शहद ५ तोले और बरारडी नं० १ (एकशाछाप की) ५ तोले मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, ४ सप्ताह (लगभग १ मास तक) सुरक्षित रक्खे। प्रति सप्ताह हिलाते रहना चाहिए। अवधि के समाप्त होने पर छान ले तथा १ सप्ताह में साफ़ होने के लिये पुनः बन्द करके रख देवे। पश्चात् नितार कर, कीट रहित द्रव भाग काम में लावे।

मात्रा—१० बिन्दु से ६० बिन्दु तक। अनुपान जल।

गुण—रोगों की जीर्णावस्था में इसका सेवन सुखकर होता है। वीर्यविकार, सिरदर्द और सान्निपातिक अवस्था में तथा कास, श्वास, हिक्का और मूर्छा में अत्यन्त लाभदायक है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

१३९. कुङ्कुमासव नं० ५—(स्वकृत)—उत्तेजक।

विधि—उत्तम सूर्यमार्का केशर २॥ तोले लेकर, ५० तोले रेक्टिफाइड स्प्रिट में मिला, बोतल में भर, दृढ़ कार्क लगा मुख बन्द कर रख दे। ३ दिन के बाद खोल कर, फलालैन में खूब निचोड़ छानकर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—३० बूंद से १२० बूंद तक।

गुण—उत्तेजक और पौष्टिक है।

कुचलासव—देखिये, कारस्करासव और विषमुष्टयासव।

कुटकीआसव—देखिये, कटुकासव।

१४० कुटजासव—(स्वकृत) अतिसारादि नाशक।

विधि—कुड़े की छाल ५ सेर लेकर, जवकुट कर १ मन १२ सेर जल में पकावे। १३ सेर जल शेष रहने पर, उसे छान कर, चिकने मटके में भर देवे। फिर उसमें सोंठ, जायफल, माजूफल, लौंग, काकड़ासिंगी, बहेड़े की छाल, कालीमिरच, छोटी पीपल, वायविडंग, बेलगिरी और नागकेशर प्रत्येक ४-४ तोले महीन चूर्ण कर डाले। धाय के फूल और महुये के फूल प्रत्येक आध-आध सेर उसी में डाल कर, अच्छी तरह सन्धान कर, १ मासतक सुरक्षित रखे। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से २॥ तोले तक। अनुपान जल।

Digitization by American Academy of Indic Studies (AAIS(USA)

गुण—रक्तातिसार, ज्वरातिसार नाशक है। कफानुबन्धी रक्तार्श का रक्तस्राव इसके सेवन से शीघ्र ही बन्द हो जाता है।

---

१४१ कुटजारिष्ट * नं० १—अतिसार, ज्वर आदि नाशक।

विधि—कुड़े की जड़ की छाल (ताज़ी) ५ सेर, मुनक्का २॥ सेर, महुये के फूल और गंभारी के फल (अभाव में गंभारी की छाल) आध-आध सेर लेकर जवकुट कर १ मन १२ सेर जल में पकावे। १३ सेर जल शेष रहने पर उतार कर छान लेवे इस क्वाथ में धाय के फूल १ सेर तथा गुड़ ५ सेर मिलाकर, यथाविधि मिट्टी के बरतन में सन्धान करके १ मास तक रक्खा रहने दे।

मात्रा—१ तोला से २॥ तोले तक। अनुपान-जल।

गुण—सर्व प्रकार के ज्वरों का नाशक, रक्तातिसार और दुस्साध्य संग्रहणी नाशक तथा अग्नि प्रदीपक है। विषमज्वर और आंत्र के कृमियों को शीघ्र दूर करता है। अन्य औषधियों से ज्वर दूर होजाने पर, उसकी पुनरावृत्ति टालने के लिये अर्थात् उसे समूल नष्ट करने के लिये, उसीप्रकार कृमियों के बाहर निकल जाने पर अग्निमांद्य अरुचि, कास, अशक्ति इत्यादि

---

* तुलां कुटजमूलस्य मृद्वीकार्धतुलां तथा। मधूक पुष्प काश्मर्योर्भागान् दशपलोन्मितान् ॥ चतुर्द्रोणेऽम्भसः पक्त्वा द्रोणञ्चैवावशेषितम्। धातक्या विंशतिपलं गुडस्य च तुलां क्षिपेत् ॥ मासमात्रं स्थितोभाण्डे कुटजारिष्ट संज्ञितः। ज्वरान् प्रशमयेत्सर्वान्कुर्यात्तीक्ष्णं धनञ्जयम् ॥ दुर्वारां ग्रहणीं हन्ति रक्तातिसारमुल्वणम्।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विकारों को दूर करने के लिये 'कुटजारिष्ट' का बहुत ही अच्छा उपयोग होता है। इस अरिष्ट के सेवन से नवीन विकार तो दूर होते ही हैं, किन्तु विकार जितने अधिक दिनों के हों उतना ही इसका विशेष उत्तम उपयोग देखा गया है। जीर्णातिजीर्ण संग्रहणी, आमातिसार या ज्वर पर यह 'अरिष्ट' विशेष प्रभाव-शाली है। 'प्रवाहिका' के लिये भी यह बहुत उपयोगी है। विशेषतः वह प्रवाहिका जिसमें 'अमीवा' पाये जाते हैं और जिसके लिये एमेटीन (वामक, जीवाणुनाशक) औषधियाँ दीजाती हैं। रक्तार्श और रक्तप्रदर में इसके देने से रक्तस्राव शीघ्र बन्द होजाता है। आन्त्रिक क्षय पर भी यह उत्तम कार्य करता है। मलेरिया ज्वर पर भी इसका अच्छा प्रभाव देखा गया है। यदि अतिसार पीड़ित रोगी को रक्तमिश्रित या आम के साथ दस्त आते हों तो उसे प्रातःसायं दोनों समय इसकी मात्रा समान जल के साथ तथा बीच २ में कर्पूर रस की मात्रा देने से शीघ्र लाभ होता है। यदि दस्त के समय पेट में दर्द, मरोड़ा अधिक हो तो बीच २ में ग्रहणीशार्दूल वटिका देना हितकर है। कभी २ अतिसार के साथ ही साथ या अति-सार के बन्द होने पर कारण विशेष से अकस्मात् शोथ की उत्पत्ति होजाती है ऐसी अवस्था में कुटजारिष्ट के साथ शोथा-रिमण्डूर उष्णजल मिला कर सेवन कराना लाभप्रद है। यदि इस प्रकार की शोथ युक्त अवस्था में (विशेषतः दस्त बन्द होकर जो शोथ हो उसमें) ज्वर भी हो तो प्रातः सायं अमृतारिष्ट का भी सेवन कराते रहना चाहिये। सब प्रकार के प्रदर पर कुटजारिष्ट और अशोकारिष्ट १-१ तोला मिश्रण कर,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

समभाग जल मिला प्रातः सायं देते रहने से २१ दिन में पूर्ण लाभ होता है ।

---

१४२ कुटजारिष्ट नं० २—अतिसार, संग्रहणी आदि नाशक ।

(वैद्यराज गौरीशंकरजी आनन्द हरिपुर)

विधि—कुड़े की छाल १० सेर, मुनक्का ५ सेर, महुए के फूल, कुम्भेर की छाल, लोध्र, बिल्व (बेल) और कीकड़ (बबूल) की छाल प्रत्येक १-१ सेर लेकर सबका यवकुट चूर्ण कर, ४ मन जल में, २४ घंटे तक भिगोकर क्वाथ करे। चौथाई भाग शेष रहने पर, छानकर, शुद्ध चिकने मटके में भरे, और उसमें धाय के फूल २ सेर, तथा लोध, छोटी इलायची, कत्था, मोचरस, अतीस, कीकड़ की छाल, बेल, सोंठ, मिरच, पीपल, लौंग, जायफल, धनियाँ, नेत्रवाला, वायविडंग, नागकेशर, इन्द्रजौ, दोनों जीरे, पाठा, नागरमोथा, अजवायन, रसौत, जामुन की गुठली और आम की गुठली प्रत्येक २-२ तोले, वृहत् गंगाधर चूर्ण १० तोले, गुड़ ८ सेर, सब का चूर्ण कर मिलावे। यथा-विधि-पात्र का मुख अच्छी तरह सन्धान कर, १ मास तक रक्खे। पश्चात् छान कर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तो० से ४ तोले तक।

गुण—अतिसार, प्रवाहिका, संग्रहणी, रक्तातिसार और यक्ष्मातिसार में लाभप्रद है।

(अ० चि० संग्रह)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

१४३ कुब्जकासव *—सन्निपातादि ज्वरनाशक।

विधि—श्वेत गुलाब अथवा सेवती की जड़ ५ सेर, मुनक्का २॥ सेर, महुये के फूल आध सेर और गंभारी (फल अथवा छाल) आध सेर लेकर, साधारण कूटकर, सब को, १ मन १२ सेर जल में पकावे। जब १३ सेर जल शेष रहे, तब उसे छानकर, ठंडा होने पर, उसमें धाय के फूल १ सेर, गुड़ १५ सेर, धतूरे के बीज १६ तोले, बड़ी इलायची, पतरज (तेजपात), सोंठ, कालीमिरच, छोटी पीपल, जावित्री, कङ्कोल, दारचीनी और लौंग प्रत्येक का चूर्ण ४—४ तोले मिलाकर यथाविधि सन्धान करके एक मास तक सुरक्षित रक्खा रहने देवे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक। अनुपान—जल।

गुण—सन्निपातादि सर्व प्रकार के ज्वरों को नष्ट करता है। यह आसव वीर्यवर्धक है, और कफ तथा शीतजन्य विकारों को शीघ्र दूर करता है।

---

* शतं कुब्जकमूलस्य मृद्वीकायार्द्धशतं तथा। मधूकपुष्पकाश्मर्य भागान् दशपलोन्मितान्॥ चतुर्द्रोणेऽम्भसः पक्त्वा शीते पादावशेषिते। धातक्या विंशतिपलं गुडस्य च शतत्रयम्॥ कनकस्य तु चत्वारि व्योषं कंकोलमेव च। एलात्वक्पत्रजातीनां लवङ्गस्य तथैव च॥ भागान्पलप्रमाणांश्च सूक्ष्मचूर्णन्तु कारयेत्। कौब्जमूलासवो ह्येष मासमात्रं विधारितः॥ शमयेत्सन्निपातोत्थान् ज्वरान् सर्वान् न संशयः।

—गदनिग्रहे।

Digitization by American Academy of Indic Studies: AAIS(USA)

१४४ कुमारकल्याणासव—बालरोग हर।

(श्री० वैद्यराज श्यामविहारीलाल जी त्रिपाठी)

विधि—छोटी पीपल, अतीस, मुलैठी, मुनक्का, काकड़ासिंगी, नागरमोथा प्रत्येक एक एक सेर सब को अधकचरा करके ८० सेर पानी में डाल कर औटावे, जब २० सेर पानी शेष रहे, तब उतार कर छान ले। इस छने हुए काढ़े में-शहद ६ सेर, धाय के फूल १ सेर डालकर, मिट्टी के चिकने बरतन में भर कर, मुँह बन्द कर दे, और एक महीने तक रखा रहने दे, फिर छान कर बोतलों में भर दे, और कड़ी डाट लगाकर रख छोड़े।

मात्रा—इसकी पूरी मात्रा ४ वर्ष के बालक के लिये ४ माशे की है। बलाबल अनुसार मात्रा घटाई बढ़ाई भी जा सकती है। समय-दिन में कई बार। अनुपान-जल में मिला कर दे।

गुण—बच्चों के ज्वर, खांसी, वमन, दस्त, अपचन, पेट का शूल आदि अनेक रोगों को नष्ट कर उन्हें हृष्ट पुष्ट और ताक़तवर बनाता है।

(धन्वन्तरि)

---

१४५ कुमार्यासव * नं० १--बलवर्धक, उदररोग नाशक।

---

* सुपक्वरस संशुद्ध कुमार्याः पत्रमाहरेत्। यत्नेन रसमादाय पात्रे पाषाणमृण्मये॥ द्रोणे गुडतुलां दत्वा घृतभाण्डे निधापयेत्। माक्षिकं पक्व-लोहं च तास्मिन्नर्धतुलां क्षिपेत्॥ कटुत्रिकं लवंगञ्चचातुर्जातिकमेव च। चित्रकं पिप्पलीमूलं विडंगं गजपिप्पली॥ चविकं हपुषाधान्यंक्रमुकं कटु-रोहिणी। मुस्ता फलत्रिकं रास्ना देवदारु निशाद्वयम्॥ मूर्वा मधुरसा-

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विधि—अच्छे पके हुये घीकुआर के पट्ठे का रस १३ सेर निकाल कर, किसी शुद्ध पत्थर के या चीनी मिट्टी के पात्र में भरकर, उसमें—गुड़ ५ सेर, शहद २॥ सेर, शुद्ध लोहचूर्ण २॥ सेर सोंठ, मिरच, पीपल, लौंग, दारचीनी, इलायची, पत्रज, नागकेशर, चित्रकमूल, पीपलामूल, वायविडंग, गजपीपल, चव्य, हाऊबेर, धनिया, सुपारी, कुटकी, नागरमोथा, हरड़, बहेड़ा, आमला, रास्ना, देवदारु, हल्दी, दारुहल्दी, मूर्वा, मुलैठी, जटालगोटे की जड़, पोहकरमूल, खिरेंटी, कंघी, कौंच के बीज, गोखरू, सौंफ, डीकामाली, अकरकरा, उटंगन के बीज, रक्त पुनर्नवा, लोध, और स्वर्णमाक्षिक भस्म प्रत्येक २-२ तोले, तथा धायके फूल ३२ तोले सब का चूर्ण कर मिला देवे। यथाविधि सन्धान कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खा रहने दे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक। अनुपान—जल।

गुण—बल, वर्ण अग्निवर्धक, पुष्टिकारक, रुचिकारक, वीर्य वर्धक है। परिणामशूल, सर्वप्रकार के उदररोग, क्षय, प्रमेह,

---

दन्तीमूलंपुष्करसंभवम्। बलाचातिबला चैव कपिकच्छुस्त्रिकंटकम्॥ शतपुष्पा हिंगुपत्री आकल्लकमुटिंगणम्। पुनर्नवाद्वयं लोध्रं धातुमाक्षिकमेव च॥ एषां चार्धपलं दत्त्वा चैव धातक्यास्तु पलाष्टकम्। पलं चार्धपलं चैव पलद्वयमुदाहृतम्॥ वपुर्वयः प्रमाणेन बलवर्णाग्निदीपनम्। बृंहणं रोचनं वृष्यं पंक्तिशूल निवारणम्। अष्टावुदरजान् रोगानुदावर्तमपस्मृतिम्॥ मूत्रकृच्छ्रमपस्मारं शुक्रदोषं तथाश्मरीम्। कृमिजं रक्तपित्तं च नाशयेत्तु न संशयः॥ —शार्ङ्गधर।

Digitization by American Academy of Indic Studies: AAIS(USA)

उदावर्त, अपस्मार, मूत्रकृच्छ्र, शुक्रदोष, पथरी,कृमिरोग, स्मरणशक्ति की न्यूनता, रक्तपित्त तथा जलोदर नाशक है। जलोदर पर-इस आसव की मात्रा १ तोला में अपामार्गक्षार १ माशा मिला कर सेवन कराने से शीघ्र लाभ होता है।

नोट—अ० चि० संग्रह में उक्त आसवविधि में-लोहचूर्ण के स्थान में मंडूरचूर्ण (मंडूर को गोमूत्र में शुद्धकर, १सेर घृतकुमारी रस मिला गजपुट दे मिलावे) तथा उक्त प्रक्षेप द्रव्यों के सिवाय रोहितक छाल, मरोड़फली, सैंधव, रेवंदचीनी, बालछड़, नवसादर, अजवायन, सोया, सम्भालु के पत्ते, सौंफ की जड़, कासनी की जड़, अफसीन तीन, दोनों जीरे, चिरायता और मकोय का चूर्ण २-२ तोले मिलावे, ऐसा लिखा है।

---

१४६ कुमार्यासव * नं० २—गुल्मादि नाशक।

---

* द्रोणमानं कुमार्यास्तु रसं भाण्डे निधापयेत्। तुलार्धं दशमूलं तु तदर्धां पौष्करीं जटाम्॥ तत्समं धन्वयासं च चित्रार्धं च परिक्षिपेत्। प्रस्थार्धममृताज्ञेया तदर्धमभयातथा॥ लोध्रकामलकं पथ्यं मंजिष्ठा च कालिद्रुमः। चव्यं च कुष्ठमधुकं कपित्थं सुरदारुकम्॥ कृमिशत्रुः कणाचैव भार्ङ्गीस्यादष्टवर्गकः। जीरकं क्रमुको रास्ना शटी रेणुकमेव च॥ शृंगी निशा प्रियंगुश्च मांसी मुस्ता च सारिवा। शक्रवीजं वरीवासा नागकेसरमेव च॥ पुनर्नवा समांशानि षड्भिर्द्रोणजलस्य तु। क्वाथयेदनया रीत्या चतुर्थांशं जलं नयेत्। त्रिंशत्पला च मृद्वीका दन्तसंख्यापलं मधु। गुडात्तुलाचतुष्कं च तदर्धाधातकी भवेत्॥ पलद्वयं लवंगानि कंकोलं मलयोद्भवम्। चातुर्जातं तथा कृष्णा मरिचं जातिपत्रकम्॥ आकल्लकं फलं

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विधि–दशमूल २॥ सेर, पोहकरमूल १। सेर, धमासा १। सेर, चीते की जड़ १० छटांक, गिलोय ६॥ छटाँक, हरड़ १६ तोले, लोध, आमले, चौलाईकी जड़, मजीठ, वहेड़ा, चव्य, कूठ, मुलैठी, कैथ, देवदारु, वायविडंग, पीपल भारंगी, अष्टवर्ग (जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, ऋद्धि, वृद्धि, काकोली, चीरकाकोली), सफेदजीरा, सुपारी, रास्ना, कपूरकचरी, रेणुका (मालवे के बीज), काकड़ासिंगी, हल्दी, फूलप्रियंगु, जटामांसी (बालछड़), नागरमोथा, सारिवा, इन्द्रजौ, शतावर, बांसा, नागकेशर, पुनर्नवा प्रत्येक १६–१६ तोले लेकर, चूर्ण कर, सब को १ मन ३८ सेर जल में पकावे। जब चतुर्थांश अर्थात् १८॥ सेर जल शेष रहे, तब छानकर, उसमें घी कुआर का रस १३ सेर, मुनक्का १॥ सेर, शहद १॥= सेर, गुड़ २० सेर, धाय के फूल १० सेर, लोंग, कंकोल, श्वेतचन्दन, दारचीनी, तेजपात, इलायची, नागकेशर, पीपल, मिरच, जावित्री, अकरकरा, जायफल, कौंच के बीज, अजमोद, वच, खैरसार, चीता, जीरा, अजवायन, नेत्रवाला (सुगंधवाला), सोंठ, नागरमोथा, धनिया, हरड़, हाऊवेर, और इमली अथवा अमलवेंत ये प्रत्येक ८–८ तोले चूर्ण कर मिलावे, और सब को किसी चिकने, पुराने सुगंधित औष-

---

जात्याः कपिकच्छुश्च दीप्यकम्। वचा खदिरसारश्च दहनोजीरकं तथा॥ यवानी बालकं विश्वा मुस्ताधान्यं हरीतकी। हपुषा तिन्तड़ीकं च चूर्णमेषां प्रदापयेत्। भाण्डे पुराणे सुस्निग्धे धूपिते गन्धभेषजैः॥ कोष्ठसारे तथा तप्ते भूमौ मासं विनिक्षिपेत्। इत्यादि—

—गदनिग्रह।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

धियों से धूपित मिट्टी के पात्र में, यथाविधि सन्धान कर, गरम स्थान में गाढ़ देवे ।

एक मास पश्चात् निकाल कर, और छान कर शीशियों में भर कर रख ले ।

मात्रा—१ से ४ तोले तक । नित्य प्रातःकाल सेवन करावे । अनुपान—जल अथवा दूध ।

गुण—धातुक्षय, खांसी, पांच प्रकार के श्वास, बवासीर, वातव्याधि, संग्रहणी, पाण्डु, कामला, हलीमक, उदावर्त, पंच प्रकार के गुल्म, अफारा, कुक्षिशूल (कोख का दर्द), प्रत्याध्मान, अष्ठीला, गुदग्रह (गुदा में पीड़ा और जकड़न) तथा हृदय के रोगों को नष्ट करता है ।

इसे बालकों के कफ़, कास, श्वास, ज्वर, अपचन, डब्बा, किरम, कामला; नलाश्रितवात, अरुचि, जीर्णज्वर आदि विकारों पर दे सकते हैं । मात्रा-५ बूँद से १ तोला तक । अनुपान-दूध के साथ । ज्वर में पसीना लाने के लिये गर्म जल में मिलाकर पिलावे और रोगी को रजाई ओढ़ा कर सुला देवे ।

---

१४७ कुमार्यासव * नं० ३—गुल्म, उदरशूलादि नाशक ।

---

* कुमार्याश्च रसद्रोणे गुडं पलशतं तथा । तुलांध्रिसंख्यां विजयां क्वाथयेतज्जलार्मणे ॥ चतुर्थांशावशेषं तु पूते तस्मिन्निधापयेत् । मधुनश्चा-ढकं दत्वा धातक्या द्विपलाष्टकम् ॥ स्निग्धभाण्डे विनिक्षिप्य कल्कं चैव प्रदापयेत् । जातीफलं लवंगंच कंकोलं च कबाबकम् ॥ जटिलाचव्य-चित्रं च जातिपत्री सकर्कटम् । अक्षं पुष्करमूलं च प्रत्येकं च पलं पलम् ॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विधि—२। सेर भांग को १३ सेर जल में पकावे, जब चौथाई भाग ३। सेर शेष रहे तब उतार कर छान लेवे और शुद्ध चिकने मिट्टी के पात्र में भर कर, उसमें घीकुआर का छना हुआ रस १३ सेर, गुड़ ५ सेर, शहद २। सेर, धाय के फूल १३ छटांक, जायफल, लौंग, कंकोल, कबाबचीनी, जटामांसी (बालछड़) चव्य, चीता, जावित्री, काकड़ासिंगी, बहेड़ा, पोहकरमूल ये प्रत्येक ४-४ तोले। लोहभस्म और ताम्रभस्म प्रत्येक २-२ तोले सब का चूर्ण कर मिला देवे। यथाविधि सन्धान कर भूमि में अथवा अनाज के ढेर में दबा कर रक्खे। २० दिन पश्चात् निकाल छानकर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—आधा तोला से १ तोला तक। अग्नि-बलानुसार सेवन करावे। अनुपान-जल या दूध।

गुण—पांच प्रकार की खाँसी, श्वास, क्षय, आठ प्रकार के उदर रोग, छः प्रकार की बवासीर, वातव्याधि, अपस्मार, अग्निमांद्य, कोष्ठशूल, आठ प्रकार का गुल्म, तथा नष्टपुष्प (स्त्रियों को मासिकधर्म न होना) इत्यादि अनेक दारुण रोगों को केवल

मृतं शुल्वं तथालोहं शुक्तिमात्रं प्रदापयेत्। भूम्यां वा धान्यराशौ वा स्थापयेद्दिनविंशतिम् ॥ तदुद्धृत्य पिबेन्मात्रां यथा चाग्निबलादलं। पंचकासं तथाश्वासं क्षयरोगं च दारुणम्। उदराणि तथाष्टौ च चार्शांसि च नाशयेत् ॥ वातव्याधिमपस्मारमन्यान् रोगान् सुदारुणान्। जाठरं कुल्ले दीप्तं कोष्ठशूलं च नशयेत् ॥ गुल्माष्टकं नष्टपुष्पं नाशयेदक्ष-क्षतः। कुमारिकासवो ह्येष बृहस्पति विनिर्मितः ॥

—योगरत्नाकर।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

१५ दिन के सेवन से यह नष्ट कर देता है। इस कुमार्यासव में विजया (भांग) का योग होने से यह अग्निमांद्य, संग्रहणी, अजीर्ण के अतिसार, और प्रवाहिका पर उत्तम लाभदायक है। ज्वर की हालत में अथवा हैजे की अवस्था में या अन्य रोगों में रोगी को यदि निद्रा लाने की आवश्यकता हो तो इसकी यथोचित मात्रा, रात को ७ या ८ बजे देकर, ऊपर से पथ्य का भोजन आदि करा देने से उत्तम निद्रा आजाती है। जिन छोटे बच्चों को अफीम दीजाती हो, उन्हें अफीम के स्थान में इस आसव का सेवन कराना महान् उपयोगी है। इसके सेवन कराने से अन्न या दूध का ठीक २ परिपाक होता है, पेट में किसी प्रकार का विकार उत्पन्न नहीं होने पाता, यदि पहले का कोई विकार हो तो वह भी दूर होजाता है। इसके सेवन कराने से यदि कदाचित् कोष्ठबद्धता हो तो अरण्डी का तेल पिला देना चाहिये। एक मास के बच्चे को इसकी १ बून्द नित्य एक या दो बार देवे, दूसरे मास में दो बून्द, तीसरे में ३ बूंद इसी तरह बढ़ाते हुए देवे। शराब या अफीम का व्यसन छुड़ाने के लिये इसका युक्ति पूर्वक सेवन कराना हितकारक है।

दुर्बल, अशक्त या उष्णप्रकृति के व्यक्ति को इसका सेवन जरा सोच विचार कर करना चाहिये। उदररोग निवारणार्थ कोष्ठशुद्धि कराने के बाद इसका सेवन करावे।

नोट—इस आसव में कई मनुष्य विजया अर्थात् भांग के स्थान में हरड़ मिलाकर इसे बनाते हैं। किंतु विजया (भांग) युक्त यह आसव जितना प्रभावशाली होता है, उतना बिजया (हरड़) युक्त नहीं, यह हमारा खास अनुभव है। दूसरी बात इस आसव के विषय में यह है कि इसकी कृति में कई लोग

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पाठानुसार ही घीकुआर का रस, गुड़ और विजया एकत्र कर, चतुर्थांशं क्वाथ तैयार कर, फिर उसमें-धायके फूल, शहद, जायफल इत्यादि प्रक्षेप की औषधियाँ मिला, सन्धान कर रखते हैं। किंतु इसप्रकार की क्रिया से यह आसव, अरिष्ट में परिणत होजाता है, और विशेष लाभप्रद नहीं होता।

---

१४८ कुमार्यासव * नं० ४—गुल्म, उदावर्तादि नाशक।

विधि—घी कुँआर का रस २॥ सेर, गुड़ १। सेर, तेजपात, दारचोनी, इलायची, नागकेशर, लौंग, सैंधानमक, हल्दी, दारु-हल्दी, करंज, पीपल, मिरच, धाय के फूल, अकरकरा, बच, जावित्री और वायविडंग प्रत्येक का चूर्ण ४—४ तोले, तथा हरड़ का चूर्ण ८ तोले, एकत्र किसी शुद्ध चिकने मटके में भर, यथाविधि सन्धान कर, १५ दिन तक (ज्यादा से ज्यादा दो मास में उत्तम आसव तैयार होता है) रक्खा रहने दे। पश्चात् छान कर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तो० से ४ तोले तक। अनुपान—जल।

---

* रसस्तुलार्धं कौमारस्तदर्धं गुड मिश्रितः। चातुर्जात लवंगानां सैंधवस्य निशाद्वयोः॥ कुबेरकृष्णा मरिच धातकीनां पलं पलम्। पथ्या-चूर्णं पल युगं पलं चाकल्लकस्य तु॥ उग्रगंधा जातिपत्री विडङ्गानां पलं पलम्। एकीकृत्य शुचौ भाण्डे पक्षमेकं निधापयेत्॥ पलार्द्धं भक्षये-न्नित्यं गुल्मोदावर्त नाशनः। आध्मानं पार्श्वशूलं च जठराग्निं कफं हरेत्॥ मन्दाग्निं शमयेच्छ्वासकासं हिक्कां क्षयं तथा। यकृत्प्लीहं तथा शोफं नाशयेत्येपसेवितः॥

—गदनिग्रहे।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

गुण—गुल्म (गोला), उदावर्त, अफारा, पसली का दर्द, उदरव्याधि, कफदोष, मन्दाग्नि, खांसी, श्वास, हिक्का (हिचकी) क्षय, जिगर (यकृत का विकार), तिल्ली (प्लीहा) और सूजन को नष्ट करता है। जलोदर, कृमि विकार, पाण्डु, अशक्ति, वीर्यविकार, स्त्रियों के विकार तथा गर्भवती के विकारों पर भी यह उत्तम लाभदायक है। इसे बाल रोगों पर भी दे सकते हैं।

---

१४९ कुमार्यासव * नं० ५—यकृत, प्लीहा विकारे ।

विधि—घी कुआर का रस ३। सेर किसी शुद्ध कांच के पात्र में भर कर, उसमें—पुराना गुड़ ३२ तोले, शुद्ध मंडूर, सुहागा, सज्जी, जवाखार, पाँचों नमक, और नौसादर प्रत्येक ४—४ तोले, महीन चूर्ण कर मिलावे। पात्र का मुख अच्छी तरह सन्धान कर, ८ दिन तक धूप में रक्खे। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—६ माशे से १ तोला तक। अनुपान-शक्कर, बतासा, अथवा जल।

---

* कन्यारसाढके प्रत्नगुडतः कुडवद्वयम्। मण्डूरं टंकणं क्षारौ पंचैव लवणानि च ॥ नवसादर इत्यस्माद्वर्गाद्देयं पलं पलम्। कांचकोषे समाधाय मुखमस्य विमुद्रयेत् ॥ अष्टाहमातपन्यस्तमेकीभूत रसं पिबेत्। यकृत्प्लीहोदरेष्वेनं कुमार्यासवभाख्यया ॥

—सिद्धभेषजमणिमाला ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

गुण—यकृत् के तथा प्लीहा के सम्पूर्ण विकारों को, और उदर रोगों को यह शीघ्र नष्ट करता है।

---

१९० कुमार्यासव नं० ६—शूल, यकृत आदि नाशक।

(श्री० वैद्यराज पं० टीकादत्त जी भिषग्तम मुरादाबाद कृत)

विधि—घीकुआर का रस ६। सेर, किसी कांच की शुद्ध शीशी में भरकर उसमें सोंठ, मिरच, पीपल, हरड़, बहेड़ा, आमला, वायविडंग, अजवायन, अजमोद, नागरमोथा, चीता, पीपलामूल, कचूर, धनिया, लौंग, जायफल, जावित्री और भुनी हुई हींग प्रत्येक ५-५ तोले, सुहागा भुना हुआ, सज्जी, नवसादर, प्रत्येक १०-१० तोले, कालानमक, सेंधानक, खारीनमक और सांभर नमक प्रत्येक ३—३ छटाँक सब का चूर्ण कर मिला देवे। यथाविधि सन्धान कर १ मास तक रक्खा रहने दे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तो० से २ तोले तक। अनुपान-जल।

गुण—शूल, यकृत, प्लीहा, आँतों की गाठें तथा उदरशोथ आदि रोगों में अत्यन्त लाभप्रद है।

---

१९१ कुमार्यासव नं० ७—(स्वकृत)-अग्निप्रदीपक, यकृत आदि विकार नाशक।

विधि—घीकुआर का रस १० सेर, गुड़ ५ सेर, सुहागा १२ छटांक, सोंठ, मिरच, पीपल प्रत्येक ७-७ छटांक, काला

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

नमक ८ छटांक, नौसादर, कलमी सोरा, और कांच नमक प्रत्येक ६—६ छटांक एकत्र कर, किसी शुद्ध चिकने चीनी मिट्टी के पात्र में अथवा कांच की शीशी में भरकर, १ मासतक अनाज के ढेर में गाढ़कर रक्खे। फिर निकाल और छानकर, शीशियों में भरकर रख दे।

मात्रा—१ माशा से ६ माशे तक। अनुपान-जल।

गुण—उदर, यकृत तथा प्लीहा के सम्पूर्ण विकारों को नष्ट करता है, रुचि को बढ़ाता है, जठराग्नि को तेज करता है। दस्त साफ़ लाता है। मलेरिया ज्वर पर इसे देने से, ज्वर का वेग शीघ्र शांत होता है।

---

१५२ कुमार्यासव नं ८—प्लीहा, यकृत विकार नाशक।

विधि—घी कुंआर का गूदा १ सेर, पीपल १ तोला, काला नमक १ तो० और गुड़ १ सेर सब को एक चिकनी हांडी में भरकर, मुँह बन्द कर दे। एक मास के बाद छान कर बोतलों में भर लेवे।

मात्रा—१ तो० से ४ तो० तक। अनुपान—जल।

गुण—इसे प्रातःसायं, अवस्थानुसार उचित मात्रा सेवन कराने से प्लीहा और यकृत के विकार शीघ्र दूर होते हैं। ज्वर पर भी लाभदायक है।

(प्रयोग साहस्री)

---

१५३ कुमार्यासव नं० ९—पांडु, श्वासादि नाशक।

(वैद्यराज श्री० पं० अर्जुनदत्त जी भिवानी)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विधि—ग्वारपाठे का रस १ सेर, कालानमक १० तो०, कालीदाख २० तोले, और पिसी हुई हल्दी ४ तोले, सब को एकत्रकर २४ घंटे तक रख छोड़े, फिर कपड़े से छानकर, सबका रस निकाल लेवे । द्राक्षा का रस सब निकल आवे ऐसा छानना चाहिये । फिर बोतलों में भरकर दवा के समान भाग उत्तम शहद मिला देवे ।

मात्रा—२ माशे से १ तोला तक । वैसे ही चटावे ।

गुण—पेट की तमाम व्याधियाँ ७ दिन के अन्दर दूर कर देता है ।

---

१९४ कुमार्यासव नं० १०—सुजाक नाशक ।

(वैद्यराज श्री रामगोपाल जी मिश्र, गोंदिया)

विधि—घृतकुमारी का गूदा १ सेर, भुना सोरा १० तोले, शिलाजीत २ तो०, जवाखार २ तोले, लाहौरी फिटकरी २ तो०, सब को एकत्र कर बड़े मुँह की बोतल में बन्द करके रख देवे । एक मास बाद निकाल कर, काम में लावे ।

मात्रा—३० बूँद से ६० बूँद तक । अनुपान-जल । दिन में ३ बार ।

गुण—सुजाक की किसी भी अवस्था में पूर्ण गुण दिखलाता है ।

---

१९५ कुमार्यासव नं० ११—प्लीहा नाशक ।

(श्री पं० रामेश्वर जी शर्मा वैद्य)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विधि—घृत कुमारी का रस १ सेर और उत्तम मधु (शहद) २ सेर एकत्र मिलाकर बोतलों में भर, ठीक प्रकार से मुख का सन्धान कर, एक मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर काम में लावे।

मात्रा—१ तो० से ४ तोले तक। अनुपान-जल।

गुण—प्लीहा (तिल्ली) की विकृति पर बहुत ही अच्छा कार्य करता है।

नोट—उक्त बोतलका मुख विशेष दृढ़तापूर्वक सन्धान न कर, मुँह पर केवल वस्त्र लपेट, कस कर बाँध देने से ही आसव का उठान उत्तम प्रकारसे होता है, और वह बिगड़ने नहीं पाता।

---

१५६ कुमार्यासव नं० १२—प्लीहादि नाशक।

(पं० अनन्तदेवजी दीक्षित, वैद्यशास्त्री, खीरी)

विधि—घृतकुमारी (ग्वारपाठा) का गूदा ४ सेर, पुराना गुड़ २ सेर, शहद आध सेर, पांचों नमक २० तोले, लोह चूर्ण २० तोले, नौसादर ५ तोले तथा—सोंठ, कालीमिरच, पीपल, हरड़, बहेड़ा, आमला, चित्रक, नागरमोथा, वायविडंग, अजवायन, सुहागा, सज्जीखार और फटकरी प्रत्येक का चूर्ण २-२ तोले, तथा हींग और जवाखार १—१ तोला, सब को एकत्र मिला शुद्ध चिकने घड़े में भर, अच्छी तरह मुखमुद्रा कर धूप में २१ दिन तक रख छोड़े। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से २॥ तोले तक। प्रातः भोजन से पूर्व

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

और सायंकाल भोजन के बाद सेवन करे।

गुण—प्लीहा (तिल्ली तथा उदर रोगों पर रामबाण है।

नोट—लेखक महोदयने इसे 'प्लीहान्तकार्क' नाम से धन्वन्तरि में प्रकाशित किया है। योग बहुत लाभदायक है।
—सम्पादक।

---

१५७ कुमार्यासव नं० १३—उदररोग नाशक।
(राजवैद्य श्री बनवारीलालजी जैन)

विधि—घृतकुमारी (ग्वारपाठे) का स्वरस १॥ऽ मन लेकर एक शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें शहद ऽ३॥। सेर, धायके फूलों का चूर्ण ऽ२ सेर, तथा सोंठ, कालीमिरच, छोटी पीपल, तेज, पत्रज, चव्य, छोटी इलायची, चित्रक, कचूर, नागकेशर, झाऊ की जड़, अजमोद, सफेद जीरा, झड़बेरी की जड़, असगंध, रास्ना, बिधारा और इन्द्रजौ प्रत्येक का चूर्ण ६-६ तोले, तथा बबूल का कस ऽ॥ मुनक्का ऽ२॥ सेर, लाल या श्वेत पुनर्नवा ऽ। भर चूर्ण कर मिला देवे। पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, एक मास तक जमीन में गाढ़ रक्खे। फिर निकाल, भबके में डाल कर अर्क खींच लेवे।

मात्रा—रोगी के बलानुसार २-२ तोले। दोपहर को १२ बजे और रात्रि को १० बजे सेवन करावे।

गुण—बहुत सुगंधित और गुणकारी है। उदरविकारों से हो प्रायः प्रमेह, प्रदर, शोथ, प्रतिश्याय, जीर्णज्वर, यकृत, तिल्ली, अष्ठीला, कब्जी, बात और पित्त के विकार होते हैं, अतः उचित अनुपान से इस कुमारी आसव को उक्त सब रोगों पर दे सकते हैं। (धन्वन्तरि)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

१५८ कुमार्यासव नं० १४—उदरशूल नाशक ।

(श्री पं० प्रभुनारायण जी त्रिपाठी 'सुशील')

विधि—किसी शुद्ध चिकने मटके में ग्वारपाठे का गूदा १ सेर और सैंधानमक २० तोले भरकर रख देवे, जब सब गूदा गल जाय तब उसमें नीबू का अर्क और अदरख का अर्क प्रत्येक २०-२० तोले, कालानमक ४ तोले और हींग १ तोला मिलाकर पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, २१ दिन तक ज़मीन में गाढ़ रक्खे। फिर निकाल और छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—६ माशे से १ तोला तक।

गुण—उदर में कैसी भी पीड़ा हो, इसके सेवन से तत्काल दूर होजाती है।

---

१५९ कुमार्यासव नं० १५—गुल्मादिनाशक ।

(आयुर्वेदज्ञ श्री आर० के शर्मा रसायनाचार्य, जगरांओं)

विधि—घीकुआर का गूदा ३ सेर, सुहागा १२ तोले, नौसादर १२ तो०, सैंधानमक ४ तो०, दारचीनी २ तो० और सोरा १ तोला सब को शुद्ध चिकने मटके में भर मुख संधान कर १० दिन तक सुरक्षित रक्खे। फिर छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—२॥ तोला तक।

गुण—गुल्म, उदावर्त, अफारा; पसली का शूल, उदर व्याधि,

---

* कुमार्यासव के शेष प्रयोग देखिये लोहादिहरासव और मंदाग्नि हरासव।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मंदाग्नि, यकृत विकार, प्लीहारोग और शोथ (सूजन) को नष्ट करता है।

---

१६० कुमार्यारिष्ट—मन्दाग्नि, प्लीहा आदि नाशक।

(आयुर्वेदाचार्य श्री पं० रामेश्वर प्रसाद जी कृत)

विधि—घृतकुमारी का गूदा २५ सेर, कैथ का गूदा २५ सेर, गुड़ १० सेर, अजवायन कुटी हुई १ सेर नवसादर आध सेर, हरड़ छोटी कुटी हुई, सोंठ का चूर्ण, चित्रक चूर्ण, पीपलामूल का चूर्ण, सुहागा चौकिया और हरा कसीस प्रत्येक २०-२० तोले लेकर सब को मिट्टी के पात्र में भर कर जमीन में गाड़ दे। ६। ७ दिन बाद अर्क खींच लेवे। १६० तोला अर्क में चित्रक, अजवायन, दोनों जीरे, भुनी हींग, नवसादर, चौकिया सुहागा भुना हुआ, पोदीना सूखा, यवक्षार, इमलीक्षार, नीबू का सत्व, अमलवेंत, निशोथ, सज्जीक्षार, अपामार्गक्षार, सोंठ, धनियां मूलीक्षार, पलासक्षार, सैंजनक्षार और मंडूर, भस्म प्रत्येक १-१ तोला, पांचों नमक २५ तोले, जंबीरद्राव १० तोले और शंखद्राव ६० बून्द ये सब अच्छी तरह मिला देवे। पश्चात् अच्छी तरह बंद करके रक्खे। २-३ दिन के बाद इसे काम में ले सकते हैं।

मात्रा—१ तोला। अनुपान—जल।

गुण—मंदाग्नि दूर होती है। भूख खूब लगती है। और प्लीहा, यकृत विकार शीघ्र नष्ट होते हैं।

(राकेश)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

१६१ कुमुदासव—मूर्च्छा, अपस्मारादि नाशक।

विधि-कमल, खस, खम्भारी के फल, मजीठ, नीलोफर, इलायची, खिरेंटी, जटामांसी, नागरमोथा, अनन्तमूल, त्रिफला (हरड़, बहेड़ा, आमला), वच, कचूर, गौरीसर, नीलोत्पल, पटोलपत्र, पित्तपापड़ा, अर्जुन की छाल, महुआ, मुरामांसी, प्रत्येक का चूर्ण एक एक पल (४-४ तोले), मुनक्का २० पल (१ सेर), धायके फूल १६ पल (६४ तोले), पानी २ द्रोण (२६ सेर), खांड १०० पल (५ सेर) और शहद ५० पल (२॥ सेर), सब द्रव्यों को एकत्र कर, शुद्ध चिकने मिट्टी के पात्र में भर, अच्छी तरह सन्धान कर लगभग १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक। अनुपान—दूध या जल।

गुण—मूर्च्छा, मृगी, योषापस्मार (हिस्टेरिया), उन्माद (पागलपन), भ्रम, चक्कर आना, मस्तिष्क की दुर्बलता आदि रोग दूर होते हैं। मूर्च्छा और मृगी में अनेक बार इस आसव के सेवन से उसी समय रोग दूर होकर, रोगी सुख की नींद सोता है।

नोट—वैद्यराज श्रीयुत रामेश्वरजी शर्म्मा ने उक्त प्रयोग धन्वन्तरि (भाग ४, अंक ८ में) प्रकाशित कराया है, और बतलाया है कि कविराज नगेन्द्रनाथसेन कलकत्ता वालों का पेटेन्ट कुमुदासव या कुसुमासव यही है। इस प्रयोग में नीलोफर और नीलोत्पल एक ही पदार्थ है। दो बार लिखे गये हैं, अतएव दुगुना लेना ठीक होगा। सन्धानावधि, मात्रा, गुण आदि के विषय में प्रयोग प्रेषक ने कुछ भी नहीं लिखा था, हमने

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अपने विचार से लिख दिया है। यदि कुछ त्रुटि हो तो विज्ञजन हमें सूचित करने की कृपा करें।

(कृष्णप्रसाद त्रिवेदी)

---

१६२ कुशासव--(स्वकृत)-प्रदर हर।

विधि—कुश (दर्भ-डाभ) की जड़ का अधकचरा चूर्ण ५ सेर लेकर १ मन-१२ सेर जल में पकावे। १३ सेर जल शेष रहने पर, छानकर चिकने मिट्टी के पात्र में भरे, और उसमें धाय के फूल १२ छटांक, केले के कद का निचोड़ा हुआ जल ४ सेर, दारुहल्दी, नागरमोथा, श्वेतजीरा, तगर और लवंग प्रत्येक ४-४ तोले चूर्ण कर डाले, शहद ४ सेर मिला देवे। योग्य विधि से सन्धान कर १ मास तक सुरक्षित रक्खे, पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तो० से ४ तो० तक। अनुपान—जल।

गुण—अत्यन्त बढ़ा हुआ रक्तप्रदर शीघ्र दूर होता है। मूत्रावरोध भी इसके सेवन से नष्ट होता है। अत्यन्त बढ़ी हुई गरमी, और पित्तजन्य विकार दूर होते हैं। वीर्यस्राव को भी यह रोकता है।

कुष्टहरासव—देखिये, महामांजिष्ठाद्यासव।

१६३ कुष्टनाशकारिष्ट—* कुष्ट, प्रमेहादि नाशक।

---

* पूतीक चव्य चित्रक सुरदारु सारिवा दंती त्रिकटुकानां प्रत्येकं पद्-

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विधि—पूतिकरंज, चव्य, चित्रक, देवदारु, सारिवा, दन्ती, सोंठ, कालीमिरच, पीपल, प्रत्येक का चूर्ण २४–२४ तोले और बेर की छाल, हरड़, बहेड़ा, आमला प्रत्येक का चूर्ण १६–१६ तोले लेकर, शुद्ध घृत से चिकने किये हुए एवं पीपल, शहद और घृत से लेप किये हुए मटके में भर कर उसमें–७ कुडव (१ सेर ३२ तो०) जल (जल कम से कम १० सेर तक मिलाना ठीक होगा), ८ तोले लोहचूर्ण और २॥ सेर गुड़ मिलाकर, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, जौ की राशि में ७ दिन तक दवा रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—यथाशक्ति १ तोला से २॥ तोले तक।

गुण—कुष्ट (कोढ़) प्रमेह, मेदोरोग (स्थूलता), पांडु, और शोथ (सूजन) को दूर करता है।

नोट—वास्तव में इसे अरिष्ट नहीं वल्कि आसव ही कहना उपयुक्त होगा। ७ दिन में यह पूर्णतया सिद्ध नहीं होता। कम से कम १५ दिन तक इसे बन्द रखना चाहिए।

कुसुमासव—देखिये, कुमुदासव।

पलिका भागा बदर कुडवस्त्रिफला कुडव इत्येतेषां चूर्णानि ततः पिप्पली मधुघृताक्तः प्रक्षिप्ते घृतभाजने प्राकृत संस्कारे। सप्तोदक कुडवानयोरजो ऽर्द्ध-कुडवमर्द्धतुलां च गुडस्याभिहितानि चूर्णान्यावाप्यस्त्वनुगुप्तं कृत्वा यवपल्ले सप्तरात्रं वासयेत्ततो यथावलमुपयुंजीतैषोरिष्टः कुष्ठमेहमेदः पांडुरोगश्वय-थूनपहन्ति ॥

—सुश्रुत।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

१६४ कूष्माण्डासव * नं० १—क्षय, प्रमेहादि नाशक ।

विधि—पेठे को कूट कर निकाला हुआ रस १३ सेर, गुड़ ६॥ सेर, सोंठ, मिरच, पीपल, लोंग, दारचीनी, तेजपात, इलायची, नागकेशर, जायफल, कंकोल, जावित्री, फूल प्रियंगु, कैथ, इन्द्रजौ, गोखरू, गिलोय का सत, भारंगी, खिरेंटी के बीज, हाऊबेर, सुपारी, देवदारु, लताकस्तूरी (अभाव में धाय के फूल),

---

* कूष्माण्डं जर्जरीकृत्य रसमादाययत्नतः । द्रोणं गुडार्धं दातव्यं चूर्णमेषां विनिक्षिपेत् ॥ कटुत्रिकं लवंगं च चातुर्जातं तथैव च । जातीफलं च कंकोलं जातिपत्री प्रियंगुकम् ॥ कापित्थ वत्सकं चैव बीजं गोक्षुरकस्य च । अमृतासत्त्व भार्ग्यौ च बलाबीजं तथैव च ॥ हपुषा क्रमुकं चैव देवदारु मदावहम् । मुस्तं खदिरसारं च चित्रकं च फलत्रिकम् ॥ रास्ना यष्ट्याह्वकं चापि तुम्बरुं नागकेसरम् । ग्रन्थिकंचाजमोदा च कारवी दीप्यकस्तथा ॥ कट्फलं च तुगाक्षीरीह्याककल्लकसुटिङ्गणम् । कपित्थवल्कलं चैव शताह्वा गजशेलुकम् ॥ कलिंगकाश्च काकोली शठी मोचरसं घनम् । कोकिलाक्षस्य बीजानि कसेरुः सहदेविका ॥ भूनिंबं चाविका स्पृक्का पद्मकं च निशाद्वयम् । धान्यकं सुरदाली च क्षीरकन्दं तथैव च ॥ एतानि चाक्षमात्राणि लोहचूर्णं पलाष्टकम् । धातक्याः शोडषपलं घृतभाण्डे निधापयेत् ॥ मासार्धं च तथा भूमौ निक्षिपेदतियत्नतः । अनेन विधिना सिद्ध आसवः परिकीर्तितः ॥ पीत्वास्य पलमेकं तु प्रातरुत्थाय नित्यशः । धातुक्षयं च मन्दाग्निं प्रमेहं पांडुमेव च ॥ अर्शांसि ग्रहणीदोषान् प्लीहोदरभगन्दरान् । आमवातं रक्तपित्तं श्लेष्मरक्तं तथैव च । निहन्ति वातजान् रोगान् मेदः स्थौल्यापहासवः ॥

— गदनिग्रह ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

नागरमोथा, खैरसार, चीते की जड़, हरड़, बहेड़ा, आमला, रास्ना, मुलैठी, तुम्बरु (नेपाली-धनिया), नागकेशर, पीपलामूल, अजमोद, कालाजीरा, सफेदजीरा, कायफल, वंसलोचन, अकरकरा, उटंगन के बीज, कैथ की छाल, सोये के बीज, गजपीपल, लिसोड़े, कुड़ेकी छाल, काकोली (अभाव में असगंध), कचूर (कपूर-कचरी), मोचरस, नागरमोथा, तालमखाना, कसेरु, सहदेई, चिरायता, चव्य, लाजवती की जड़, पद्माख, हल्दी, दारुहल्दी, धनिया, बन्दाल, बिदारीकन्द प्रत्येक औषधि का चूर्ण १—१ तोला, लोहे का बुरादा ३२ तोले और धाय के फूल १३ छटाँक। सब को शुद्ध चिकने मिट्टीके पात्र में भरकर, तथा ठीक प्रकार से सन्धान कर, १५ दिन तक भूमि में गढ़ा रहने देवे। पश्चात् छान कर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक। अनुपान—जल।

गुण—धातुक्षय, मन्दाग्नि, प्रमेह, पांडु, अर्श (बवासीर), संग्रहणी, प्लीहा (तिल्ली), उदररोग, भगन्दर, आमवात, रक्तपित्त, कफदोष, खून और बादी के दोष, गठिया, मेदोवृद्धि (स्थूलता) नाशक है। और उष्णताशामक, शांतिदायक तथा क्षय रोगी के लिये परम लाभदायक है।

---

१६९ कूष्माण्डासव * नं० २—कास, श्वास नाशक।

---

* कूष्माण्डं च फलं पक्कं तस्मिँश्छिद्रं तु कारयेत्। छिद्रमध्ये गुडो देयो द्वितुलश्च शनैः शनैः॥ त्वचाबीजं च उत्कृष्य स्निग्धभाण्डे निधापयेत्। वदरीत्वक्पलान्यष्टौ तस्य क्वाथं प्रदापयेत्॥ द्वौ कसेलौ च धातक्या

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विधि—पके हुये पेठे के अन्दर का गूदा लगभग १३ सेर लेकर, उसके साथ गुड़ १० सेर, बेरी की छाल ३२ तोले, १ मन जल में डालकर मंदाग्नि से पकावे। २० सेर जल शेष रहने पर, चिकने मटके में भर उसमें दोनों प्रकार के कसेरू (राजकसेरू और चिचोड़), धाय के फूल, हाऊबेर, हरड़ बहेड़ा, आमला, सुगन्धवाला, काकड़ासिंगी, भारंगी, पोहकरमूल, कालीमूसली, कौंच के बीज, कंकोल, बन्सलोचन, मुलैठी, मोचरस, नागरमोथा, पीपलामूल, अष्टवर्ग-(मेदा, महामेदा, जीवक, ऋषभक, ऋद्धि, वृद्धि, काकोली, क्षीरकाकोली), अष्टवर्ग की औषधियों के अभाव में-शतावरी, विदारीकन्द, असगन्ध और वाराहीकन्द लेवे। दारचीनी, इलायची, पत्रज, नागकेशर, वायविडंग, सोंठ, मिरच, पीपल, चित्रकमूल, केशर, जावित्री,

---

हपुषा च पलं पलम्। त्रिफला ह्रीबेरं च शृंगी भार्ङ्गी च पुष्करम् ॥ तालमूली स्वयंगुप्ता कंकोलं वंसलोचनम्। यष्टी मोचरसं मुस्ता ग्रन्थिकं चाष्टवर्गकम् ॥ चातुर्जातं विडंगानि व्योषं चित्रक कुंकुमम्। जातीपत्रं लवगं च करभं मालतीफलम् ॥ दशांघ्रि रक्तसारं च कट्फलं रेणुका शटी। तिक्तसार चतुःकर्षमाटरुष कुलिंजनम् ॥ अजमोदाश्वगन्धा च चव्यं माजूफलं वरी। सारं सूरण तेजबलं ताळीसं श्याम पूगकम् ॥ एतेषां कर्षमात्रं च सूक्ष्मचूर्णं तु कारयेत्। मृतभाण्डे क्षिपेत्सर्वं पलमेकं भजेन्नरः ॥ कासं श्वासं च हृद्रोगं पाण्डुरोगं क्षतक्षयम्। गुल्मोदरं ग्रहण्यर्शो मूत्रकृच्छ्रं तथाश्मरी ॥ प्रमेह शोफातीसार वातपित्तकफापहः। कूष्माण्डासव इत्येष बलपुष्टमलशोधनः ॥

—योगचिन्तामणि।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

लौंग, अकरकरा, जायफल, दशमूल (सालवन, पिठवन, वड़ी कटेरी, छोटी कटेरी, गोखरू, बेल की जड़, सोनापाठा, कुम्भेर, पाढ़ल और अरणी) लालचन्दन, कायफल, रेणुका (संभालू के बीज), कचूर, और कुटकी प्रत्येक ४-४ तोले, बांसा, कुलिंजन, अजमोद, असगन्ध, चव्य, माजूफल, शतावर, खदिरसार, जिमीकन्द, तेजबल, तालीसपत्र और चिकनी सुपारी प्रत्येक १—१ तोला, इन सब द्रव्यों का महीन चूर्ण कर मटके में डालें। योग्य रीति से सन्धान कर १ मास तक रक्खा रहने देवे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक। अनुपान-दूध या जल के साथ, प्रातः सायम् रोगी को सेवन करावे।

गुण—खांसी, श्वास (दमा), हृदय सम्बन्धी रोग, पाण्डु, उरःक्षत, राजयक्ष्मा (क्षय), गुल्मरोग, उदररोग, संग्रहणी, बवासीर, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, प्रमेह, सूजन, अतीसार नाशक है। त्रिदोपनाशक, वलवर्धक और मलशोधक है।

नोट—कोई २ उक्त सब द्रव्यों को १ मन जल में खूब खौला कर (पकाकर) फिर मटके में डालते हैं, और एक मास बाद इसका अर्क खींच कर काम में लाते हैं। यह आसवार्क भी श्रेष्ठ लाभदायक होता है।

—सम्पादक।

---

१६६ कूष्माण्डासव * नं० ३—प्रमेह, मूत्रकृच्छ्रादि नाशक।

---

* शतावर्याश्वगन्धा च गोक्षुरं दशमूलकम् । अश्मभेद कणा सुंठी

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विधि—शतावरी, असगन्ध, गोखरू, सालवन, पिठवन, बड़ी कटेरी, छोटी कटेरी, गोखरू, वेल की जड़, सोनापाठा, कुंभेर, पाढल, अरनी, पखानभेद, छोटी पीपल, सोंठ, धमासा, पुनर्नवा, हरड़, बहेड़ा, आमला, पोहकरमूल, भारगी, रास्ना, चित्रकमूल, अडूसा, गोलोचन, हाथीकंद, दारुहल्दी, खस, वेर की छाल, ये प्रत्येक ८-८ तोले चूर्ण कर लेवे, और छोटी कटेरी १॥ सेर ४ तोले लेकर, सब को जवकुट कर १३ सेर जल में पकावे। (यहाँ जल का प्रमाण बहुत कम दिया है, चतुर्थांश काढ़ा बराबर नहीं उतर सकता, अतएव जल चौगुना १ मन १२ सेर डाल कर काढ़ा पकाना चाहिये) चौथाई जल शेष रहने पर, उतार कर छान लेवे, और शुद्ध चिकने मटके में भर कर उसमें दारचीनी, इलायची, पत्रज, नागकेशर, लोंग, बड़ी

धान्यवास पुनर्नवा ॥ त्रिफला पौष्करं भार्गी रास्ना चित्रक वासकम् । पित्तंकरेणुका दार्वी उशीरं बदरीत्वचम् ॥ एषां पलद्वयं कुर्यात्क्षुद्रा प्रस्थद्वयं तथा । द्रोणमेकं जलंदत्वा पादशेषंच कारयेत् ॥ चातुर्जातं लवंगानामेळा जातीफलं तथा । लोहचूर्णस्य कुडवं कुडवं चाभ्रक वंगयोः ॥ एतेषां मेलितं पात्रं स्थापितं धान्य राशिके । मासमेकं परिस्थाप्य भक्षयेच्च द्विकर्षिकम् ॥ प्रमेहं मूत्रकृच्छ्रं च पाण्डुरोगं च कामलम् । रक्तपित्तं तथा वात रक्त निष्ठीवनं ततो ॥ नासारक्तं चार्बुदं च कृणत्वं च विनाशयेत् । स्त्रीणांच प्रदरं हन्ति जीर्णं रक्त प्रकोपजम् ॥ ये चान्ये वातजा रोगा ये चान्ये शोणितस्य च । धातुक्षयं धातुहानिं रक्तरोगविनाशनम् ॥ बलीपलितजं हन्ति बालानां पुष्टिकारकः । कुष्माण्डकासवो ह्येष विश्वामित्रेण पूजितः ॥

(श्री कैष्यदेव विरचित 'वैद्यक-व्यापार')

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

इलायची, जायफल, लोहभस्म, अभ्रकभस्म, और वंगभस्म प्रत्येक ४-४ तोले (पाठ में १६-१६ तोले लिखा है, जो कि अत्यधिक है) डाल कर, यथाविधि सन्धान कर अनाज की रास में, एक मास तक गाढ़ कर रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ से २ तोले तक। अनुपान—जल।

गुण—प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, पाण्डुरोग, कामला, रक्तपित्त, वातव्याधि, रक्तस्राव, नकसीर, रसौली, कालाकुष्ठ, स्त्रियों का चिरकालीन रक्तप्रकोपजन्य रक्तप्रदर, धातुक्षय, रक्तविकृति, बालों का झड़ना, बाल सफेद होना, इत्यादि रोग नाशक है। बालकों को पुष्टिदायक है।

नोट—इस प्रयोग में कूष्माण्ड (पेठा) किंचिन्मात्र, भी नहीं डाला गया है, अतएव इसे 'कूष्माण्डासव' न कहकर 'कण्टकार्यासव' कहना योग्य होगा। कारण कण्टकारी (कटेरी) इसमें अधिक प्रमाण में है। दूसरी बात-इसमें गुड़ शहद और धायके फूल वगैरा आसव को उपयुक्त उठाने वाले द्रव्य न होने से विशेष प्रभावशाली नहीं हो सकता। इसमें शहद ५ सेर और धायके फूल १२ छटाँक अवश्य मिला देने चाहिये।

—सम्पादक।

---

१६७ कृष्णजीरकाद्यरिष्ट—(स्वकृत)—विषमज्वरादि पर।

विधि—कालाजीरा (स्याहजीरा), नीम की छाल, हरड़, बहेड़ा, आमला और गिलोय प्रत्येक १५-१५ तोले, जवकुट कर, ३२ सेर जल में पकावे। जब लगभग ४ सेर जल शेष रहे,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

तब उतार, और छानकर चिकनी हाँडी में भरे और उसमें शहद १३ छटांक, पुराना गुड़ आध सेर, अच्छी तरह घोलकर, सन्धान कर रक्खे। एक मास के पश्चात् छान कर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तो० से ४ तोले तक। अनुपान-जल।

गुण—तिजारी, चौथिया आदि विषमज्वर, मंदाग्नि और वातव्याधि को शीघ्र दूर करता है।

कृष्णमध्वासव—देखिये मध्वासव नं० २।

केंवाचारिष्ट—देखिये, कपिकच्छ्वारिष्ट।

केसरासव—देखिये, कुङ्कुमासव।

१६८ कोलकन्दासव—(स्वकृत)—कफघ्न, मूत्रल।

विधि—ताजे जंगली प्याज लाकर सुखाले, पश्चात् जवकुट कर या मोटे २ टुकड़े कर, ८ तोले लेवे, और उसमें रेक्टिफाइड स्प्रिट ५० तोले मिला, ३ दिन तक बन्द शीशी, या कांच के बड़े पात्र में रक्खे। पश्चात् फलालैन द्वारा खूब निचोड़ते हुए छानकर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—१० बूँद से ३० बूँद तक।

गुण—कफ प्रकोप निवारक, मूत्र साफ लाता है, एवं मूत्रकृच्छ्र निवारक है। कास, प्रतिश्याय, श्वास, जलोदर और क्षय पर भी लाभदायक है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कौंछारिष्ट--देखिये, कपिकच्छ्वारिष्ट।

१६६ क्विनीनासव--(स्वकृत)—ज्वरनाशक।

विधि—नं० १-क्विनाइन हैड्रोक्लोरेट १० माशे तथा नारंग्यासव ५० तोले एकत्र मिला, कांच की बोतल में भर, मुख अच्छी तरह बन्द कर, ३ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—३० बून्द से १२० बून्द तक।

गुण—शीतज्वर, मलेरिया ज्वरनाशक है। ज्वर के उतार पर इसे देना चाहिये।

विधि-नं०२-क्विनाइन १० रत्ती, सैट्रिकएसिड (अथवा नीबू का सत) १५ रत्ती और नारंग्यासव ५० तोले एकत्र मिला बोतल में भर, अच्छी तरह कार्क बन्द कर, ३ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—३० बून्द से ६० बून्द तक।

गुण—उपर्युक्तानुसार।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

ख

१७० खण्डासव नं० १--श्वास, कास नाशक।

(रसायनाचार्य श्री आर. के. शर्म्मा, जगराओं)

विधि—देशी खांड, फटकरी, और शहद प्रत्येक दो-दो सेर, छोटी इलायची का चूर्ण २॥ तोले और जल ३ सेर, सब को एकत्र मिला, किसी शुद्ध पीतल के पात्र में भर, मुख पर परई या सराव ढांक कर, ऊपर से अच्छी तरह वस्त्र लपेट कर, घास में दवा कर रक्खे। तीसरे या चौथे दिन डन्डे से हिला देना चाहिए। एक मास पश्चात् निकाल कर, ऊपर का नितरा हुआ आसव बोतलों में भर कर रख देना चाहिए।

मात्रा—१ तोला।

गुण—सब प्रकार के श्वास और कास पर अक्सीर है।

Digitization by American Academy of Indic Studies: AAIS(USA)

खण्डासव नं० २—देखिये, शर्करासव।

१७१ खदिरासव *—कुष्ठ नाशक।

विधि—५ सेर खैर की छाल को जवकुट कर १ मन १२ सेर जल में पकावे। १३ सेर जल शेष रहने पर उतार कर, छान लेवे, ठंडा होजाने पर शुद्ध चिकने मटके में भर कर, उसमें शहद ७॥ सेर, सोंठ, मिरच, पीपल, हरड़, बहेड़ा, आमला, पिण्ड-खजूर, दारुहल्दी, बावची, गिलोय, और वायविडंग प्रत्येक का महीन चूर्ण ४-४ तोले तथा धायके फूल आध सेर चूर्ण कर मिला देवे। पश्चात् अच्छी तरह हिला कर रख देवे, इसी तरह १६ दिन तक रोज एक या दो बार हिला दिया करे। १६ वें दिन उसमें ५ सेर उत्तम शहद और मिला, कर पात्र का मुख अच्छी तरह सन्धान कर, एक मास तक रक्खा रहने देवे। पश्चात् छानकर कांच की शीशी या चीनी मिट्टी के पात्र में भर कर, उसमें १ माशा कस्तूरी और दो माशे शुद्ध कपूर मल-मल के कपड़े में बांध कर डाल देवे, और मुख अच्छी तरह

---

* खदिरस्य तुलाम्भसि त्रिपचेच्चतुर्द्रोण संमिते शेषे।
पादे विगृह्य शीते दधान्मधुनस्तुलां सार्धाम् ॥
वस्त्र विपूतं चूर्णं त्र्योष त्रिफला पिण्डखर्जूरी।
स्वर्ण त्वग्वाकुचिकामृता विडंग पलांशानाम् ॥
धातकीं दशपलां दत्वा प्रविलोडितम् नित्यम्।
यावत्षोडश दिवसाः षोडशकें मधुतुलां दद्यात् ॥
मासात्परतः पेयो दत्वा मृगनाभि माषक पटवद्धम्।
कर्पूरमाषद्वयमेष खदिरासवो महाकुष्ठे ॥
—गदनिग्रह।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

बन्द करके रख दे। लगभग १० या १५ दिन के बाद इसका सेवन प्रारंभ करना चाहिये।

मात्रा—१ से ४ तोले। अनुपान—जल।

गुण—यह महाकुष्ठ (गलित कुष्ठ), उपदंश, वातरक्त तथा त्वचा के विकारों को शीघ्र नष्ट करता है। कपाल, औदुम्बर, मंडल, सिध्म, काकणक, पुंडरीक और ऋक्ष जिव्हक ये ७ महा कुष्ठ इसके सेवन से दूर होते हैं।

---

१७२ खदिरसारासव नं० १—(स्वकृत)—कुष्ट नाशक।

विधि—खैरसार (उत्तम कत्था) ५ सेर लेकर १ मन १२ सेर जल में पकावे। १३ सेर जल शेष रहने पर, छानकर, घी से चिकने किये हुये मटके में भर कर, ठंडा होजाने पर, उसमें आमले का रस ५ सेर, शहद ८ सेर और घी २ सेर मिला, ठीक प्रकार से सन्धान कर १ मास तक रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले। अनुपान-जल।

गुण—कुष्ठ और रक्तविकार नाशक है।

---

१७३ खदिरसारासव नं० २—अतिसार नाशक।

विधि—कत्था ४ भाग, खैर की छाल १ भाग, मद्यसार (४५ प्रतिशत वाला) २५ भाग एकत्र मिला, बड़ी बोतल में भर ७ से १५ दिन तक रक्खे पश्चात् छानकर काम में लावे।

मात्रा—२ बून्द से ६० बून्द तक। अनुपान-जल।

Digitization by American Academy of Indic Studies -AAIS(USA)

गुण—आमातिसार, रक्तातिसार नाशक है।

---

१७४ खदिरसाराद्यासव—(स्वकृत)-अतिसारादिनाशक।

विधि—कत्थे का चूर्ण ६॥ तोले, दारचीनी का चूर्ण २॥ तोले और रेक्टिफाइडस्प्रिट ५० तोले एकत्र मिला कांच की बोतल में भर, अच्छी तरह मुख बन्द कर रक्खे। २ दिन के बाद फलालेन से खूब निचोड़ते हुये छानकर बोतल में भर कर रख दे। यदि स्प्रिट ५० तोले से कम होजाय तो उसमें ऊपर से स्प्रिट और डाल देवे।

मात्रा—३० बून्द से १२० बून्द तक।

गुण—अतिसार, रक्तस्राव, कफस्रावादिनाशक है।

---

१७५ खदिरारिष्ट * नं १—कुष्ट, पाण्डु आदि नाशक।

---

* खदिरस्य तुलार्धं तु तत्तुल्यं देवदार्वपि। वराया विंशतिर्दार्व्याः पलानां पंच विंशतिः॥ आकुच्या द्वादशपलान्यष्टद्रोणेऽम्भसः पचेत्। द्रोणशेषे कषाये तु पूतशेषे विनिक्षिपेत्। धातक्या विंशतिपलं माक्षिकस्य शतद्वयम्। शर्करायास्तुलामेकां चूर्णानिमानि दापयेत्॥ कङ्कोलकं लवंगं च एलाजातीफलत्वचम्। केशरं मरिचं पत्रं पलिकान्युपकल्पयेत्॥ पिप्पलीनां तु कुडवं स्थापयेद्घृतभाजने। मासादूर्ध्वं पिबेन्मात्रामपेक्ष्याग्नि बलाबलम्॥ सर्वकुष्ठं हरो ह्येष पाण्डुहृद्रोगकासनुत्। क्रिमि ग्रंथ्यर्बुदग्रन्थि गुल्म प्लीहोदरान्तकृत्॥ एष वै खदिरारिष्टः कृष्णात्रेयेण पूजितः॥

—योगरत्नाकर।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विधि—खैर की छाल २॥ सेर, देवदारु २॥ सेर, हरड़, बहेड़ा, आमला तीनों मिलाकर १ सेर, दारुहल्दी १। सेर और बावची ४८ तोले लेकर, जवकुट कर, २ मन २४ सेर जल में क्वाथ पकावे। १३ सेर जल शेष रहने पर, छान कर, ठंडा हो जाने पर उसमें-धाय के फूलों का चूर्ण १ सेर, शहद १० सेर, खांड ५ सेर, तथा कंकोल, लौंग, बड़ी इलायची, जायफल, दारचीनी, नागकेसर (असली), कालीमिरच और तेजपात ये प्रत्येक ४—४ तोले, पीपल का चूर्ण १६ तोले मिलाकर, घृत से चिकने किये हुए मटके में सन्धान कर रक्खे। एक मास के बाद निकाल कर छान लेवे।

मात्रा—१ तो० से ४ तोले तक। अथवा अग्निबलानुसार यथोचित मात्रा, जल के अनुपान से देवे।

गुण—सब प्रकार के कुष्ठ, पाण्डु, हृदय के रोग, खाँसी, कृमिरोग, ग्रन्थि, अर्बुद, गुल्म, प्लीहा, और उदर विकारों का नाशक है। यह अरिष्ट अत्यन्त पाचक और किंचित् सारक होने के कारण अजीर्ण, आमवात, गंडमाला, तथा पित्तजन्य विकारों का शामक है। श्वेतकुष्ठ और किलासकुष्ठ के निवारणार्थ इसका सेवन कई दिनों तक बराबर करते रहना चाहिये। यदि विकार का जोर ज्यादा हो तो रोज प्रातःकाल महामंजिष्ठादि क्वाथ का सेवन करावे और सायंकाल को इस अरिष्ट का सेवन कराना चाहिये। पथ्य में-घी, रोटी और दूध देवे। नमक, प्रवास और स्त्री-सेवन अपथ्य हैं। कोष्ठबद्धता में इसका सेवन नहीं करना चाहिये।

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

खदिरारिष्ट नं० २—देखिये, कनकविंद्वरिष्ट नं० १ और २ ।

१७६ खर्जूरासव * नं० १ राजयक्ष्मा (क्षय) नाशक ।

* खर्जूरमुस्तामलकीनिकुम्भा द्राक्षाभया पूग फलानि पाठा ।
भार्ङ्गी शटी कुण्ठ जलाजमोदं मूलं कणायाः सपलङ्कषां वै ॥
पुनर्नवा कायफलं प्रियंगुः कर्चूरकं कृष्णमजाजि विस्ते ।
त्रिवृच्छिवाच्छलिधमासकं च लज्जालुरोहीतकुलिंज मूळम् ॥
अमूनि सर्वाणि महौषधानि चत्वारि चत्वारि पलानि चैव ।
मांसी चतुर्जात कणा लवंगं जातीफलं चन्दन लोहचूर्णम् ॥
प्रमाणतो द्वि द्वि पलान्यमूनि सुधातकीपुष्प पळानिसप्त ।
गुडस्य सप्त त्रिगुणानि दद्यान्मणानि संचूर्ण्य ततः समस्तम् ॥
घृतस्य भाण्डे विपुळे निवेश्य दशोत्तरं प्रस्थशतं जलस्य ।
क्षिप्त्वा क्षिपेत्पंचदिनानि भूमौ निष्पन्न कल्पं हृदये विचार्य ॥
षष्ठे दिने तच्च सुयोजनीयं ताम्रस्य पात्रं द्वयमध्य भागे ।
शतत्रयं नागवल्लादलानां सहस्रयुग्मं शतपत्रकाणाम् ॥
प्रक्षाल्यदेयं विधिनाऽथसन्धि विमुद्र्यचुल्ल्यां विनिवेश्ययन्त्रम् ।
निष्कासयेदर्कमतोयथावद्दत्वाजलं चोपरियंत्रकस्य ॥
बलाबलं रोग निपीडितानां विमृश्य देयः पलक प्रमाणः ।
खार्जूर संज्ञः प्रिय आसवोऽयं विषूचिका यक्ष्मभयं निहन्ति ॥

हृद्रोग कास विषमज्वर शोफतर्ष,
श्वास प्रमेह बल संक्षय पांडुरोगान् ।
हिध्माश्च नाशयति सर्व शिरो विकारान्,
रुच्याग्नि वर्धन बलप्रद वृष्य एषः ॥

—वादनिग्रह ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विधि—खजूर, नागरमोथा, आमला, जमालगोटे (दंती) की जड़, मुनक्का, हरड़, सुपारी, पाठा, भारंगी, कपूरकचरी, कूठ, अजमोद, सुगन्धवाला (नेत्रवाला) पीपलामूल, गूगल, पुनर्नवा (बिसखपरा), कायफल, फूलप्रियंगु, बचूर, काली मिरच, सफेदजीरा, हाऊबेर, निसोथ, हरड़की बकली, धमासा, लाजवन्ती के बीज, रुहेड़े की छाल, कुलिंजन की जड़ और सोंठ ये प्रत्येक औषधि १६-१६ तोले, बालछड़ (जटामांसी) दारचीनी, तेजपात, इलायची, नागकेशर, पीपल, लौंग, जायफल, सफेदचन्दन और लोहे का बुरादा प्रत्येक औषधि ८—८ तोले, धाय के फूल २८ तोले, गुड़ १ सेर ५ तोले सब का चूर्ण करके २ मन ६ सेर जल में मिलाकर, अच्छे बड़े चिकने बरतन में सन्धान कर, भूमि में गाढ़ देवे। पश्चात् छठे दिन, जब आसव कुछ तयार हुआ जाने, तब उसमें ३०० पान, और २००० कमल के फूल डालकर तांबे के भबके से अर्क खींच लेवे।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक, रोगी के बलाबल अनुसार, न्यूनाधिक मात्रा में देवे। अनुपान—जल।

गुण—राजयक्ष्मा (क्षय), हैजा, हृदय के रोग, खांसी, विषमज्वर, सूजन, प्यास, दमा (श्वास), प्रमेह, कमजोरी, पाण्डु, हिचकी तथा सिर के रोगों को दूर करता है, एवं अग्नि, बल, वीर्य और रुचिकारक है। निमोनिया आदि प्रबल व्याधियों के अन्त में दुर्बलता दूर करने के लिये इसका अच्छा उपयोग होता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

१७७ खर्जूरासव * नं० २—क्षय, शोथादिनाशक।

विधि—४ सेर खजूर बीज निकाले हुये लेकर, जवकुट कर, १३ सेर जल में पकावे। लगभग ६ सेर जल शेष रहने पर, छान कर, उसमें—हाऊबेर और धायके फूलों का चूर्ण मिला, उत्तम सुगंधित द्रव्यों से धूपित घड़े में भर कर, उसका मुख अच्छी तरह बन्द कर, जमीन में गाड़ देवे। १४ दिन पश्चात् निकाल कर, और छानकर बोतलों में भर कर रख ले।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक। अनुपान—जल।

गुण—क्षय, सूजन, प्रमेह, पाण्डु, कामला, ग्रहणी, पांच प्रकार के गुल्म और बवासीर को शीघ्र नष्ट करता है। क्षय का वह रोगी जो अत्यन्त क्षीण होगया हो, कफ ढेलादार बहुत प्रमाण में निकलता हो, तथा शरीर में सूजन हो, उसके लिये यह आसव अमृत के समान गुणदायक है।

---

१७८ खर्जूरासव नं० ३—(स्वकृत)—दाह, तृष्णादिनाशक।

विधि—बीज सहित खजूर ५ लेकर जबकुट कर, १ मन १२ सेर जल में क्वाथ करे। १३ सेर जल शेष रहने पर, उसे चिकने घड़े में भर देवे, और उसमें मुलैठी, गंभारी, मुनक्का, कमल-

---

* पंचप्रस्थं समादाय खर्जूरस्य विचक्षणः। द्रोणेऽम्भसि पचेत्सम्यगुत्तार्य गालयेत्ततः॥ कुंभींसुधूपितां कृत्वा प्रक्षिपेत्त रसं शुभम्। हपुषां ताम्रपुष्पीं च कषाये तत्र निक्षिपेत्॥ द्वारं निरुध्य सुदृढं निक्षिपेद्वसुधातले। सप्तकद्वययोगेन सिद्धोऽयंत्वासवो रसः॥ रोगराजं तथा शोफं प्रमेहं पांडुकामलाम्। ग्रहणीं पंचगुल्मार्शो नाशयन्त्यातिवेगतः॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

केसर, फालसा, बड़ी कटेरी, खिरेंटी, श्वेतचन्दन और महुये के फूल ४-४ तोले चूर्ण कर डाले, तथा धायके फूल १३ छटांक शहद ३॥ सेर, और खांड ५ सेर मिला कर, अच्छी तरह संधान कर, १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे। फिर छानकर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोले से ४ तोले तक। जल के साथ।

गुण-दाह, प्यास, मूर्च्छा, भ्रम, तथा लू एवं उष्णताजनक पैत्य-विकार नाशक और वीर्य-वर्धक है।

---

१७६ खुरसान्यासव—(स्वकृत)-कृमिविकारादि नाशक।

विधि—खुरासानी अजवायन २॥ सेर लेकर, जवकुट कर, २६ सेर जल में पकावे। ७ सेर जल शेष रहने पर, छानकर शुद्ध मटकी में भरे, और उसमें गुड़ १० सेर, सोंठ और बायविडंग का महीन चूर्ण ८-८ तोले मिलावे। अच्छी तरह संधान कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रख ले।

मात्रा—२ माशे से १ तोला तक। अनुपान-जल।

गुण—इसकी मात्रा रोगी के बलावल को देखकर उचित प्रमाण से देने से उत्तम लाभ कारक है। आंत्रगत विविध प्रकार के कृमियों को, तथा उदरशूल, अपस्मार (मृगी), एवं नहरुआ को नष्ट करता है। उन्मादावस्था, शुष्क आक्षेपयुक्त कास, तथा प्रसव के बाद की पेंठन में भी यह लाभप्रद है।

नोट—आगे देखिये, 'पारसीकयवान्यासव'।

खैरासवएवंअरिष्ट—देखिये, खदिरासव एवं अरिष्ट।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

ग

१८० गण्डिकाद्रोणासव *—अर्श, भगन्दरादि नाशक।

विधि—ईख के कटे हुये टुकड़े १३ सेर, और शुद्ध जल १३ सेर को, घृत के चिकने पात्र में (जिसमें बहुत काल तक घृत रक्खा रहा हो) भरकर, उसमें धनिया, अजवायन, अजमोद, कलोंजी प्रत्येक १६-१६ तोले, तथा गजपीपल, चव्य, चीता, और जीरा प्रत्येक ८-८ तोले, महीन चूर्ण कर मिलावे, तथा

* दद्यात्सलिलद्रोणं कृतमन्थेक्षुगण्डिकाद्रोणम्। धान्ययवानीदीप्यक पृथ्वीकाश्चेति कुडवांशाः॥ द्विपलीनाः स्युर्देयास्तेजवती चव्य चित्रका- जाज्यः। मधुनः कुडवं दत्वा घृतरूढे भाजने स्थाप्यः॥ एव काञ्जिकराजो लवणयुतः कत्तृणार्द्रक सुगन्धः। दशरात्रात्पातव्यः सलिलं च पुनः पुनर्देयम्॥ अर्शोभगन्दरगदग्रहणीभेदः प्रमेह दोषांश्च। नाशयति सेव्यमानो वन्हिकरो गण्डिकाद्रोणः॥

—भा. भै. रत्नाकर।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

साथ ही शहद भी १६ तोले (नोट—कांजी की दृष्टि से शहद १६ तोले ठीक है, किंतु आसव के लिये शहद लगभग ५ सेर तक मिलाना चाहिये) मिला देवे। यथाविधि पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर १० दिन तक रक्खा रहने देवे। किंतु यह आसव दो मास के बाद उत्तम सेवनीय होजाता है। इसे बीच २ में हिलाते और छानते रहना चाहिये।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक। अनुपान—जल। यदि यह कांजी के रूप में खट्टा हो तो सेवन करते समय इसमें जल सेंधानमक, अदरख, और मिर्चियाकंद का चूर्ण मिला लेना चाहिये।

गुण—अर्श, भगन्दर, ग्रहणी, मेदरोग (स्थूलता) और प्रमेह नाशक है। यह उत्तम अग्निदीपक और भूख को बढ़ाने वाला है।

---

१८१ गण्डीरासव *—क्षय प्रमेहादि नाशक।

---

* जातसारं तु गण्डीरं सपुष्पं परिशोषयेत्। खंडशः क्षोदितं कृत्वा तस्य पंचाढकं पचेत्॥ त्रींश्चैव त्रिफलाप्रस्थान् दशमूली तुलां तथा। दद्यात् कुटजवल्कस्य पलानां पंचविंशतिम्॥ इन्द्रयवं सभल्लातं विडंगं घनमेव च। अर्धप्रस्थ समंभागानेकैकस्य समावपेत्॥ पाठा मधुरसा दन्ती पङ्ग्रन्था चित्रकस्तथा। एषां दशपलान् भागान्मृद्वीकायास्तथाढकम्। दशद्रोणेषु तोयस्य पचेद् द्विद्रोण शेषितम्। पूते तस्मिन् कषाये तु गुडस्यैकां तुलां क्षिपेत्॥ तथा तु शोधितस्यापि शुभे भाण्डे निधापयेत्। द्वौ प्रस्थौ मधुनश्चैव द्वावयो रजसस्तथा। अर्धप्रस्थो विडंगानां कुडवो मरिचस्य च। एतयोः सूक्ष्मचूर्णानि प्रतीवापार्थमाहरेत्॥ चूर्णं मरीचकानां च मधुना

Digitization by American Academy of Indic Studies: AAIS (USA)

विधि—पुष्प युक्त सूखा हुआ मजीठ १६ सेर, त्रिफला २॥ सेर, दशमूल ५ सेर, कुड़े की छाल १। सेर, इन्द्रजौ, भिलावे, वायविडंग, नागरमोथा प्रत्येक ३२—३२ तोले, पाठा, मूर्वा, दन्तीमूल, बच, और चीता आध २ सेर, तथा मुनक्का ३। सेर, सब को कूटकर, ३ मन १० सेर जल में पकावे। २६ सेर जल शेष रहने पर, छान लेवे। पश्चात् घृताक्त (चिकने) मटके में (जिसके भीतर मरिच चूर्ण मिश्रित शहद का लेप कर दिया गया हो) भर कर, उसमें-गुड़ ५ सेर, शहद १ सेर ४८ तोले, शुद्ध लोहचूर्ण १ सेर ४८ तोले, वायविडंग ३२ तोले, कालीमिरच १६ तोले, चूर्ण कर मिलावे। फिर अच्छी तरह पात्र का मुख सन्धान कर, १ मास पर्यन्त रक्खा रहने देवे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर देवे।

मात्रा—रोगी और रोग के बलाबल का विचार कर १ तोले से ४ तोले तक। अनुपान—जल।

गुण—क्षय, प्रमेह, गुल्म, उदररोग, कृमि, कुष्ट, प्लीहा की वृद्धि, बवासीर, भगन्दर, शोथ, पांडु, ग्रहणी, ग्रन्थि, गलगण्ड,

---

सह योजयेत्। कर्तव्यो भाण्डलेपस्तु समासिच्य निधापयेत् ॥ एष मास-स्थितः पेयो यथाव्याधि बलाबलम् । गण्डीरारिष्ट इत्येष व्यासतः परिकीर्तितः ॥ एष शोफान् प्रमेहाँश्च गुल्माँश्च जठराणि च । कृमि कुष्ठानि वर्ध्मानि प्लीहार्शांसि भगन्दरम् ॥ श्वयथून्पांडुरोगाँश्च ग्रहणी दोष मेव च। ग्रन्थींश्च गलगण्डं च गण्डमालां तथैव च। विषमज्वर कासांश्च विद्रधीन वातशोणितम् ॥ अरिष्टः शमयत्याशु युधि शक्र इवासुरान् ॥

—गदनिग्रह।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

गंडमाला, विषमज्वर, खांसी, विद्रधि, तथा वातरक्त को नष्ट करता है। यह गण्डीरारिष्ट–उरुस्तम्भ (आढ्यवात पैरा लिलिस आफदी लोअर एक्स्ट्रे मिटीज़) रोग को शीघ्र ही नष्ट करता है। वृन्दमाधवमें कहाहै–उरुस्तम्भे प्रशंसन्ति गण्डीरारिष्टमेव च ॥

---

१८२ गण्डीराद्यरिष्ट * —शोथ, भगन्दरादि नाशक ।

विधि—सेहुण्ड (थूहर), भिलावे, चीते की जड़, सोंठ, मिरच, पीपल, वायविडंग, दोनों कटेरी प्रत्येक १४॥–१४॥ तोले चूर्ण कर—कूर्चिक मस्तु (६॥ सेर दही और ६॥ सेर जल एकत्र मिला मथ ले) १३ सेर में पकावे, इसे कण्डों की आग पर पकाना चाहिये। जब लगभग ६ सेर क्वाथ शेष रहे, तब उसे छानकर चित्रक और पिप्पली के चूर्ण से लिप्त मटके में भरकर, उसमें–मस्तु (द्विगुण जलयुक्त तक्र) १३ सेर, और मिश्री ५ सेर मिला, मुख बन्द करके १० दिन तक रक्खा रहने देवे। इसे खुली जगह मैदान में रखना चाहिए। पश्चात् छानकर काम में लावे।

---

* गण्डीर भल्लातक चित्रकांश्च व्योषं विडंगं बृहती द्वयञ्च। द्विप्रस्थिकं गोमय पावकेन द्रोणे पचेत्कूर्चिकमस्तुनस्तु ॥ त्रिभाग शेषं च सुपूत शीतं द्रोणेन तत्प्राकृतमस्तुना च सितोपलायाश्च शतेन युक्तं लिप्ते घटे चित्रक पिप्पलीनाम् ॥ वैहायसे स्थापितमादशाहात्प्रयोजयँस्तद्विनिहन्ति शोफान्। भगन्दरार्शः कृमि कुष्ठमेहान्वैवर्ण्य कार्श्यानिल हिक्कनं च ॥

—चरक ।

Digitization by American Academy of Indic Studies- AAIS(USA)

मात्रा—१ तो० से २ तोले तक। अनुपान–समभाग जल।

गुण—शोथ, भगंदर, बवासीर, कृमिरोग, कुष्ठ, प्रमेह, विवर्णता, कृशता (दुर्बलता), वातदोष, तथा हिचकी नाशक है।

---

१८३ गन्धकासव—विषूचिकादि नाशक।

विधि—शुद्ध अमलासारगन्धक ३ सेर, चूना एक सेर, भृंगराज (भांगरा) के पंचाङ्ग का स्वरस २ सेर और जल १३ सेर, एक मिट्टी के पात्र में डाल, मंदाग्नि से पकावे। जब जल ६॥ सेर तक शेष रहे, तब उतार कर नीचे रख देवे। ठंडा हो जाने पर, ऊपर का कुल पानी धीरे २ दूसरी चिकनी मटकी में नितार लेवे या वस्त्र से छानकर भर देवे। फिर उसमें—शहद ५ सेर, सोंठ, काली मिरच, पीपल, वायविडंग, कपूरकचरी, श्वेत जीरा, सौंफ, लोंग और जायफल प्रत्येक ४-४ तोले चूर्ण कर मिलावे। धाय के फूल ३० तोले मिलाकर, अच्छी तरह सन्धान कर १ मास तक रक्खे। पश्चात् छान कर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—५ बूँद से ६० बूँद तक। अनुपान—चौगुना जल।

गुण—विशूचिका (हैजा) नाशक, रक्तशोधक, अजीर्ण, अग्निमांद्य नाशक है। खुजली, दाद पर ऊपर से लगाने से ही फायदा हो जाता है।

(एक प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथ से।)

गन्धप्रसारण्यासव—देखिये, प्रसारण्यासव।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

१८४ गर्ज्जरमासव नं० १—(स्वकृत) बलवर्धक ।

विधि—५ सेर गाजर लेकर, अन्दर के बीजका काठ निकाल, और चाकू से महीन टुकड़े कर, मिट्टी के बरतन में डाल, २८ सेर जल मिला, मंदाग्नि पर पकावे । ७ सेर जल शेष रहने पर, उतार कर अच्छे प्रकार मसल कर छान ले, और चिकने घड़े में भरे, ठंडा होजाने पर, उसमें-शहद ४ सेर, लौंग, बाल॰ छड़, दारचीनी, कुलीजन और केशर महीन चूर्ण कर मिलावे । तथा धाय के फूलों का चूर्ण आध सेर मिला, अच्छी तरह मुख सन्धान कर, १५ दिन सुरक्षित रक्खे । पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे ।

मात्रा—१ तो० से ३ तोले तक । अनुपान-जल ।

गुण—कमजोर को शीघ्र पुष्ट कर देता है, कांतिवर्धक है, और, प्रमेह, सुजाक, तथा क्षय रोग को दूर करता है ।

---

१८५ गाजरासव नं० २--बलवर्य्य वर्धक ।

(वैद्य पंचानन श्री शंभुदत्तजी शर्मा कौशिक)

विधि—ताजी गाजर का रस ५ सेर, अङ्गूर का रस ५ सेर, मीठे संतरे का रस ५ सेर, ईख का रस ५ सेर, और हालों का चूर्ण ५ सेर, इन सब को चिकने मिट्टी के या चीनी के पात्र में डाल कर, मुख मुद्रा कर, अनाज या भूसे में ४० दिन दबा देवे । ४० दिन के बाद निकाल १० बोतल आसवार्क, यंत्र से खींच लेवे । फिर बोतलों को खूब बन्द कर, ४० दिन तक पानी में रक्खे । ध्यान रहे बोतलों को ऊपर तक नहीं भरना चाहिये, प्रत्येक

Digitization by American Academy of Indic Studies- AAIS(USA)

बोतल का आठवां हिस्सा खाली रहे, नहीं तो आसव कार्क में से बाहर आ जावेगा, या बोतल फोड़ देगा, और यह भी ध्यान रखना चाहिए कि पानी खराब न हो। ४० दिन के बाद पानी से निकाल काम में लाना चाहिये।

मात्रा— २ तोला से ५ तोले तक। अनुपान—जल।

गुण—जठराग्निवर्धक, रक्त, वीर्य-वर्धक, शरीर के सर्वांगों को पुष्टिकारक, कुछ दिन के सेवन से काया पलट देता है, शराब की आदत छुटा देता है। इसे प्रतिदिन प्रातः सायंकाल भोजन के मध्य में पीना चाहिये, आरोग्य मनुष्य सेवन करे तो नवजीवन का फल भोगे, इसका गुण अकथनीय है।

(अनुभूतयोगमाला)

---

१८६ गाजरासव नं० ३—कृमि नाशक।

विधि—ताजी गाजर का रस २० सेर, और पलास बीज का चूर्ण १ सेर दोनों को चिकने या चीनी मिट्टी के पात्र में भरकर दृढ़ मुख मुद्रा कर, अनाज या भूसे में ४० दिन दबा रहने दे, फिर निकाल कर, यंत्र द्वारा १० बोतल अर्क खींच लेवे।

मात्रा—१ तो०, से ४ तोले तक।

गुण—इसके सेवन से उदर के कृमि शीघ्र नष्ट होजाते हैं।

(अनुभूतयोगमाला)

---

१८७ गाजरासव नं० ४—प्लीहा नाशक।

विधि—गाजर का रस १६ सेर और नीबू का रस ८ सेर, दोनों को चिकने या चीनी मिट्टी के पात्र में डाल कर, मुख

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मुद्रा कर, पृथ्वी में दबा देवे । ४० दिन के बाद, यन्त्र द्वारा अर्क खींच लेवे ।

मात्रा—१ तोला से २॥ तोला तक । दाँतों को बिना लगाये कंठ में डाल पी लेना चाहिये, ऊपर से मुख शुद्धि के लिये भुने हुए चने चाबने चाहिये । हलका पथ्य सेवन करे ।

गुण—प्लीहा (तिल्ली) शीघ्र नष्ट होजाती है ।

(अ० योगमाला)

---

१८८ गाजरासव नं० ५—वाजीकरण, स्तंभक ।

(हकीम श्री वसंतलालजी गंज निवासी)

विधि—दारचीनी, गुलसुर्ख, तुख्मरेहाँ, बालछड़, नरकचूर ये प्रत्येक ६-६ तोले, बादरंजबोया, गावजवाँ, आबरेशम, गुल गावजवाँ, बहमन सफेद, बहमन सुर्ख, चन्दन सफेद, ऊद हिंदी ये प्रत्येक ४-४ तोले, जावित्री २ तोले, जाफरान १ तोला, रूमी मस्तंगी १ तोला, चोबचीनी २० तोले, बड़ी हरड़ ʃ॥, पोस्त तुरंज ४ तोले, सोंठ १ तोला, तिल १ तोला, गाजर छिली साफ २ सेर, कीकड़ की छाल ३ सेर, गुड़ ३ सेर और जल ३० सेर ।

सन्धानावधि–१५ दिन बाद भवके से अर्क खींच लेवे ।

गुण—बाजीकरण, स्तंभक, वीर्यवर्धक, कफ, पित्त नाशक, स्फूर्तिकारक, मदकारक है ।

(आ० संग्रह)

Digitization by American Academy of Indic Studies: AAIS(USA)

१८६ गाजरासव नं० ६—प्रमेहादि नाशक।

(वैद्यराज रामदेवप्रसादजी)

विधि—गाजर २० सेर लेकर महीन टुकड़े कर सुखा लेवे, और हरड़, बहेड़ा, आमला, सोंठ, मिरच, पीपल प्रत्येक २०-२० तोले, चन्दन का बुरादा २५ तोले सब को कूट पीस कर, २॥ मन जल मिला शुद्ध चिकने घड़े में भर, उसमें २॥ सेर गुड़ मिला कर पड़ा रहने देवे, ३ दिन बाद जब खमीर उठने लगे तब भबके के द्वारा अर्क खींच लेवे और उस अर्क में जावित्री, लोंग, छोटी इलायची १।-१। तोले, इलायची बड़ी २॥ तोले, कस्तूरी ३ माशे और केशर ५ माशे इन द्रव्यों का खूब महीन चूर्ण कर मिलावे तथा अच्छी तरह मुख मुद्राकर अर्क वाले पात्र को ३ दिन तक धूप में रक्खे। पश्चात् छानकर काम में लावे।

मात्रा—२ तोले से १० तोले तक।

गुण—सब प्रकार का प्रमेह नष्ट होजाता है, भूख लगती है, बलकी वृद्धि, धातुपुष्टता एवं पित्तज्वर का नाश होता है। मंदाग्नि, खूनी-बवासीर, फीलपाव, गण्डमाला आदि रोगों पर भी अति लाभदायक है।

(धन्वन्तरि-सिद्धयोगाङ्क)

---

१६० गुग्गुवासव *—उदररोग, भगन्दरादि नाशक।

---

* शतं हरीतकीनान्तु त्रिभीतक शतं तथा। प्रस्थमामलकानां च गुग्गुलोश्च चतुष्पलम्॥ त्वगेला पिप्पलीमूल चव्य चित्रकदीप्यकम्। तालीसपत्र त्रिकटु मुस्त केसर कट्फलम्॥ जलद्रोणे विपक्तव्यं पादशेषे जले ततः।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विधि—गूगल, दालचीनी, बड़ी इलायची, पीपलामूल, चव्य, चीते की जड़, अजवायन, सोंठ, मिरच, पीपल, तालीस-पत्र, नागरमोथा, नागकेशर और कायफल प्रत्येक १६-१६ तोले, हरड़ ५ सेर, बहेड़ा ५ सेर, आमले १३ छटांक, सब को कूट कर, १ मन १२ सेर जल में पकावे (पाठ में जल का प्रमाण बहुत कम दिया है), १३ सेर जल शेष रहने पर, घृत से चिकने मटके में भर कर, उसमें धायके फूल १३ छटाँक, गुड़ १० सेर, मुनक्का आध सेर और अनारदाना आध सेर चूर्ण कर मिला देवे। पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर सुरक्षित रख देवे। कुछ दिन बाद उसे खोल कर देखे, जब उसमें, औषधियों का रस, वर्णादि प्रकट होजाय (यह क्रिया लगभग १ मास में होजाती है) तब उसे छानकर इक्षुरस या सिरके के पात्र में भर कर, मुख बन्द करके रख देवे और ६ मास के बाद निकाल कर सेवन करे।

मात्रा— रोगी के बलाबल का विचार कर १ तोला से

धातक्याः प्रस्थमेकन्तु तथागुडशतद्वयम् ॥ द्राक्षा दाडिन खण्डानां भागान्दशपलान्मतान् । सर्वमेतत्समालोड्य स्थापयेद्भाजने शुभे ॥ यदा युक्तरसः स्याच्च सुजातो गन्धवर्णतः । तत्पूरयेत्तदा भाण्डे शुक्तस्येक्षु रसस्य तु ॥ षण्मास संयुतो ह्येष द्रवो पेयः प्रयोगतः । गुग्गुल्वासव इत्येष देयः सर्वेषु रोगिषु ॥ प्राग्भक्तं मध्यभक्तं वा ग्रासे ग्रासान्तरे तथा । दद्यात्क्रमेण योगं तु वयः सात्म्यमपेक्ष्य च ॥ नाशयेदुदरं प्लीहामूरुस्तम्भं सकामलम् । चिरोत्थितमपिश्वासं कास शोफ भगन्दरान् ॥ कृमि कुष्ठ प्रमेहेषु हितश्चैवाग्नि दीपनः ॥

—गदनिग्रह ।

Digitization by American Academy of Indic Studies: AAIS(USA)

४ तोले तक । अनुपान-जल । भोजन के आदि में या मध्य में, प्रत्येक ग्रास में अथवा हर दूसरे ग्रास के साथ सेवन करावे ।

गुण—उदर रोग, तिल्ली, उरुस्तंभ (आढ्यवात), कामला, पुराना श्वासरोग, खांसी, सूजन, भगंदर, किरम, कुष्ट और प्रमेह रोग नाशक है। तथा अग्निदीपक है।

---

१९१ गुडमारासव नं० १—मधुमेह नाशक।

विधि—गुड़मार बूटी का पंचाङ्ग ३॥ सेर जल में पकावे। लगभग ५ सेर जल शेष रहने पर, उसे छान कर, शुद्ध चिकने मटके में भर देवे, और उसमें—शहद ३ सेर, धाय के फूल ३० तोले, आँवले की गिरी, जामुन की गुठली, पीपल की लाख ४-४ तोले चूर्ण कर मिलावे । पात्र का मुख अच्छी तरह सन्धान कर २१ दिन सुरक्षित रक्खे । पश्चात् छान कर बोतलों में भर कर रख दे ।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक।

गुण—मधुमेह को शीघ्र नष्ट करता है।

(एक प्राचीन पुस्तक से ।)

---

१९२ गुड़मारासव नं० २—मधुमेह-हारक ।

विधि—गुडमार बूटी का स्वरस १ पाव, चूने का पानी १ पाव, भीमसेनी कपूर २ माशे, तथा सफेद इलायची के बीज ३ माशे लेकर, इलायची के बीजों का महीन चूर्ण कर, कपूर

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मिला और घोट कर बोतल में सब दवा एकत्र कर, मुख मुद्रा कर रक्खे । ७ दिन बाद छान कर शीशियों में भर कर रख दे ।

मात्रा—१ से ३ तोले तक । प्रातःसायं सेवन करे ।

गुण—मधुमेह ग्रस्त रोगी का शरीर यदि विशेष क्षीण नहीं हुआ हो तो इस प्रयोग से अवश्य लाभ होता है । भोजन में घृत विशेष रूप से सेवन करना चाहिए ।

(धन्वन्तरि से ।)

गुड़हलासव—देखिये, जपाकुसुमासव ।

गुडारिष्ट—देखिये, गौडोऽरिष्ट ।

१९३ गुल्म प्लीहान्तकारिष्ट—गुल्म, प्लीहादि नाशक ।

(श्री० चुल्हाय मिश्र जी वैद्य)

विधि—नीबू का रस ऽ॥=, घीकुआर का रस ऽ॥=, अदरख का रस ऽ॥=, शहद असली ऽ॥=, पीपल, हल्दी, दारुहल्दी, पीपलामूल, चाभ, चित्रकमूल (लाल), सोंठ, चिरचिटे (अपामार्ग) की जड़ की छाल, मुरैय का नमक, खाने का सोड़ा, पाँचों नमक, जवाखार, सज्जीखार, शरपुंखे का रस, खुरासानी अववायन की जड़, पलाश का खार, और अजमोद प्रत्येक १-१ तोले, महीन कूट कर एक बर्तन में डाल मुँह बन्द कर १५ रोज धूप में रक्खे, जिस जगह जलाशय हो । पश्चात् दवा निकाले, और छान कर प्रयोग में लावे ।

मात्रा—६ माशे से १ तोला तक । अनुपान-जल । मात्रा अवस्थानुसार, विचार कर देवे ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

गुग—गुल्म, प्लीहा, और उदर रोगादि नाशक है।

(धन्वन्तरि।)

---

१९४ गैरिकासव—(स्वकृत)—सुजाकादि नाशक।

विधि—शुद्ध गेरू का चूर्ण ३ सेर (स्वर्ण गेरू के छोटे २ टुकड़े कर, तवे पर रख, मंदाग्नि से पकावे, खूब तप जाने पर उस पर थोड़ा गोघृत डाले, आध सेर घृत के गेरू में शोषित हो जाने पर, उसे उतार लेवे) शुद्ध चिकने घड़े में भर, उसमें इक्षुरस (गन्ने का रस) ५ सेर, घृतकुमारी का रस ३ सेर, कालीमिरच, हल्दी, दारुहल्दी, और आमला प्रत्येक का चूर्ण २० तोले मिला, संधान कर रक्खे। १५ दिन बाद छान कर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ माशा से १॥ तोले तक। अनुपान–जल या दूध।

गुण—सुजाक को शीघ्र दूर करता है। शीतपित्त, रक्तप्रदर, तथा दाह नाशक है। छोटे बच्चों की कमजोरी, चेहरे का फीकापन, मंदज्वर, जीर्णज्वर, शरीर की दाह, पतले दस्तों का आना, पेट का फूलना, अजीर्ण तथा मिट्टी के खाने से उत्पन्न विकारों को शीघ्र नष्ट करता है। छोटे बच्चों को इसे माता के या गाय के दूध के साथ देना चाहिये।

---

१९५ गोजिह्वासव—हृद्रोग हारी।

(मुरादाबाद निवासी वैद्यराज पं० टीकादत्त जी त्रिवेदी कृत)

विधि—गावजवाँ १। सेर, और गावजवाँ के फूल १ पाव,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अच्छी तरह कूट कर, १० सेर जल में मिला, शुद्ध चिकने घड़े में भर देवे, और उसमें मुनक्का (बीज निकाल कर) १। सेर, गुड़ ४ सेर, मिश्री २॥ सेर, तथा गुलवनफ्सा, दारचीनी, अगर, सफेद छोटी इलायची के बीज, रूमीमस्तगी, सफेद चन्दन, लालचन्दन, छारछबीला, केशर, वंसलोचन, आमला और कचूर प्रत्येक का चूर्ण ३—३ तोले, मिलाकर, अच्छी तरह सन्धान कर रक्खे। २७ दिन के पश्चात छानकर बोतलों में भर लेवें।

मात्रा—१ तोला से २ तोले तक। अनुपान—जल।

गुण—हृदय रोगों पर अत्यन्त लाभ कारक है।

---

१०६ गोमूत्रासव—(स्वकृत)—बाल शोष नाशक।

विधि—श्यामा गौ अथवा जिस गाय का सर्वांग पीला हो, गर्भिणी न हो, हाल की ब्याही हुई न हो, और बच्चा भी न हो, ऐसी बछिया का मूत्र ४० तोले तक लेकर बोतल में भरे तथा उसी मूत्र से १ या २ तो० केशर (उत्तम काश्मीरी) घोटकर उसी में मिलाकर, कड़ी डाट लगा ३ दिन सूर्य की धूप में और ३ रात चन्द्रमा की चांदनी में रक्खे। फिर छान लेवे।

मात्रा—१ साल तक के बच्चे को ५ बूँद और २ साल तक के बच्चे को १० बूँद, माता के ६ मासे दूध में मिलाकर देवे। माता मूँग की दाल और गेहूँ की रोटी खावे और पति-सहवास न करे। मातृदुग्ध के अभाव में इसका सेवन बकरी के दूध के साथ करावे। शीघ्र ही लाभ होता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

१९७ गोक्षुरासव—(स्वकृत)—मूत्र विकार नाशक ।

विधि—बड़े गोखरू का पंचाङ्ग ५ सेर, जवकुट कर, १ मन १२ सेर जल में पकावे। १३ सेर जल शेष रहने पर, उतारकर छान लेवे। और ठंडा होने पर, एक शुद्ध चिकने घड़े में भरकर, उसमें-शक्कर २॥ सेर, शहद ३ सेर, धाय के फूलों का चूर्ण १ पाव, तथा सोंठ, मिरच, पीपल, नागकेशर-असली, तेजपात, कंकोल, तज, कालीमिरच, छोटी इलायची, तालीसपत्र, खरबूजे के बीज, इमली के बीज और वंसलोचन प्रत्येक ४-४ तोले महीन चूर्ण कर मिला देवे। अच्छी तरह सन्धान कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भरकर रख दे।

मात्रा—१ तो० से ४ तोले तक। अनुपान-जल।

गुण—मूत्रकृच्छ्र आदि मूत्र विकार, दुर्बलता, रक्तमेह, मधुमेह, मूत्रदाह, मलबद्धता, वीर्यदोष और धातुकी कमजोरी नाशक है।

---

१९८ गोक्षुरासव नं० २—मूत्रादिविकार नाशक।

विधि—गोखरू के १ भाग चूर्ण में ५ भाग मद्यसार (७० प्रतिशत वाला) मिला, १५ दिन तक बोतल में भर कर रक्खे। पश्चात् छानकर काम में लावे।

मात्रा—१० बूंद से ६० बून्द तक। अनुपान-जल।

गुण—मूत्राघात, सर्वाङ्गशोत (सूजन), और प्रमेह को शीघ्र नष्ट करता है।

(अ० योगमाला)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

१६६ गोक्षुरासव नं० ३—हृदय को बलदायक।

विधि—बड़े गोखरू का ताजा पंचाङ्ग १ सेर लेकर, छोटे २ टुकड़े बना, मिट्टी के पात्र में १६ सेर जल डालकर भिगो देवे, १२ घंटे के बाद मंदाग्नि पर औटावे। ४ सेर जल शेष रहने पर मोटे कपड़े में छान लेवे, और उसमें ८ सेर शहद मिला बोतलों में भर कर रख दे। १ मास के बाद फिलटर पेपर से छानकर काम में लावे।

मात्रा—१ तोला से २ तोले तक। अनुपान—जल।

गुण—दिल और दिमाग़ को पूरी ताकत देता है।

(अ० योगमाला)

---

२०० गौडोऽरिष्ट *—पाण्डुरोग नाशक।

विधि—मजीठ, हल्दी, मुनक्का, खिरैंटी की जड़, शुद्ध लोह चूर्ण, और लोध प्रत्येक का चूर्ण १६-१६ तोले लेकर, १६ सेर जल में पकावे। १३ सेर जल शेष रहजाने पर (पकाने की क्रिया शुद्ध मटके या मिट्टी के पात्र में, मन्दाग्नि से होनी चाहिये) उसी में गुड़ ५ सेर अच्छी तरह घोलकर, और सन्धान कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। फिर छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक। अनुपान-समभाग जल।

---

* मंजिष्ठा रजनी द्राक्षा, बलामूलान्ययो रजः।
रोध्रं चैतेषु गौडः स्यादरिष्टः पाण्डुरोगिणाम् ॥

—चरक।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

गुण—यह गुड़ारिष्ट पांडुरोग, यकृत की निर्बलता और रक्ताल्पता को शीघ्र दूर करता है।

---

२०१ ग्रहणीहरासव—संग्रहणी, अतिसारादि नाशक ।

(स्व० लाला नारायणदासजी वैद्यशिरोमणि)

विधि—पोदीना, सौंफ, और मकोय प्रत्येक एक-एक सेर, अजवायन ६० तोले, अमरवेल और गिलोय प्रत्येक ४० तोले, छोटी कटेरी के फल, बड़ी इलायची, और दाख प्रत्येक २०-२० तोले, सोंठ, मिरच, पीपल, हरड़, बहेड़ा, आमला, प्रत्येक १०-१० तोले, पीपलामूल ७॥ तोले तथा सफेद जीरा, कालाजीरा, चीते की छाल, वायविडंग, इन्द्रजौ, कुड़े की छाल, अतीस, बेलगिरी, दारचीनी, छोटी इलायची, लौंग, तालीसपत्र, जायफल, जावित्री, पाठा, मोथा, काकड़ासिंगी, भारंगी, धनिया, नेत्रवाला, नागकेशर, तज, तेजपात और कचलोना (कांचनमक) प्रत्येक ५-५ तोले, सब औषधियों को जवकुट कर अठगुने पानी में दो दिन भिगोकर भवके के द्वारा अर्क खींच कर अलग रख लेवे। पश्चात्-जौ ५ सेर, मूल की जड़ १ सेर, तथा राई कलोंजी, सेंधानमक, और चव्य ५-५ तोले, कालानमक ४ तोले जवकुट कर ३२ सेर पानी में मिला एक शुद्ध मटके में भर, उसमें पुराना गुड़ १ सेर, शहद आधा सेर और हींग १ तोला अच्छी तरह घोलकर, मुख मुद्रा कर १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर और साफ कर, ऊपर के भवके के द्वारा खींचे हुये अर्क में मिलाकर, बोतलों में भर कर रख दे ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मात्रा—१ तोला से ५ तोले तक। प्रातः सायं, थोड़ा २ जल मिला कर सेवन करावे।

गुण—पित्त तथा वात के ग्रहणी विकार में विशेष लाभ दायक है। इसके सेवन से अग्नि बढ़ती है, भोजन अच्छी तरह पाचन होता है, पतले दस्त बंद होजाते हैं, तथा दस्तों का दौरा रुक जाता है।

(धन्वन्तरि-प्रयोगाङ्क)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

च

२०२ चणकासव—(स्वकृत)—दाह, तृष्णादिनाशक।

विधि—उत्तम नवीन चने २ सेर और चने के पत्ते २॥ सेर लेकर, १३ सेर जल में, किसी मटके में भिगोकर जहाँ रात्रि में ओस गिरती हो, ऐसे खुले मैदान में रक्खे। सबेरे सब जल अच्छी तरह छान लेवे। फिर इस जल को उसी मटके में भर कर, उसमें शहद ५ सेर, धायके फूल १३ छटांक, जीरा सफेद ८ तोले और नागरमोथा ८ तोले चूर्ण कर मिला देवे। मुख सन्धान कर १५ दिन रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोले से ४ तोले तक।

गुण—दाह, प्यास, ग्रीष्म ऋतु का ताप, लू की बाधा, नाशक—है। प्रमेह और सुजाक पर भी लाभप्रद है। पेशाब खूब साफ़ लाता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

२०३ चतुरवलारिष्ट—प्रदर हर।

विधि—बला, नागबला, अतिबला, महाबला (चारों प्रकार की खिरैंटी), इनका पंचाङ्ग और अशोक की छाल प्रत्येक एक-एक पाव लेकर जवकुट कर, २० सेर जल के साथ पकावे, जब क्वाथ जल ५ सेर शेष रहे तब एक शुद्ध चिकने घड़े में भर कर (छानकर भरे), ठंडा हो जाने पर उसमें मुलहठी, नागकेशर, नागरमोथा, सफेद जीरा, पठानीलोध तथा सफेद चन्दन प्रत्येक ४-४ तोले महीन चूर्ण कर मिलावे। और धायके फूल का चूर्ण १६ तोले, मुनक्का ३२ तोले एवं असली शहद २॥ सेर मिला कर, अच्छी तरह सन्धान कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से २॥ तोले तक। अनुपान-दुगुना जल।

गुण—सब प्रकार के प्रदर पर आश्चर्यजनक लाभ करता है, इसके अतिरिक्त प्रमेह पर भी लाभप्रद है।

(जीवनसुधा-महिलाङ्क)

---

२०४ चन्दनासव * नं० १—शुक्रमेह नाशक, पौष्टिक।

---

* चन्दनं वालकं मुस्तं गंभारीं नीलमुत्पलम्। प्रियङ्गुं पद्मकं लोध्रं मंजिष्ठां रक्तचन्दनम् ॥ पाठां किराततिक्तञ्च न्यग्रोधं पिप्पलीं शटीम्। पर्पटं मधुकं रास्नां पटोलं कांचनारकम् ॥ आम्रत्वचं मोचरसं प्रत्येकं पलमानकम्। धातकीं षोडशपलां द्राक्षायाः पलविंशतिम् ॥ जलद्रोण द्वये क्षिप्त्वा शर्करायास्तुलां तथा। गुडस्यार्द्धतुलाञ्चापि मासं भाण्डे निधा-

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विधि—चन्दन सफेद, सुगन्धवाला (नेत्रवाला), नागरमोथा, गंभारी (खम्भारी या कुम्हार) के फल, नीलकमल, फूलप्रियंगु, पद्माख, लोध, मजीठ, लालचन्दन, पाठा, चिरायता, वड़ की जटा (अथवा छाल), पीपल (अथवा पीपल वृक्ष की छाल), कचूर, पित्तपापड़ा (स्यातरा), मुलैठी, रास्ना, पटोलपत्र, कचनार की छाल, आम की छाल और मोचरस प्रत्येक ४-४ तोले लेकर महीन चूर्ण कर लेवे। तथा धाय के फूल १३ छटांक, मुनक्का १ सेर, खांड ५ सेर और गुड़ २॥ सेर लेकर, सब को कूट कर, २६ सेर जल में मिला, शुद्ध मिट्टी के पात्र में भरकर, उसके मुख को अच्छी तरह कपड़ मिट्टी से सन्धान कर, उष्ण स्थान में सुरक्षित रख देवे। १ मास पश्चात् निकाल कर छान लेवे।

मात्रा—१ तोला से २॥ तोले तक। अनुपान—जल।

गुण—शुक्रमेह (पेशाव के साथ शुक्र जाना) शुक्रदोष, सोजाक आदि नाशक, बलकारक, पौष्टिक, हृदय को हितकारक तथा अत्यन्त अग्निवर्धक (मन्दाग्नि नाशक) है। सुजाक पर

पथेत् ॥ चन्दनासव इत्येष शुक्रमेह विनाशनः। बलपुष्टिकरो हृद्यो वन्हिसन्दीपनः परः ॥ अभिष्यन्द्यातितीक्ष्णं च पानान्नं वन्हिसूर्ययोः। सन्तापं स्त्री प्रसक्तिञ्च वेगरोधं प्रजागरम् ॥ क्रोधं शोकं दिवा निद्रां ळंधनं चाति चिन्तनम्। अत्यालस्यमसत्सङ्गं शुक्रमेहे विवर्जयेत् ॥ सुपाच्यं शुक्रकृच्चान्नं सत्संसक्तिञ्च सत्कथा। शान्ति ग्रन्थस्याध्ययनं हितान्यत्रेश चिन्तनम् ॥

—भैषज्यरत्नावली।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

इसे गोक्षुरादिगुग्गुल के साथ दिन में ३ बार देने से शीघ्र लाभ होता है। नोट—शुक्रमेह रोग या सुजाक आदि में अभिष्यंदि और तीक्ष्ण अन्नपान (दही, लालमिर्च, सुरादि), धूप, अग्नि से तापना, स्त्री प्रसंग, मलमूत्रादि के वेगों का रोकना, जागरण, क्रोध, शोक, दिन को सोना, लंघन, अत्यन्त चिंता, अत्यालस्य और असत्सङ्ग का परित्याग करना चाहिये। इन रोगों में शीघ्र पचने वाला (लघु) और शुक्रवर्धक, अन्न पान, सत्संग, सत्कथा श्रवण, शांति एवं स्वाध्याय हितकारक है।

(सम्पादक)

नोट—रसवैद्य कविराज गौरीशंकर जी आनन्द ने चन्दनासव का एक प्रयोग भेजा है, उसमें उक्त सर्व द्रव्यों के साथ ही में, निम्नाङ्कित द्रव्य और मिलाये गये हैं—गोखरू, आमला, शीतलचीनी, बांसे की छाल, वरुण की छाल, कीकड़ की छाल, मेंहदी के पत्ते, कत्था, धनियाँ, सिरस की छाल और शुद्ध शिलाजीत प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले। शिलाजीत को प्रथम जल में अच्छी तरह घोल लेना चाहिये।

मात्रा—१ से २ तोले तक।

गुण—सुजाक, पित्त प्रमेह, मूत्र में जलन, मूत्र में रक्त का आना इत्यादि में लाभप्रद बतलाया गया है।

---

२०५ चन्दनासव * नं० २—प्रमेह नाशक।

---

* चन्दनं सरलं देवदारु दारुनिशा निशा। त्रिवृत् चित्रकमूलं चागुरु धात्री सुराग्रेसम्॥ शतमूल्यश्मभिद् वासात्वचश्च सारिवा द्वयम्।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विधि—सफेदचन्दन, लालचन्दन, चीड़ वृक्ष का बुरादा, देवदारु का बुरादा, दारुहल्दी, हल्दी, निसोथ, चीते की जड़, अगर, आमला, अगस्तिा के पुष्प (पाठ के अनुसार हथिया के फूल लेते हैं, किंतु इसके स्थान में यहाँ शीतलचीनी लेना और भी उत्तम है), शतावर, पखानभेद, बांसे की जड़ की छाल, दोनों प्रकार की सारिवा (अनन्तमूल), लक्ष्मणा की जड़, कीकड़ (बबूल) तथा बरने की छाल ४-४ तोले, प्रत्येक का चूर्ण कर लेवे, तथा मुनक्का १ सेर, धाय के फूल १३ छटांक, मिश्री ५ सेर और शहद २॥ सेर (यहां शहद के स्थान में कोई २ सोनामाखी की भस्म दो तोले डालते हैं, हमारी राय में दोनों डालना और भी उत्तम है), सब को एकत्र कर, २६ सेर शुद्ध जल में मिला, मिट्टी के पात्र में भर कर अच्छी तरह मुख सन्धान कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रख दे।

लक्ष्मणाद्यास्तथा मूलं बावरी वरुणत्वचौ ॥ प्रत्येकं पलिकं ज्ञेयं द्राक्षायाः पल विंशतिम् । धातकीं षोडषपलां तुलामानां सितां तथा ॥ माक्षिकार्ध तुलां सर्वं जलद्रोण द्वये क्षिपेत् । मासमेकं भाण्डमध्ये सपिधाने निधापयेत् । चन्दनासव इत्येष रोगार्त्तीक निहन्तनः । शुक्रदोषं रजोदोषं मूत्रदोषं सुदारुणम् ॥ निहन्ति त्रिविधान् मेहान् कृच्छ्रमष्टविधं तथा ॥ चतस्राश्मरीस्तद्वन्मूत्राघाताँस्त्रयोदश ॥ अंत्रवृद्धिं पांडुरोगं कामलां च हलीमकम् । कासं श्वासं तथा कुष्टमग्निमांद्यमरोचकम् ॥ औपसर्गिक मेहाँश्च नाशयेदविकल्पतः । भाषितः श्री महेशेन लोकानां हितकारिणा ॥

—आयुर्वेद-विज्ञान।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मात्रा—१ तोला से २॥ तोले तक। अनुपान–जल।

गुण—वीर्य के, रज के तथा मूत्र के भयंकर विकारों को, अनेक प्रकार के प्रमेहों को, आठ प्रकार के मूत्रकृच्छ्र को, चार प्रकार की पथरी को १३ प्रकार के मूत्राघात को यह आसव नष्ट कर देता है। तथा अन्त्रवृद्धि, पाण्डुरोग, कामला, हलीमक, खाँसी, श्वास (दमा), कुष्ठ, अग्निमांद्य, अरुचि और सोजाक का यह नाशक है।

सुजाक पर निम्नलिखित चन्दनासव का मिश्रण उत्तम लाभदायक है—

उक्त चन्दनासव ४० तोले में, शीतलचीनी का तेल, बहरोजे का तेल और चन्दन का तेल प्रत्येक ४–४ माशे तथा शुद्ध फट-करी ६ माशे मिला कर, शीशी में भर कर रख दे। मात्रा-१ तोला, थोड़ा जल मिलाकर पिलावे, प्रातःसायं। सब प्रकार का सुजाक ७ दिन में दूर होता है। पथ्य में केवल दूध भात देवे।

---

२०६ चन्दनासव नं० ३—हिस्टीरिया नाशक।

विधि—मलयागिरी श्वेतचन्दन का बुरादा, मुनक्का बीज रहित, गाजर सुर्ख, कमल सुर्ख, लाख (पलास की या नीम की) ब्राह्मी (नई सूखी), शंखाहुली (नई), ब्रह्मदण्डी, जटामांसी, और जवाखार प्रत्येक २०–२० तोले, चूर्ण कर ३० सेर जल में, शुद्ध मटके में भर देवे (गाजर की अन्दर की लकड़ी निकाल देना चाहिये) २४ घंटे के बाद भवके से अर्क खींच लेवे। अर्क खींचते समय, कस्तूरी १॥ माशे और केशर ३ माशे, इन दोनों को नल के मुंह में बांध देना चाहिये। ताकि वाष्प जल टपकते

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

समय दोनों द्रव्यों से युक्त हो पात्र में टपके । फिर शीशी में भर कर रख दे ।

मात्रा—१ तो० से ५ तोले तक। दोनों समय । पथ्य में दूध भात देवे। स्नान जल में बैठकर करे ।

गुण—योषापस्मार रोग (हिस्टीरिया) अवश्य दूर होजाता है।

(धन्वन्तरि-प्रयोगांक)

---

२०७ चन्द्रहासासव-नं० १—वाजीकरण, नपुंसकता नाशक ।

विधि—जायफल, लौंग, बड़ी इलायची, जावित्री, गजपीपल, दारचीनी, शीतलचीनी, कवाबचीनी, कालीमिरच, छोटी पीपल, उटंगन के बीज, अकरकरा, धनिया, हाऊवेर, लिसोड़े, अजमोद, चव्य, सोंठ, कचूर, दोनों चन्दन, पोस्त की जड़ और कोंच के बीज प्रत्येक ३॥-३॥ तोले। त्रिफला, देवदारु, जामुन की गुठली, कीकड़ (बबूल) की छाल, कसेरू, (कसेरू दोनों छोटे और बड़े), मोचरस, कालाजीरा, सफेदजीरा, भारंगी, गिलोय, कालीमुसलीस, फेदमुसली, कंकोल मिरच, वंसलोचन, रुमामस्तगी, कुलीजन, संभालु के पत्ते, वायविडंग, शंखाहुली, कपूरकचरी, सोंफ, नागकेशर, पोहकरमूल, तगर, पखाख, त्रायमाण, जवासा, धमासा, दोनों कटेरी, मूर्वा, भौंफली (बहुफली), माजूफल, समुद्रसोख, कायफल, सिंघाड़े, गोखरू, धाय के फूल, माई के फूल, पाषाणभेद, निसोथ, अंडी की गिरी, विजयसार की, जड़, भांग, असगंध, फूलप्रियंगु, नागरमोथा, बांसा, गंगेरन की छाल और लोध इन ५६ द्रव्यों को एक-एक

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

तोला लेकर, बारीक कूट लेवे (इस योग में कुल ७६ द्रव्य हैं, सब को महीन कर लेवे) पश्चात् एक शुद्ध मजबूत मटके में डालकर उसमें जल २॥ मन, बादाम की गिरी १ सेर, मुनक्का १ सेर, किशमिश २ सेर, छुहारे (बीज निकाले हुये) १ सेर, चीनी २५ सेर, मिश्री ७ सेर, बेर की जड़ की छाल ५ सेर, आम की छाल १ सेर, गुड़ ३० सेर, मिला देवे । (मुनक्का के बीज निकाल डाले, और छालों को जवकुट करके मिलावे) तथा अभ्रकभस्म ५ तोले, वंगभस्म, ५ तोले, कस्तूरी ६ माशे, भीमसेनी कपूर ६ माशे उसी में डालकर, अच्छी तरह सन्धान कर रक्खे । एक मास बाद निकाल कर, भवके से अर्क खींच लेवे ।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक ।

गुण—जठराग्नि को बढ़ाता, रुचिवर्धक, वाजीकरण, नपुंसकतानाशक, स्तंभक, बादी और खूनी बवासीर, कुष्ठ, रक्तपित्त, प्रमेह, गलरोग, जलोदर, तिल्ली, पथरी, वायगोला, गठिया, सब प्रकार के दर्द, सम्पूर्ण वायु सम्बन्धी रोग, उदररोग पांडुरोग और सन्निपात नाशक है ।

(रामविनोद)

---

२०८ चन्द्रहासासव नं० २—वाजीकरण, उत्तेजक ।

विधि—जायफल, लौंग, बड़ी इलायची, चोवचीनी, जाविश्री, पीपल, बाकुची, कालीमिरच, उटंगनके बीज, अकरकरा, धनिया; हाऊवेर; पित्तपापड़ा, अजवायन, अजमोद, सोंठ, कचूर, पोस्त की जड़, कौंच की गिरी, त्रिफला; देवदारु; मोचरस, दोनों जीरे,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

भारंगी, सफेदमुसली, कालीमुसली, कंकोल, मस्तगी, चीड़का-बुरादा, वंसलोचन, कुलींजन, कपूरकचरी, नागकेशर, सौंफ, पोहकरमूल, तगर, पद्माख, अतीस, कालीअगर, दारुहल्दी, मजीठ, बालछड़, चीता, कुड़े की छाल, इन्द्रजौ, महुआ, कटेरी, मुण्डी, सफेद दूब, मरोड़फली, दोनों सुपारी; माजूफल, समुद्र-शोष, कायफल, असगन्ध, नागरमोथा, फूलप्रियंगु, सुगन्धवाला, गंगेरन की छाल प्रत्येक ३—३ तोले लेकर चूर्ण कर लेवे, और बेलगिरी, कत्था, विधारा, पाषाणभेद, विदारीकंद, निसोथ, दोनों चन्दन, भांग की जड़, बच, लोध, सम्भालू, धायके फूल, अरलू की जड़, सेंमल के बीज, समुद्रझाग, कपूर ये प्रत्येक ४–४ तोले, चूर्ण करे, तथा छुहारे, मिश्री और खस १–१ सेर, मुनक्का २ सेर, किशमिश २ सेर, केशर ३ तोले, गुड़ ६ सेर और पानी ४० सेर, शुद्ध मटकी में भर कर, १ मास तक सान्धन कर रक्खे। बाद में अर्क खींच लेवे, अर्क खींचते समय भबके के नल में केशर की पोटली लगा देवे।

मात्रा—१ तोला से ३ तोले तक।

गुण—महापौष्टिक, उत्तेजक है।

(राकेश)

---

२०९ चन्द्रहासासव नं० ३—पौष्टिक, कामोत्तेजक।

(भिषग्वर मुन्नालाल जी गुप्त, कानपुर)

विधि—जायफल, दारचीनी, छोटीपीपल, अजवायन, पोस्त की जड़, मोचरस, कालीमिरच, अकरकरा, हाऊबेर, छोटी इलायची, जावित्री, बावची, उटंगन के बीज, धनिया, पित्त-

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पापड़ा, सोंठ, कौंच के बीज, देवदारु, कालाजीरा, सफेदजीरा, सफेदमुसली, बिदारीकन्द, निसोथ, कालीमुसली, सफेदचन्दन, लालचन्दन, कंकोलमिरच, रूमीमस्तगी, कुलीजन, चीड़ का बुरादा, कपूरकचरी, नागकेशर, पोहकरमूल, सौंफ, तगर, पखाख, अतीस, बालछड़, इन्द्रजौ, महुये के फूल, मुराडी, सुपारी, माजूफल, समुद्रशोष, असगन्ध, नागरमोथा, बेलगिरी, विधारा, हरड़, वहेड़ा, आमला और पाषाणभेद ये ५२ द्रव्य प्रत्येक ३-३ तोले, तथा छुआरे १० तोले, किशमिश २० तोले, मुनक्का १ सेर, खिरैंटी १ सेर, देशी शक्कर १० सेर, शहद १। सेर, और जल ३२ सेर लेकर, कूटने योग्य वस्तुओं को कूट ले, फिर अन्य सब द्रव्यों को भी मिश्रित कर, एक अमृतबान (चीनी के भाण्ड) में भर देवे और मुँह बन्द कर, १५ दिन पर्यंत धूप में रखा रहने देवे। पश्चात् अर्क—यन्त्र से अर्क निकाल लेवे। इस अर्क में केशर ६ माशे तथा कस्तूरी और अम्बर यथाशक्ति मिला कर रख दे।

मात्रा—आधा तोला से १ तोला तक। समभाग जल मिला, भोजनोपरान्त प्रातःसायं तथा सम्भोग से पहिले सेवन करे।

गुण—क्षीणवीर्य तथा निर्बल व्यक्तियों के लिये अद्भुत लाभकारी, पौष्टिक, एवं कामोत्तेजक है। तपेदिक, निर्बलता, नपुंसकता और अन्य कई रोगों में उपकारी तथा वाजीकर है।

(धन्वन्तरि)

---

२१० चन्द्रहासासव नं० ४—उत्तेजक, पाचक।

(पं० बालकृष्ण जी शर्म्मा वैद्यराज, भूपाल द्वारा प्रेषित)

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

विधि—अजमोद, खुरासानी, भांग, धतूरे के बीज, कपूर, खसखस के डोडे, जायफल, प्रत्येक ४-४तोले लेकर मोटा चूर्ण करके एक शुद्ध मटके में भर, गाय के ५ सेर दूध में रात भर भिगोकर, नलिका यन्त्र द्वारा अर्क खींच लेवे।

मात्रा—१ से २ तोले तक। अनुपान—इसे पीकर ऊपर से पान खावे। समय—रात्रि को या जरूरत के समय।

गुण—उत्तेजक, पाचक, नींद लाने वाला और पीड़ा शामक है। यह श्वास, खांसी, मंदाग्नि, संग्रहणी, मधुमेह और हैजा विनाशक है।

(वैद्यक चिकित्सासार)

---

२११ चन्द्रासव—क्षय नाशक-अपूर्व।

(रसायनाचार्य श्री० आर० के शर्म्मा, जगराओं)

विधि—सोंठ, कायफल, पीपलामूल, इन्द्रजौ, चिरायता, भारंगी, कालीमिरच, पीपल, काकड़ासिंगी, पोहकरमूल, कटेरी की जड़, बालछड़, अजवायन, अजमोद, खुरासानी अजवायन, बच, आक की जड़ की छाल, जवासा, देवदारु, रास्ना; सम्भालू, सेंहजने की छाल, चित्रक; अतीस; भृंगराज; नारंगी के फल; सिरस; गावजवाँ; उन्नाव; मुलेठी; नागकेशर; कुलीजन; कुष्ठ; अगर; तज; तमालपत्र; छरीला; दोनों चन्दन; दोनों इलायची; सालव; तोदरी, जराविन्द, ख़तमी, ख़वाजीं; ऊद; सुपारी; गाजर; गंगेरन (नागवला); गोखरू; शतावर; गेंदे के फूल; हटसिट; लौंग; दारचीनी, जायफल; दोनों बहमन, गुल-

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सुर्ख; गुल गावजवाँ; धनिया, कासनी; (कासनी की जड़), सौंफ की जड़; हंसराज, उसीर; कद्दू; खीरा; खरबूजे और सरबूज इन चारों के बीजों की गिरी; पालक (शाक विशेष); कचूर; पोदीना, पद्माख; तगर; ये प्रत्येक ४-४ तोले लेवे तथा द्राक्षा ८ सेर; अंजीर दो सेर; इरिमेद के पुष्प दो सेर; खांड दो सेर और जल ३२ सेर लेवे। तथा अर्क केवड़ा २ सेर; अर्क गुलाब २ सेर, केशर असली २ तोले; मूँगाभस्म १ तोला; अम्बर ३ माशे और कस्तूरी ३ माशे लेवे।

प्रथम उक्त काष्ठौषधियों का चूर्ण कर ले और मुनका आदि मृदु द्रव्यों को वैसे ही ३२ सेर जल में उबाल देकर; उसमें काष्ठोषधियों के चूर्ण को मिला; पात्र का मुख बन्द कर लीद में एक सप्ताह दबाकर रक्खे। फिर निकाल और छानकर; उसमें उक्त अर्क केवड़ा और अर्क गुलाब और मूँगाभस्म मिला दे तथा केसर; अम्बर और कस्तूरी की पोटली बना अन्दर डालकर; वारुणीयंत्र द्वारा इसका आसवार्क खींचकर; बोतलों में भरकर रख ले।

मात्रा—यथोचित रोग-बलानुसार।

गुण—बहुरूप यक्ष्मा, अग्निमांद्य, अरुचि; श्वास को नष्ट करता है। अत्यन्त कामोत्तेजक; वीर्यवर्धक; रसायन; पौष्टिक; बलीपलितनाशक और उत्साहवर्धक है।

---

२१२ चम्पकासव—(स्वकृत)—प्रतिश्याय नाशक ।

विधि—चम्पा के फूल छाया में सुखाये हुये २॥ सेर लेकर;

Digitization by American Academy of Indic Studies AAIS(USA)

१३ सेर जल में क्वाथ पकावे। ७ सेर क्वाथ शेष रहने पर; छानकर शुद्ध चिकने घड़े में भरे। ठंडा होजाने पर उसमें शहद ४ सेर, धाय के फूल २० तोला; अतीस, काकड़ासिंगी और पीपल प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले मिला अच्छी तरह सन्धान कर १५ या २० दिन सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से २॥ तोले तक।

गुण—जुखाम; सर्दी; कोष्ठबद्धता नाशक है। दस्त साफ़ लाता है; और क्षुधावर्धक है।

---

२१३ चविकासव *—गुल्मादि नाशक।

विधि—चव्य २॥ सेर; चित्रकमूल १। सेर; कालाजीरा; पोहकरमूल, वच; हाऊबेर; कचूर; पटलकी जड़; हरड़; बहेड़ा;

---

* चविकायास्तुलार्द्धन्तु तदर्धं चित्रकस्य च। वाप्पिका पुष्करं मूलं षड्ग्रन्था हपुषा शठी ॥ पटोलमूल त्रिफला यवानीकुटजत्वचः। विशाला धान्यकं रास्ना दन्ती दशपलोन्मिता ॥ कृमिघ्नमुस्तमंजिष्ठा देवदारु कटु-त्रिकम्। भागान्यंचपलानेतानष्टद्रोणेऽम्भसः पचेत् ॥ द्रोणशेषे रसे पूते देयं गुडशतत्रयम्। धातक्या विंशतिपलं चातुर्जातं पलाष्टकम् ॥ लवङ्ग-व्योष कङ्कोलं पलिकानि प्रकल्पयेत्। निदध्यान्मासमेकं तु घृतभाण्डे सुसंस्कृते ॥ चतुष्पलां पिबेन्मात्रां प्रातः पीतं नियच्छाति। सर्वगुल्म विकारांश्च प्रमेहांश्चैव विंशतिम् ॥ प्रतिश्यायं क्षयं कासमष्ठीलां वात-शोणितम्। उदराण्यन्त्रवृद्धिं च चविकाख्यो महासवः ॥

—गदनिग्रह।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

आमला, अजवायन, कुड़ेकी छाल, इन्द्रायन, धनिया, रास्ना, और दन्तीमूल प्रत्येक आध २ सेर, तथा वायविडंग, नागरमोथा, मजीठ, देवदारु, सोंठ, मिरच और पीपल प्रत्येक २०-२० तोले, लेकर कूटकर, २ मन २४ सेर जल में पकावे। १३ सेर जल शेष रहने पर, छानकर, घृत से चिकने किये हुये स्वच्छ मिट्टी के पात्र में भर कर, उसमें गुड़ १५ सेर, धायके फूल १ सेर, तेजपात, इलायची, दारचीनी और नागकेशर प्रत्येक ८-८ तोले तथा, लौंग, सोंठ, मिरच, पीपल और कंकोल प्रत्येक ४-४ तोले चूर्ण कर मिला देवे। पात्र के मुख को अच्छी तरह कपड़ मिट्टी से बन्द करके, धान्य राशि में या किसी उष्ण स्थान में सुरक्षित रक्खे। एक मास बाद निकाल कर, छान लेवे।

मात्रा—१ तोला से २॥ तोले तक।

गुण—समस्त प्रकार के गुल्म २० प्रकार के प्रमेह, कुकास, क्षय, खाँसी, अष्ठीला, वातरक्त, उदरविकार तथा अंत्रवृद्धि नाशक है। यह कामला, रक्तविकार, आध्मान (अफारा) अण्डवृद्धि और अग्निमांद्य को भी नष्ट करता है।

---

२१४ चित्तचन्दिरासव *—कास, श्वास नाशक।

---

* मुस्ता मरिच चव्याग्नि निशाकृष्णा विडङ्गकम्। आम्रलोशीर शैलेय पूगलोध्रं द्विपत्रकम्॥ कट्वी श्रीखण्डतगर मांसी दारु सितासमम्। गुन्दर्णा नागपुष्पाणि त्रिपिचूनि पृथक् पृथक् ॥ प्रस्थार्धं धातकी पुष्पं द्राक्षा प्रस्थैस्त्रिभिर्मिता । पुराणः पंचदशभिः प्रस्थैः संकलितो गुडः॥ भाण्डे षड्विंशति प्रस्थ शम्बरे घृतचिक्कणे । क्षिप्त्वा सर्वं पिधायाथ

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)